आर.एन.आई. नं. 3653/57

डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

नमस्कार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष : 63 मूल्य 10 रु. अंक : 6

15 जून, 2006 ज्येष्ठ, 2063

अनगिनत व्हरायटीज्,
शुद्धता और
वाजिब हिसाब का
सुनहरा संगम

त्यौहार, शुभ प्रसंग
के आनंद को
द्विगुणीत करनेवाले
मंगल आभूषण

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

३५ वर्षोंसे तत्पर
एवं विनम्र सेवा
ग्राहकों की जिज्ञासा को
पूरा समाधान

ॲन्टीक, ऑक्साइड
जी बी, कास्टींग, कुंदन
पोलकी इ. गहनों के
अनेकों प्रकार

कॅरेटोमीटर की उपलब्धता

जलगावमें विशेष निवास व्यवस्था

औरंगाबाद :
आकाशवाणी चौक,
जालना रोड,
☎ ०२४०-३०९७९७९

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

सोना • चांदी • हिरा • मोती

जलगांव :
नयनतारा,
सुभाष चौक
☎ ०२५७-२२२५९०३

जिनवाणी

हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 **संरक्षक**

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं. 2636763

卐 **संस्थापक**

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

प्रेमचन्द जैन, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182–183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.),
फोन नं. 0141–2575997, फैक्स–0141–2570753

卐 **सम्पादक**

डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
3 K 24–25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005, फोन नं. 0291–2730081

卐 **सह-सम्पादक**

नौरतन मेहता, जोधपुर

卐 **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. RJ/JPC/M-018/2006-08

卐 **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता-रू.11000/– संरक्षक सदस्यता-रू.5000/–
वार्षिक सदस्यता- रू. 50/– त्रिवर्षीय सदस्यता- रू.120/–
आजीवन सदस्यता देश में - रू. 500/–
विदेश में- 100$ (डॉलर)
इस अंक का मूल्य रू. 10/–

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

तवोवहाणमादाय,
पडिमं पडिवज्जओ।
एवं पि विहरओ मे,
छउमं न नियट्टई।।

- उत्तराध्ययन सूत्र २.४३

तप-उपधान ग्रहण करके,
प्रतिमा का पालन करता हूँ।
इस चर्या से विहरण करके भी,
न छद्म दूर कर पाता हूँ।।४३।।

जून २००६
वीर निर्वाण संवत् २५३२
ज्येष्ठ २०६३

वर्ष ६३ **अंक ०६**

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन: 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	७
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	९
प्रवचन-	खणं जाणाहि पंडिए	-उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा.	१०
	साध्य की प्राप्ति में साधन धर्म की गरिमा	-मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.	१७
जैन शोध दिशा-	२१वीं सदी में जैन शोध संस्थान एवं उनसे उभरती अपेक्षाएँ	-डॉ. जीवराज जैन	२५
शोधालेख-	वर्ण व्यवस्था - हिन्दू धर्म तथा जैन धर्म में	-डॉ. दीपंजय श्रीवास्तव	४१
अध्यात्म-चिन्तन-	सर्वांगीण विकास का साधन : सामायिक व्रत (६)	-श्री प्रेमचन्द कोठारी	४७
धारावाहिक-	जम्बूकुमार (२९)	-जैन दिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.	५५
तत्त्वज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (३१)	- श्री धर्मचन्द जैन	५२
	दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म (९)	- संकलित	५९
नारी-स्तम्भ-	सम्यक् तप	- न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा	३३
युवा-स्तम्भ-	आत्महत्या से जीवन की ओर	-डॉ. श्वेता कोटड़िया	६१
बाल-स्तम्भ-	कुरुदत्त मुनि का देहोत्सर्ग	-डॉ. राजेन्द्र मुनि	६२
प्रेरक प्रसंग-	मूढ़ता से दुर्गति	-आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी म.सा.	५१
विचार-	जैन धर्म : वैज्ञानिक धर्म	- डॉ. मनमोहनसिंह	१६
	ऊर्जा का अपव्यय रोकें	-श्री अभयकुमार जैन	५४
	टी.वी. और कम्प्यूटर की लत घातक	-संकलित	५८
कविता/गीत-	जैनी कहाते हैं	- डॉ. सुषमा सिंघवी	२४
	प्रार्थना	- श्री मोहन कोठारी 'विनर'	४६
	अहिंसा	- श्री श्रीकांत जैन	७१
सम्पादकीय -	डॉ. धर्मचन्द जैन		३
युवक परिषद्-	आओ स्वाध्याय करें त्रैमासिक प्रतियोगिता (१०) का परिणाम		६७
स्वाध्यायी परिचय-	डॉ. पदमचन्द मुणोत-जयपुर	-श्रीमती मोहनकौर जैन	६९
नूतन साहित्य-	डॉ. धर्मचन्द जैन		७२
समाचार-विविधा-	समाचार-संकलन		७३
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		९९

स्वर्ग-नरक

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

स्वर्ग एवं नरक का वर्णन जैन, बौद्ध एवं हिन्दू धर्मग्रन्थों में सहज उपलब्ध है। ईसाई धर्म में इन्हें हैवन (**Heaven**) और हेल (**Hell**) शब्दों से तथा मुस्लिम धर्म में जन्नत और जहन्नुम शब्दों से वर्णित किया गया है। कहा जाता है कि घोर पाप करने वाले को नरक तथा बृहद् स्तर पर पुण्य अर्जित करने वाले को स्वर्ग की प्राप्ति होती है। मीमांसादर्शन में तो स्वर्ग की प्राप्ति के लिये अग्निष्टोम यज्ञ करने की प्रेरणा की गई है।

जैनधर्म में नरक के सात प्रकार हैं- घम्मा, वंसा, सीला, अंजणा, रिट्ठा, मघा और माघवई। इन्हें अन्य नामों से भी कहा गया है- रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमप्रभा, तमतमप्रभा। लोक का लगभग आधा भाग तो नरक में ही रुका है। नरक में घोर कष्ट है। वहाँ की आयुष्य न्यूनतम १० हजार वर्ष है तथा अधिकतम ३३ सागरोपम है। वहाँ पर तीन प्रकार की वेदनाएँ हैं- १. परमाधामी देवों द्वारा दी जाने वाली वेदनाएँ २. क्षेत्रकृत वेदनाएँ ३. नारकी जीवों द्वारा परस्पर दी जाने वाली वेदनाएँ।

स्वर्ग अर्थात् देवलोक भी अत्यन्त विस्तृत है। १४ राजु लोक में से आधा भाग तो देवलोक से घिरा हुआ है। देव भी मुख्य रूप से चार प्रकार के हैं- भवनपति, वाणव्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक। भवनपति देवों का निवास अधोलोक में है। ये नारकी जीवों को यन्त्रणाएँ देते हैं। वाणव्यन्तर देव तिर्यक्लोक में जहाँ मनुष्य एवं तिर्यंच हैं वहाँ भ्रमण करते हैं। ज्योतिषी देव पाँच प्रकार के हैं- ग्रह, नक्षत्र, तारा, चन्द्र और सूर्य। वैमानिक देव के १२ देवलोक हैं, फिर नौ लोकांतिक, नवग्रैवेयक एवं पाँच अनुत्तर विमान हैं। देवों के साथ देवियों एवं देवेन्द्रों का भी वर्णन जैन साहित्य में विस्तृत रूप से प्राप्त होता है।

बौद्ध साहित्य में भी स्वर्ग-नरक का वर्णन है। हिन्दू पुराणों में भी यह वर्णन कुछ भिन्न प्रकार से प्राप्त होता है।

स्वर्ग एवं नरक को हम चर्मचक्षुओं से नहीं देख सकते। यदि कोई विमान भी लेकर जाए तो देवों को पहचानना कठिन है, क्योंकि वे वैक्रिय शरीरधारी हैं। वे अपना रूप एवं आकार भी बदल सकते हैं। नारकी जीव अधोलोक में हैं, वहाँ हमारा जाना

नहीं होता है। यदि चले भी जाएँ तो वे भी वैक्रियशरीरधारी हैं। वैक्रियशरीर में हाड़-माँस-रक्त आदि नहीं होते, आकार भी स्थिर नहीं होता। कभी बड़ा कभी छोटा रूप बनाया जा सकता है।

प्रश्न यह है कि आज की शिक्षित एवं वैज्ञानिक पीढ़ी को यह कैसे विश्वास दिलाया जाए कि स्वर्ग एवं नरक हैं तथा इनमें रहने वाले देव, देवी एवं नारक जीव भी होते हैं। यह वस्तुतः कठिन कार्य है, देवों एवं नारकों को चक्षुगोचर कराना दुष्कर है, अतः श्रद्धा ही एकमात्र कारण है जिसके आधार पर हम स्वर्ग एवं नरक को स्वीकार कर सकते हैं। आगमों में प्राप्त विवेचन ही स्वर्ग-नरक की सिद्धि में निमित्त बनता है।

स्वर्ग एवं नरक को सिद्ध करने में दूसरा आधार है- कर्म सिद्धान्त। कर्म सिद्धान्त का यह नियम है कि जो जैसा शुभाशुभ कर्म करता है उसको तदनुरूप फल की प्राप्ति होती है। कर्मसिद्धान्त में चार गतियाँ एवं चार आयुष्य मान्य हैं- १. नरक २. तिर्यंच ३. मनुष्य और ४. देव। यथायोग्य गति नामकर्म एवं आयुष्य नामकर्म का बंधन होने पर नरकादि की प्राप्ति होती है। गतिनामकर्म तो जीवन में अनेक बार बंधता रहता है, किन्तु आयु नामकर्म का बंधन एक बार होता है, जिसे तदनुरूप नरकादि आयु को प्राप्त करके ही भोगा जा सकता है। इस प्रकार कर्म-सिद्धान्त से पुनर्जन्म की भी पुष्टि होती है तथा नरक एवं स्वर्ग (देवलोक) की भी।

जैन कर्म-सिद्धान्त तो इतना व्यापक एवं सुव्यवस्थित है कि इसमें यह भी चिन्तन किया गया है कि कौनसा जीव नरक में जा सकता है तथा कौनसा स्वर्ग में। जैन कर्म-सिद्धान्त के अनुसार नरक से कोई भी नारकी मरण को प्राप्त कर स्वर्ग का देव नहीं बनता तथा इसी प्रकार स्वर्ग का देव मृत्यु (च्यवन) को प्राप्त होकर नरक में नहीं जाता। किस नारकी जीव के कितनी लेश्या हो सकती है तथा किस देव के कितनी; इसका भी जैन कर्म-सिद्धान्त में स्पष्ट विधान है। विभिन्न द्वारों के माध्यम से नरकादि का विशद निरूपण हुआ है। यह भी प्रतिपादन है कि स्वर्ग का कौनसा देव सम्यक्त्वी हो सकता है तथा नरक का कौनसा नारकी? इस प्रकार विविध सूचनाओं से स्वर्ग एवं नरक की सिद्धि होती है।

वैज्ञानिकों के लिए यह अभी अन्वेषण का विषय है। बुद्धिवादियों को भी इस पर विश्वास कराना सरल नहीं है। किन्तु **राजप्रश्नीय सूत्र** में राजा प्रदेशी की शंकाओं का समाधान करते हुए केशीकुमार श्रमण ने जीव के पुनर्जन्म के साथ स्वर्ग एवं नरक की भी सिद्धि की है। वहाँ यह भी बताया गया है कि स्वर्ग के देव हमें आकर इसलिए नहीं समझाते, क्योंकि दिव्य कामभोगों के कारण मानवीय भोग उन्हें आकर्षित नहीं

कर पाते। वे उन भोगों में ही तल्लीन हो जाते हैं। वे यदि मनुष्यलोक में आने की सोचते भी हैं तो आने की फुर्सत नहीं होती तथा तब तक अल्पायुष्य वाला मनुष्य कालधर्म को प्राप्त हो जाता है। एक कारण यह भी है कि मनुष्यलोक उन्हें दुर्गन्धमय प्रतीत होता है। अब प्रश्न होता है कि नरक के नारकी मनुष्यलोक में हमें वहाँ के दुःखों से अवगत कराने क्यों नहीं आते हैं? इसका उत्तर भी राजप्रश्नीय सूत्र में दिया गया है कि नारकी जीव तो तीव्र वेदना से दुःखी होने के कारण शीघ्र ही मनुष्यलोक में आना चाहते हैं, किन्तु असातावेदनीय कर्म के क्षय नहीं होने, अननुभूत एवं अनिर्जीर्ण होने से वे वहाँ से आने में समर्थ नहीं हैं।

विशेषावश्यक भाष्य के गणधरवाद में सातवें गणधर मौर्यपुत्र जी के देवविषयक संदेह का तथा आठवें गणधर अकम्पितजी के नारक विषयक संदेह का तीर्थंकर महावीर द्वारा निराकरण करते हुए देव एवं नारक की सिद्धि की गई है।

वेदों में पृथ्वी, अप्, वायु, अग्नि, सूर्य, उषस्, पर्जन्य, इन्द्र आदि को देवता के रूप में वर्णित किया गया है। वहाँ मंत्र का विवेच्य विषय 'देवता' कहा गया है। सभी प्राकृतिक तत्त्वों को वहाँ देवता के रूप में निरूपित किया गया है।

स्वर्ग-नरक का विवेचन मनुष्य के नैतिक बल एवं सदाचरण को पुष्ट करने के साथ धर्म में आस्था उत्पन्न करता है। यह मनुष्य के व्यवहार को नियन्त्रित करने के साथ उसकी सोच को भी बदलता है। स्वर्ग एवं नरक की प्राप्ति हमारे वर्तमान जीवन के शुभाशुभ विचारों एवं सद्-असद् व्यवहार पर निर्भर करती है। घोर आरम्भ (हिंसा) एवं परिग्रह को नरकायु का कारण बताया गया है तथा सराग संयम, संयमासंयम, अकामनिर्जरा और बालतप को देवगति (स्वर्ग) का कारण मान्य किया गया है। जीवन का दो तिहाई भाग कैसा व्यतीत हुआ है, उसके अनुसार नये आयुष्य कर्म का बंध हो जाता है। इसलिए व्यक्ति को सदा अशुभ से शुभ की ओर ही गमन करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

विवेकीजनों को तो धर्म एवं सदाचरण की महत्ता इस जीवन के आधार पर भी समझ में आती है, किन्तु स्थूलमति के लोगों को नरक के दुःखों का वर्णन करके ही पापाचरण से विरत किया जा सकता है। किन्तु कुछ लोग स्वर्ग के सुखों की प्राप्ति के प्रलोभन से धर्माचरण करते हैं, उसे आध्यात्मिक दृष्टि से उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। आध्यात्मिक दृष्टि से तो व्यक्ति के मन में स्वर्ग के सुखों के प्रति कोई आकर्षण नहीं होना चाहिए। तात्त्विक एवं आध्यात्मिक दृष्टि से तो जन्म-मरण के चक्र से छुटकारा या कहें कि दुःखों से आत्यन्तिक मुक्ति ही अभीष्ट होनी चाहिए। स्वर्ग के

खणं पि मे महाराय! पासाओ मे न फिट्टई।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, बीसवाँ अध्ययन, गाथा १७ से ३०

एकचित्त हो सुनो भूप, तज कर मन से वैभव का मद।
जैसे अनाथ जग होता है, कैसे मैं बोल गया वह पद।।
प्राचीन नगर को शर्माती, कौशाम्बी नामा है नगरी।
रहते थे वहाँ पिता मेरे, जिनकी सम्पद् थी भरी पूरी।।
यौवन में ही मम नेत्रों में, हो गई वेदना अतुल यहाँ।
हुआ दाह प्रत्येक अंग में, विपुल व्यथित है, जहाँ-तहाँ।।
जैसे कोई कुपित शत्रु, अति तीक्ष्ण शस्त्र तन-छिद्रों में।
दे कर पीड़ा उत्पन्न करे, वैसी पीड़ा मम नेत्रों में।।
मेरे कटि मस्तक और हृदय, व्यथित वेदना से होते उस क्षण।
वज्रपात के तुल्य व्यथा वह, मालूम पड़ती थी अति-दारुण।।
विद्या मंत्र चिकित्सा के, आचार्य पास मेरे आए।
थे अद्वितीय वे शास्त्रकुशल और मंत्र-मूल में यश पाए।।
वे करें चिकित्सा चतुष्पाद, जिससे न स्वास्थ्य में हो देरी।
पर, दुखमुक्त कर सके नहीं, बस यही अनाथता थी मेरी।।
मेरे हित बहुमूल्य वस्तुएँ देने में तात न की देरी।
पर, दुःखमुक्त वे कर न सके, बस यही अनाथता थी मेरी।।
दुःख-आर्त्त थी पुत्र-शोक से, महाराज! सगी माता मेरी।
पर दुःखमुक्त वह कर न सकी, बस यह अनाथता थी मेरी।।
छोटे-बड़े सगे भाई, कर नहीं सके रक्षा मेरी।
वे मिटा नहीं पाए दुःख मेरा बस, यही अनाथता थी मेरी।।
छोटी-बड़ी सगी बहनें, कुछ कर न सकी रक्षा मेरी।
वे हटा न पाई दुःख मेरा बस, यही अनाथता थी मेरी।।
महाराज! मुझ पर अनुरक्ता, प्रिय पतिव्रता पत्नी मेरी।
निज अश्रुपूर्ण नयनों से सिंचित करती रहती छाती मेरी।।
अशन-पान या स्नान गंध, और माल्य विलेपन आदि सभी।
मेरे जाने या अनजाने ना, किया उपयोग था उसने कभी।।
हे महाराज! उस बाला ने, मेरे से की न क्षणिक दूरी।
तब भी व्यथा मिटा सकी नहीं, बस यही अनाथता थी मेरी।।

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- भौतिक ज्ञान की प्रगति के प्रतीक बमों और राकेटों के चमत्कार को देखकर दुनिया स्तब्ध हो जाती है, परन्तु मन में अगर आत्मबल पैदा हो जाय तो वह इससे भी बड़ा चमत्कार दिखा सकता है।
- आत्मा के समस्त गुण आत्मा में उसी प्रकार एकाकार हैं, जिस प्रकार मिश्री की मधुरता, शुक्लता, कठोरता आदि गुण उसमें एकरूप हैं। कितना ही शक्तिशाली यंत्र क्यों न हो, वह मिश्री की मधुरता, शुक्लता आदि का पृथक्करण नहीं कर सकता। इसी प्रकार आत्मा के गुण आत्मा से भिन्न नहीं हो सकते।
- पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण और दूसरे सदस्यों के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।
- दया देवी की एक बड़ी विशेषता है। वह ज्ञान सिंह पर आसीन है और तप का त्रिशूल ग्रहण किये हुए है, फिर भी उसके मस्तक पर विनय का मुकुट सुशोभित रहता है।
- मनुष्य कुछ परिमित प्राणधारियों को ही शरण दे सकता है। मगर अहिंसा भगवती की शीतल छाया तो सभी को प्राप्त होती है। राजा को, रंक को, कीट-पतंग को, मनुष्य को, देव को, इन्द्र को और महेन्द्र को, सभी के लिए वह शरणदायिनी है।
- साधक जब तक इन्द्रियों को वशीभूत नहीं कर लेता, तब तक उसका हृदय शांत नहीं हो सकता। इन्द्रियों की चंचलता मानसिक शान्ति में अन्तराय रूप है। अतएव चित्त की शांति एवं स्वच्छता के लिए जितेन्द्रियता अनिवार्य रूप से अपेक्षित है।
- सच्चा साधक संकट के समय भी घबराता नहीं है, पथविचलित नहीं होता है। हर समय उसका विवेक जागृत रहता है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

सुख भी वैषयिक सुख हैं, अतः उनके प्रति आकर्षित होकर धर्म का आचरण विज्ञजनों के लिए समीचीन नहीं कहा जा सकता। हाँ, जब एक-दो भव करके मोक्ष-प्राप्ति होने वाली हो और जीव को अपने आयुष्य के बंधन के अनुसार स्वर्ग में देव बनना पड़े तो वह अलग बात है।

जो लोग स्वर्ग एवं नरक में आस्था नहीं रखते, उनके लिए ज्ञानीजन इस मनुष्य जीवन के सुखद एवं दुःखद प्रसंगों से स्वर्ग-नरक का चित्रण करते हैं। वे कहते हैं- इस जीवन में ही स्वर्ग एवं नरक का अनुभव किया जा सकता है। इस जीवन में भी कई मनुष्य आंशिक रूप से नारकीय यातनाओं का अनुभव करते हैं तथा कुछ मनुष्य अपने सद्चिन्तन, सदाचरण एवं वैभव के कारण इस जीवन में ही स्वर्ग-सदृश सुख की अनुभूति करते हैं। जो मानव तीव्र आसक्ति एवं अविद्या के कारण प्रतिदिन कलह करते हैं, दूसरों का बुरा सोचते हैं, सांसारिक वासनाओं एवं बहु आरंभ एवं परिग्रह के दलदल में फँसे हुए हैं, वे न चाहते हुए भी इस जीवन में दुःखों को भोगते हैं, यह नरक का यत्किञ्चित् अनुभव है। दूसरी ओर जो मनुष्य स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों का भी भला सोचते हैं, दूसरों को भी आत्मवत् समझते हैं, उनको पीड़ा न हो, इसका ध्यान रखते हैं, आरम्भ एवं परिग्रह में नहीं फँसते हैं, सदैव प्रसन्नता से पूरित रहते हैं, वे इस जीवन में भी स्वर्ग-सदृश अथवा उससे भी बेहतर सुख का अनुभव करते हैं।

स्वर्ग एवं नरक हैं यह आस्था का विषय है। जो इसे स्वीकार करता है उसके आचरण में सुधार अवश्य संभावित है- यह इस आस्था का सकारात्मक पहलू है। यह सुधार यद्यपि नरक के भय एवं स्वर्ग के प्रलोभन से जुड़ा हुआ है, तथापि साधारणतः भय एवं प्रलोभन मनुष्य के व्यवहार के नियामक होते हैं। इसलिए जनसाधारण के व्यवहार को नियन्त्रित करने में नरक का भय एवं स्वर्ग का प्रलोभन अवश्य ही सहायक होता है। आस्थावादी तो भय एवं प्रलोभन से भी पटरी पर आ जाता है, किन्तु जो स्वर्ग एवं नरक को नहीं मानते, स्वयं के विवेक से भी व्यवहार को नियन्त्रित नहीं करते, उन उच्छृंखलतावादियों का क्या होगा? उनका व्यवहार अपराध से ओतप्रोत होने लगता है, वे स्वार्थपूर्ति एवं वैषयिक लिप्सा के कारण दूसरों को कोई महत्त्व नहीं देते और अपराध पर उतर आते हैं। ऐसे अपराधी न्याय-व्यवस्था के दण्ड से भी नहीं डरते तथा समाज में भय एवं आतंक को जन्म देकर समाज-कटंक का रूप ग्रहण कर लेते हैं। उनको दिशा देने वाला कौन है, संतों की प्रेममयी वाणी ही उनको दिशा दे सकती है कि अपराध का अन्त दुःखों में ही होता है। वे जरूर उसके फल में नरक या नीच गति की वेदना पायेंगे। इसलिए नरक-स्वर्ग में आस्था रखकर अपने को नियन्त्रित कर लेने में ही अपना हित है।

आगम-वाणी

अनाथता का आशय

सुणेह मे महाराय! अव्वक्खित्तेण चेयसा।
जहा अणाहो भवई, जहा मे यं पवत्तियं।।

कोसंबी नाम नयरी, पुराण-पुर-भेयणी।
तत्थ आसी पिया मज्झ, पभूय-धण-संचओ।।

पढमे वए महाराय! अउला मे अच्छिवेयणा।
अहोत्था विउलो दाहो, सव्वंगेसु य, पत्थिवा।।

सत्थं जहा परम-तिक्खं, सरीर-विवरंतरे।
अवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छि-वेयणा।।

तियं मे अंतरिच्छं च, उत्तमंगं च पीडई।
इंदासणि-समा घोरा वेयणा परम-दारुणा।।

उवट्ठिया मे आयरिया, विज्जामंत-तिगिच्छगा।
अबीया सत्थकुसला, मंत-मूल-विसारया।।

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।

पिया मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।

माया य मे महाराय!, पुत्त-सोग-दुहट्ठिया।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।

भायरो मे महाराय! पुत्त-सोग-दुहट्ठिया।
न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया।।

भइणीओ मे महाराय! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।

भइणीओ मे महाराय! सगा जेट्ठ-कणिट्ठगा।
न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्झ अणाहया।।

भारिया मे महाराय! अणुरत्ता अणुव्वया।
अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचई।।

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंध-मल्ल-विलेवणं।
मए णायमणायं वा, सा बाला नेव भुंजई।।

प्रवचन

खणं जाणाहि पंडिए

उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

जीवन का हर क्षण मूल्यवान है। समय कब बीत जाता है, हमें ज्ञात ही नहीं होता। समय के महत्त्व को जानकर वीतरागवाणी को जीवन में स्थान देने की आवश्यकता है। चातुर्मास होते हैं, किन्तु उनका लाभ तभी होता है जब समय का सदुपयोग आत्म-समाधि के लिए हो। उपाध्यायप्रवर का इन भावों से युक्त यह ७ नवम्बर २००३ का प्रवचन घोड़ों का चौक, जोधपुर में जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतन जी मेहता ने लिपिबद्ध किया है। *-सम्पादक*

कालचक्र तेजी से चल रहा है। यह अनन्तकाल से चल रहा है। अनन्त कालचक्र हो गये। अनन्त अवसर्पिणी-उत्सर्पिणियाँ हो गईं। काल तेजी से चल रहा है। चातुर्मास काल के चार माह देखते-देखते तेजी से निकल गये। एक दिन था जब आप इन्तजार कर रहे थे चातुर्मास के लिए संत पधारेंगे, प्रवेश कराने की सबकी उत्कण्ठा थी। सबके मन में उत्साह था, उमंग थी। आप लोगों ने उत्साह के साथ चातुर्मास कराया और देखते-ही-देखते चातुर्मास का काल प्रस्थान का समय लेकर उपस्थित हो गया।

काल तेजी से चल रहा है, परन्तु जो साधना करने वाले व्यक्ति होते हैं वे काल का सदुपयोग कर लेते हैं। समय के सदुपयोग को लेकर ज्ञानियों ने कह दिया- खणं जाणाहि पंडिए। हे पण्डित 'क्षण को जानो' यानी जो क्षण या काल को जानता है वह पंडित होता है। अवसर को जानने वाले, अवसर का सदुपयोग करने वाले को शास्त्रकारों ने पण्डित कहा है। आप लोगों ने भी समय का काफी सदुपयोग किया, बराबर प्रवचन सुनते रहे और समय-समय पर धर्म-साधना भी करते रहे। आपने चातुर्मास को ऐतिहासिक रूप से दिपाने का प्रयास किया तो हम संतों ने भी बराबर प्रयास किया। तपस्या के साथ व्याख्यान वाणी सुनकर संवर-दया-पौषध किए, कई मासखमण तप की तपस्याएँ हुईं। व्रत-प्रत्याख्यान में भी अनेक भाई-बहिनों ने भावनापूर्वक नियम अंगीकार किये। कई बारह व्रती बने, कइयों ने आजीवन शीलव्रत के खन्द किए। लगभग २० की संख्या ब्रह्मचर्य

व्रत वालों की हो गई। व्याख्यान में भी दो श्रावकों ने शीलव्रत का प्रत्याख्यान किया, कुल २२ प्रत्याख्यान हो गये हैं।

समय किसी का इंतजार नहीं करता। जो भी समय का सदुपयोग करता है वह समय को सार्थक कर लेता है और जो समय का सदुपयोग नहीं करता उसका भी समय जाता ही है। समय तो दोनों का जा रहा है। समय किसी का इन्तजार नहीं करता। समय तो बहती हुई सरिता है। जो व्यक्ति इस सरिता के जल को पी लेता है, वह अपनी प्यास बुझाता है। इसी प्रकार जिनवाणी की सरिता है। जैसे जल का पान करने वाला अपने शारीरिक ताप को मिटाता है उसी प्रकार यह वीतराग वाणी कषाय के ताप को शान्त करने वाली है।

यह जीव अनादिकाल से क्रोध-मान-माया-लोभ में रचा-पचा है, समय-समय पर जिनवाणी श्रवण करके इस ताप को मिटाने का अवसर प्राप्त होता है। जन्म-जरा-मरण को भी तापत्रय कहा गया है। जिनवाणी श्रवण करके इस त्रिताप को भी समाप्त किया जा सकता है।

आधि-व्याधि-उपाधि ये तीन ताप भी संसार में भटकाने वाले हैं, रुलाने वाले हैं। जब तक इस ताप के कारण को दूर नहीं किया जाय, आत्मिक शांति और समाधि प्राप्त नहीं होती। कहा भी है- आधि, व्याधि, उपाधि मिटे तो समाधि मिले। आधि-व्याधि-उपाधि कर्मजन्य विकारी अवस्था रही है। इसको मिटाने के लिए, कर्म को दूर करने के लिए यह जिनवाणी का जल उपयोगी है। कर्म-मल साफ हो जायेगा तो आत्मा को अपने-आप समाधि प्राप्त हो जाएगी। इन्द्रियों का वस्तु के साथ सन्निकट होना एकान्त समाधि का कारण नहीं बनता। कई बार राग के वश भी, कई बार द्वेष के कारण से भी इन्द्रियों के साथ में वस्तु की सन्निकटता हो जाती है। आपको लगता है समाधि प्राप्त हो रही है पर ज्ञानी कहते हैं मूर्च्छा करना, ममत्व रखना समाधि का कारण नहीं है। एक बिल्ली भी चूहे के बिल के पास बैठी है, ताक लगा रही है कब चूहा बाहर निकले और मैं हमला बोल दूँ। बिल्ली की भी एकाग्रता बन जाती है। बगुला एक टांग पर खड़ा होकर आँख मींचकर एकाग्रता के साथ ध्यान लगाता रहता है कि कब मछली आए और कब मैं गटक जाऊँ। यह आहार की संज्ञा के प्रति राग-भाव से एकाग्रता है। ज्ञानी कहते हैं यह समाधि का कारण नहीं।

द्वेष के वश शिकारी वृक्ष पर बन्दूक तानकर बैठता है। वह विचार

करता है कब कोई जानवर पानी पीने आए और मैं फायर करूँ। वह शिकारी भी एकाग्रता-एकलीनता के साथ बैठता है। एक सेना की टुकड़ी पहाड़ी के पीछे वार के इन्तजार में कि कब शत्रु सेना यहाँ से गुजरे और मैं वार करूँ। सेना भी एकाग्रता से बैठती है। ज्ञानियों ने उसे भी समाधि का कारण नहीं बताया।

कुछ लोग नशा करके अपने-आपको समाधि में लीन हो गये, ऐसा समझ लेते हैं। गांजा पीने वाले-भांग पीने वाले अपने-आपको समाधि में समझ लेते हैं। पुराने समय में भांग का चलन ज्यादा था, आज तो इस नशे में कमी आई है, लेकिन दूसरे नये नशों का प्रचलन बढ़ा है। कोई नशा करके समझता है कि मेरी आत्मा परमात्मा में एकाग्र हो गई, किन्तु ज्ञानियों की दृष्टि में वह भी समाधि नहीं है। मूर्च्छावश वह अपने आपमें जड़ता को समाधि समझता है, पर यह भी आत्मिक समाधि नहीं है।

समाधि में राग, द्वेष और मूर्च्छा ये तीनों समाप्त हो जाते हैं, तभी आत्म-समाधि प्राप्त होती है। आत्मा के अन्दर लीन हो जाना, आत्मा में रम जाना, तादात्म्य रूप हो जाना समाधि का कारण है। उस समाधि भाव के लिए वीतराग वाणी लगातार चार माह तक आपके बीच सुनाई गई। जिनवाणी सुनने के पीछे भावना यही रही कि यह हमारे लिए आत्म-समाधि का कारण बने। आपने चातुर्मास करवाया, हमने चातुर्मास किया। आपका-हमारा यही लक्ष्य है कि हम भी वीतरागता की ओर आगे बढ़ें। हम सम्पूर्ण कर्मों का क्षय करके शाश्वत सुख को पा सकें।

आपका भी यही लक्ष्य है, हमारा भी यही लक्ष्य है। उपासना, साधना, आराधना ही हमारा लक्ष्य है। हम सब इस लक्ष्य को लेकर चलने वाले हैं। ज्ञान करने वालों का भी यही लक्ष्य है तो चारित्र पालने वाले, तप करने वाले, ध्यान करने वाले, संयम-साधना वाले सबका लक्ष्य आगे बढ़ने के लिए प्रयत्नशील रहना है। अगर लक्ष्य की ओर ध्यान है तो समझना चाहिये साधना सही चल रही है। चलने वाला एक-न-एक दिन मंजिल प्राप्त करेगा ही। साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ने वाला संसार को पूरित करते हुए निकट भविष्य में मुक्ति का अधिकारी बन ही जाता है।

जिनवाणी सुनकर ही साधना का मार्ग समझ में आता है। जिनवाणी सुनने से साध्य की तरफ लक्ष्य बनता है। वह चाहे धीरे चले, चाहे तेजी से चले

लक्ष्य की तरफ कदम बढ़ रहे हैं तो वह इधर-उधर चलायमान होने के बजाय एक दिन साध्य को प्राप्त कर सकता है। संस्कृत के एक विद्वान ने कहा-

गच्छत्पिपीलिका याति, योजनानां सहस्रकम्।
अगच्छन् वैनतयोऽपि, पदमेकं न गच्छति॥

एक चींटी या कीड़ी धीरे-धीरे चलती है पर निरन्तर चलती हुई वह सैकड़ों योजन दूर पहुँच जाती है। तेजी से चलने वाला गरुड भी नहीं चलता तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ पाता। चलें जरूर चाहे कछुए की चाल चलें। आपने बचपन में पढ़ा होगा, खरगोश-कछुए की दौड़ का प्रसंग। खरगोश विचार करने लगा कि कछुआ तो धीरे-धीरे चलता है, मैं तो दो फलांग में पहुँच जाऊँगा इसलिए थोड़ा विश्राम कर लूँ। विश्राम की सोचकर खरगोश सो गया। उसे नींद आ गई। उधर कछुआ अपनी चाल से निरन्तर चलता रहा। खरगोश की नींद खुली तो वह देखता है कछुआ दिख नहीं रहा। वह भागता है। कछुआ धीरे-धीरे चलता हुआ निश्चित स्थान पर पहुँच गया। खरगोश ने देखा- वह तो पहुँच गया, खरगोश फलांगें मारता है, पर कछुए के बाद पहुँचता है।

आप भी कभी-कभी यह सोचते होंगे कि अभी क्या जल्दी है। अभी तो बहुत जीना है। बहुत समय पड़ा है, पर हमें यह पता नहीं कि काल कब आ जायेगा। धर्म-साधना में चलने वाला चाहे वह धीरे चल रहा है, निरन्तर चलता रहेगा तो मंजिल प्राप्त कर लेगा। इमली के पेड़ के नीचे बैठे संत ने एक देव से कहा- "तुम सीमन्धर स्वामी के पास जाओ तो मेरी आयु पूछ कर आना।" देव ने संत की आयु पूछी तो भगवान् ने कहा- इमली के पेड़ पर जितने पत्ते हैं उतने वर्ष आयु बाकी है। देव ने आकर यह बात कही तो संत ने प्रमोदभाव व्यक्त किया कि मैं इतने भव करके मुक्ति पा लूँगा। वह उसमें भी प्रसन्नता का अनुभव करता है। वह जानता है यह लम्बा संसार है, अनन्तकाल है। भूत भी अनन्त है, भविष्य भी अनन्त है। हाँ, वर्तमान एक समय का है। वर्तमान को सुधारने वाला भविष्य को सुन्दर बना लेता है, सुधार लेता है। भूत सपना है, भविष्य कल्पना है तो वर्तमान अपना है। आप वर्तमान को सुधार लीजिये भविष्य अपने-आप सुधर जायेगा। अभी वर्तमान को जानने की जरूरत है। वर्तमान एक समय का है- 'खणं जाणाहि पंडिए।' हे पण्डित क्षण को जानो।

समय तेजी से जा रहा है। जीवन और जन्म उसी का सार्थक है जिसने

समय का धर्म-साधना में सदुपयोग किया है। एक राजा के पास अभिषेक हस्ती रत्न था। जो हाथियों में श्रेष्ठ होता है उसे हस्तीरत्न कहा जाता है। राजा ने देख-रेख के लिए कई व्यक्ति नियुक्त कर रखे थे कि यह हाथी प्यासा न रहे, भूखा न रहे। उसके खाने-पीने-नहाने का बन्दोबस्त कर रखा था। हाथी वृद्ध होने लगा, पिछली अवस्था आने लगी, शरीर जर-जर होने लगा तो बन्दोबस्त करने वाले व्यक्तियों ने सार-संभाल में शिथिलता कर दी। एक दिन अकेला हाथी तालाब के किनारे गया। तालाब के किनारे पर दलदल था, वह उसमें फँस गया। हाथी बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। वह ज्यों-ज्यों कोशिश करने लगा त्यों-त्यों दलदल में धँसता चला गया। हाथी को दलदल में फँसा देख किसी व्यक्ति ने राजा से कहा- आपका हाथी कीचड़ में फँसा, कभी नीर को देखता है तो कभी तीर को देखता है, पर निकल नहीं पा रहा है।

राजा को वह हाथी बहुत प्रिय था। उस हाथी की बदौलत उसने पचासों संग्राम जीते। उसके दलदल में फँसने से राजा को चिन्ता हुई। राजा ने घोषणा करवाई कि जो भी हाथी को बाहर निकालेगा उसे मुँह माँगा इनाम दिया जायेगा। राजा की घोषणा सुनकर हर व्यक्ति उपाय करने लगा। लोग सांकलों से बाँधकर खींचने भी लगे, पर हाथी कई व्यक्तियों के प्रयास के बाद भी बाहर खींचा नहीं जा सका।

एक व्यक्ति के दिमाग में योजना आई। उसने जाकर राजा से कहा- मैं हाथी को बाहर निकाल सकता हूँ। राजा ने कहा- निकालो, मैंने तो घोषणा कर रखी है। वह बोला-राजन्! इसके लिए कुछ तैयारी करनी पड़ेगी तभी मेरी योजना कामयाब होगी। उसने सारी योजना बताई कि इसके लिए सेना तैयार करके युद्ध की भेरी बजानी पड़ेगी। राजा ने सेनापति को बुलाकर सेना सजाने, नगाड़े बजाने और युद्ध में जैसे सेना प्रस्थान करती है उस तरीके से सेना को तालाब के पास से ले जाने का आदेश दिया।

सेना के साथ राजा भी चला। तालाब के नजदीक से निकलने पर हाथी रणभेरी सुनकर जोश में आया। सोचा- मैं युद्ध में सदा आगे रहने वाला यहाँ दलदल में फँसा हुआ हूँ। महाराजा लड़ाई के मैदान में जा रहे हैं। रणभेरी सुनकर हाथी ने पूरी ताकत से जोर लगाया हाथी बाहर आ गया और सबसे आगे चलने लगा। राजा को कहीं लड़ाई लड़ने नहीं जाना था, पर वह हाथी दलदल से मुक्त

हो गया।

आगे चलने वालों का स्वाभिमान होता है। प्राचीन समय में चूड़ावत सरदार लड़ाई में आगे रहते थे। बाद में शक्तिसिंह की सन्तान शक्तावत समर्थ हो गई। चूड़ावत आगे रहें यह जरूरी नहीं। शक्तावत और चूड़ावत में होड़ हो गई। शक्तावत ने महाराजा से निवेदन किया कि इस बार हम आगे रहेंगे। महाराजा ने कहा- जो पहले किले में पहुँच जायेगा वही आगे रहेगा। चूड़ावत और शक्तावत दोनों दौड़े। शक्तावत ने चन्दन गोह को फेंका, रस्सा पकड़ कर किले पर चढ़ गया। उधर चूड़ावत सरदार दरवाजे की तरफ गया। हाथी से हूल करने को कहा। दरवाजे पर नुकीले कीले लगते थे ज्यों ही हाथी हूल करता कीलों की चुभन से हाथी पीछे हो जाता। समय जा रहा है, देखकर और शक्तावत किले पर चढ़ गया है, सोचकर कहा-मैं दरवाजे पर खड़ा हो जाता हूँ, मेरे सीने पर हाथी हूल करे। महावत ने हाथी को हूल करने का इशारा किया। हाथी ने हूल किया, दरवाजा चड़चड़ाहट करता खुल गया। वह मर गया, पर गन्तव्य स्थान नक्की कर गया। वहाँ सरदार पहुँचने लगे। उधर शक्तावत ने देखा- चूड़ावत सरदार गन्तव्य स्थान पहुँच रहे हैं, उसने अपना सिर काटकर फैंक दिया उसका सिर पहले पहुँचा, तब से शक्तावत आगे रहने लगे।

वह हाथी आगे-आगे चलने लगा। थोड़ा घूम फिर कर सेना लौट आई। यह स्वाभिमान की बात है। आपके सामने यहाँ चार माह से जिनवाणी की भेरी बज रही है। भेरी सुनकर भोग के दलदल में फँसे हुए क्या उसी में उतरते रहेंगे? आपका स्वाभिमान कब जगेगा? उस हाथी की आत्मा जग गई, वह बाहर निकल गया, आप भोगों के दलदल से कब बाहर निकलेंगे? संतों ने चातुर्मास किया, आप चातुर्मास की समाप्ति पर यह नहीं समझें कि धर्म की समाप्ति हो गई। संतों की अनुपस्थिति में भी धर्मध्यान करके पुरुषार्थ करते रहेंगे तो चातुर्मास कराना सार्थक हो सकेगा।

समय तेजी से निकल गया और निकलता जा रहा है। चातुर्मास समाप्ति पर है। उपनगरों की विनतियाँ चल रही हैं। समता भवन वाले विनति रख रहे हैं, सरदारपुरा वाले गणपतजी लोढ़ा को आगे रखते हुए अपनी विनति रख रहे हैं। महामंदिर, लक्ष्मीनगर, पावटा, हाउसिंग बोर्ड, देवनगर, प्रतापनगर सभी अपनी-अपनी विनतियाँ लेकर उपस्थित हो रहे हैं। कोई प्रवचन सभा में तो

कोई दोपहर में आकर के अपनी विनतियाँ कर रहे हैं। चातुर्मास के लिए आया था, उस समय समयाभाव के कारण किसी क्षेत्र को फरसना संभव नहीं हुआ। विनतियाँ रखने वाले बहुत हैं, सबको अवसर मिल जाय ऐसा तो होता नहीं। पहले पीछे तो रहता ही है। आप चाहते तो हैं कि महाराज यहाँ से विहार कर के हमारे यहाँ पधारें। किसकी विनति स्वीकार करना इस प्रश्न का समाधान भगवान ने पहले से फरमा दिया। जहाँ अधिक धर्मलाभ का कारण हो, त्याग-तप की प्रभावना हो संत उधर का विचार पहले करते हैं। संतों को धर्म-ध्यान चाहिये। संत कहीं पर जा सकते हैं, होनी चाहिये त्याग-प्रत्याख्यान की भावना। जहाँ भी धर्म-ध्यान, त्याग-तप के लाभ का कारण समझ में आयेगा, उधर पहले फरसने की भावना रहती है। आप सब समय का सदुपयोग करते हुए लाभ उठाने की कोशिश करें।

जैन धर्म : वैज्ञानिक धर्म

डॉ. मनमोहनसिंह, प्रधानमंत्री-भारत सरकार

जैन धर्म ने भारत को न केवल अंधविश्वास एवं रूढ़ियों से लड़ने में मदद की, बल्कि वैज्ञानिक सोच पनपने के लिए एक सही माहौल भी तैयार किया है। जैन धर्म ने सख्त सिद्धान्तों को अस्वीकार कर दिया तथा नई ताजगी एवं नए खुलेपन के साथ आध्यात्मिक मामलों में एक नया आयाम तैयार किया। जैनधर्म के तर्कपूर्ण सिद्धान्तों के आधार पर देश में वैज्ञानिक सोच का विकास हो सका। जैन विचारधारा ने भारत को रूढ़ियों तथा अंधविश्वासों से लड़ने की शक्ति दी। जैन विचारधारा से सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक समस्याओं से छुटकारा पाने में मदद मिली। जैन धर्म भारतीय बुद्धिजीविता का एक अभिन्न अंग है, जिसके जरिए भारत ने अतीत में भी काफी गौरव प्राप्त किया है। अहिंसा के प्रति इसके दृष्टिकोण में जीवन एवं प्रकृति के बीच तालमेल स्थापित करने वाली शैली विकसित की है। आज के भौतिकवादी युग में जैन धर्म की आध्यात्मिक धरोहर अधिक प्रासंगिक है। प्रकृति तथा जीवन में तारतम्य स्थापित करने के लिए यह आवश्यक है। आज के समय में जैन धर्म के गूढ़ तथ्यों को समझने की जरूरत है।

(२७ मई २००६ को दिल्ली के विज्ञान भवन में ब्रिटिश लाइब्रेरी, लन्दन और जैनोलॉजी इंस्टीट्यूट, लन्दन द्वारा तैयार जैन पाण्डुलिपि कैटलोग जारी करते समय दिए गए वक्तव्य के अंश) *-प्रस्तुति : डॉ. दिलीप धींग*

प्रवचन

साध्य की प्राप्ति में साधन-धर्म की गरिमा

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

धर्म दो प्रकार का होता है- साधन धर्म और साध्य धर्म। प्रसन्नचन्द्र राजर्षि और घेवरिया मुनि के उदाहरणों से मुनिश्री ने यह सिद्ध किया है कि सामायिक, संवर, पौषध आदि द्रव्य-साधना भी मोक्ष रूपी साध्य में भाव-साधना के समान सहायक होती है। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. द्वारा बालोतरा में आयोजित स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर में प्रदत्त प्रवचन का लेखन श्री त्रिलोक जैन ने किया।

भगवान् महावीर स्वामी का शासन जयवन्त है। इस जिनशासन में हमको भी धर्म की साधना का, जिनवाणी श्रवण करने का और सत्य के स्वरूप को समझने का अवसर प्राप्त हो रहा है। प्रभु का हमारे ऊपर अनन्त उपकार है कि उन्होंने सत्य के मर्म को समझाने में कोई कसर नहीं रखी। जिनका रोम-रोम करुणा से परिपूर्ण होता है, जिनका अन्तर दया से आप्लावित होता है, वे ही दूसरों का भला करते हुए उन्हें सत्य मार्ग से अवगत कराते हैं। आज जो वीतरागवाणी श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हो रहा है, यह सब प्रभु के 'मित्ती मे सव्वभूएसु' सूत्र की ही परिणति है।

बंधुओं! हम धर्म की जब चर्चा कर रहे हैं, धर्म के वातावरण में जब हम बैठे हुए हैं तो वह धर्म भी दो प्रकार का है- साधन धर्म और साध्य धर्म। साध्य धर्म तो वह है कि जिस मंजिल को पाने के पश्चात् कुछ शेष नहीं, राग-द्वेष का किञ्चित् लेश नहीं, विदेही आत्मा पर जहाँ भेष नहीं, अपूर्णता का तनिक रेश नहीं, जहाँ प्रतिपल आत्मस्मृति, कषायमुक्ति, जग विरक्ति और अनन्त शक्ति का स्वरूप रहता है।

दूसरा धर्म है-साधन धर्म। जिसके अभाव में हम साध्य को प्राप्त नहीं कर सकते। सांसारिक क्षेत्र में भी साधन का महत्त्व है। यथा-बहुत दक्ष, होशियार, अपने क्षेत्र का विशेषज्ञ और विदेश से अनुभव प्राप्त डॉक्टर भी बिना औजार के ऑपरेशन नहीं कर सकता। घड़ा बनाने में प्रवीण एक कुम्भकार भी बिना चाक-डण्डे के घड़े का निर्माण नहीं कर सकता। समाज की जागृति में निमित्त बनने वाला चिन्तनशील लेखक अपने विचारों की लिखित प्रस्तुति बिना कागज-कलम के नहीं दे सकता। कहने का आशय यह है कि किसी भी प्रकार के कार्य के सम्पादन में साधन की महती

भूमिका होती है। ठीक इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में हमारा जो साध्य है, जिसे हम प्रसन्नता कहें, अखण्ड आनन्द कहें, स्थायी समाधान कहें, इन सबकी प्राप्ति में साधन आवश्यक है और वह साधन है- सामायिक, पौषध, १२ व्रत, महाव्रत, ५ चारित्र आदि धर्म का आचरण।

कभी-कभी तत्त्व ज्ञान के अभाव में लोक तर्क देते हुए यह कहते हैं कि मन साफ होना चाहिए, भीतर में करुणा होनी चाहिए, कोई सामायिक करने से धर्म थोड़ी ना होता है। कोई पौषध और संवर क्रिया करना ही धर्म-साधना नहीं है, मन साफ होना चाहिए। करुणाभाव रखो, किसी का बुरा मत सोचो, बस हो गया धर्म। ऐसा तर्क देने वाले जरा गंभीरता से विचार करें कि यदि आपकी बात ही उचित होती तो फिर भगवान् महावीर सहित अनेक समृद्धिशाली राजा, सेठ आदि को घर-बार का त्याग कर संन्यास धर्म अंगीकार नहीं करना चाहिए था। घर पर ही रहकर आपकी समझ के अनुसार धर्म कर लेते। क्या उनका मन मैला था? क्या वे करुणाहीन थे, जो उनको घर-बार छोड़कर संन्यास धर्म स्वीकार करने की नौबत आई? साधन के महत्त्व को गौण करने वाले जरा सोचें, यदि ये साधन धर्म अर्थात् बाह्य धार्मिक अनुष्ठान और सत्क्रियाएँ गौण कर देंगे, तो तीर्थ का ही विच्छेद हो जाएगा। अतः साधन साध्य रूप खेती के लिए उर्वरा भूमि के समान है।

मेरा एक प्रश्न है आप लोगों से- क्या आपके घर में आने वाले निकटतम रिश्तेदार व अतिथि के प्रति आपके मन में गहरा आदरभाव है, आत्मीयभाव है? यदि आपके मन में गहरा आत्मीयभाव है तो फिर क्यों खड़े होते हो? क्यों हाथ जोड़कर पैर छूकर आदर-सम्मान का व्यवहार अपनाते हो? जबकि आपके मन में आदर तो है ही, फिर बाहर का व्यवहार अपनाने की कहाँ जरूरत है? लेकिन नहीं, मन में आदर-सम्मान होते हुए भी आप बाहर की क्रियाओं को अपेक्षित और उचित समझते हैं। आप यह भी जानते हैं कि इन सब बाहरी क्रियाओं से आत्मीयता में प्रगाढता आएगी और भ्रान्ति भी नहीं रहेगी। ठीक इसी प्रकार आपका तर्क अपनी जगह उचित है कि करुणा, सेवा, सद्भावना भी धर्म है, लेकिन इस धर्म को पुष्ट करने में धर्मक्रिया रूप साधन सहयोगी है।

धर्मक्रिया से आत्मगुणों का पोषण होता है, आत्मबल में अभिवृद्धि होती है तथा तप, त्याग एवं संयम की वृत्तियों को बल मिलता है। सांसारिक प्रवृत्तियों में लगे व्यक्ति को एकान्त, शान्त स्थान में बैठकर आत्म-चिन्तन के साथ धर्मक्रियाओं

में अवश्य प्रवृत्त होना चाहिए। सामायिक, स्वाध्याय, दया, उपवास, पौषध आदि का संबंध सीधा आत्मा के साथ है, आत्मगुणों के पोषण के साथ है। इनमें आरम्भ-समारम्भ की प्रवृत्ति का अभाव रहता है, अतः निरवद्यता की दृष्टि से इनकी महिमा निराली है।

कभी-कभी लोग धर्मक्रिया करने में अपने अरुचि के भाव को न बताकर 'ना' देने की बजाय उपर्युक्त तर्क को रटे हुए जुमले की भाँति "मन साफ होना चाहिए" को एक हथियार के रूप में काम में लेते हैं। परिणाम यह निकलता है कि ऐसा कहने वालों का मन तो कितना साफ है और होगा, पता नहीं, मगर मन साफ करने के साधन रूप धार्मिक अनुष्ठानों से अवश्य वंचित रह जाते हैं और परिणाम यह निकलता है कि उनकी आध्यात्मिक भावना पुष्ट नहीं हो पाती है और इस अनमोल मानव जीवन को व्यर्थ में हार जाते हैं।

अतः यह समझ में आता है कि स्वाध्याय एवं धार्मिक क्रियाएँ मन की शुद्धि के सशक्त साधन हैं। उपाध्यायश्री जी के पास एक भाई आया। महाराज सा. ने पूछा- "सामायिक करते हो?" उसने कहा- "महाराज! मन तो लगता है नहीं अर्थात् मन तो साफ है नहीं, फिर सामायिक करने से क्या मतलब?" उपाध्यायप्रवर ने क्या ही सुन्दर तर्कसम्मत उत्तर दिया- "मन लग जाता तो सामायिक करने की जरूरत ही नहीं पड़ती। अरे भाई! मन की स्थिरता, शुद्धि के लिए सामायिक एक साधन है।" इसी बात को पूज्य गुरु हस्ती अपने प्रवचन में फरमाया करते थे- "दवा की जरूरत तो रोगी को ही पड़ती है, नीरोग व्यक्ति दवा नहीं लेता है अर्थात् उसको जरूरत भी नहीं है।" बन्धुओं! निर्दोष भाव तो एकमात्र तेरहवें गुणस्थान में ही जीव को प्राप्त हो सकता है, वरना संसार में जीने वाले और सांसारिक क्रियाकलापों में भाग लेने वाले बिना धार्मिक साधनों के मन को साफ रख लें, किन्तु यह नामुमकिन है।

कुल मिलाकर धार्मिक साधन वातावरण को धर्ममय बना देता है और फलस्वरूप जन-जीवन में आध्यात्मिकता का संचार करता है। धार्मिक क्रियाओं में बैठा हुआ व्यक्ति निश्चित रूप से जीवन के लक्ष्य के बारे में जानने की जिज्ञासा रखेगा। सत्य क्या है, असत्य क्या है, इस पक्ष पर भी चिन्तन चलेगा। भौतिकता क्या है, आध्यात्मिकता क्या है, इस पहलू पर भी विचार करेगा और मैं तो कहूँगा कि ये धार्मिक साधन असत् से सत् की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर, कुपथ से सुपथ की ओर, तनाव से प्रसन्नता की ओर बढ़ने में सहायक बनेंगे। गुरुदेव तो फरमाया

करते थे- ''जो वेश नहीं बदल सकता वह मन को कैसे बदलेगा?''

यदि हम तत्त्व की दृष्टि से चर्चा करें तो द्रव्य का इतना महत्त्व है कि अभवी भी द्रव्य चारित्र के बल पर अर्थात् बाह्य क्रिया का आराधक बनकर नव ग्रैवेयक जैसी सुगति का अधिकारी बन जाता है। यही नहीं, बल्कि अभवी का प्रेरणा-प्राप्त साधक भी धर्म क्रियाओं को करते-करते अन्तर की ज्योति को जगाते हुए जन्म-मरण को समाप्त कर देता है तथा अखण्ड समाधान को प्राप्त कर लेता है। यह सच है कि हमें साधन तक ही सीमित बनकर संतुष्ट नहीं होना है, साधन से साध्य की प्राप्ति के लिए प्रयास अवश्य करना है। पर साधन को गौण करना अर्थात् द्रव्य का मूल्यांकन कम करना कोई समझदारी की निशानी नहीं है। कुछ लोग कहते हैं कि इन लोगों को धर्म-क्रिया करते हुए इतने वर्ष हो गए, क्या परिवर्तन आया? आपका यह कथन अपनी जगह ठीक हो सकता है, पर इसमें धार्मिक क्रिया का क्या दोष? दोष है तो व्यक्तिशः है। जीवन में परिवर्तन नहीं आता है तो धर्मक्रिया पर अंगुली उठाना या उस पर शंका करना या उससे अरुचि जगाना उचित नहीं है। यहाँ एक बात और स्पष्ट कर दूँ, भले ही आज परिवर्तन नहीं दिख रहा है, मगर कहते हैं कि पत्थर जब दसवीं चोट में टूटता है तो इसका मतलब नौ चोटें व्यर्थ नहीं गई, उनका भी अपना योगदान है।

कभी-कभी साधन साध्य की प्राप्ति में सहायक बन जाते हैं, जैसे-प्रसन्नचन्द्र राजर्षि विचारों से पतित बन गए थे, कषाय के कारण रौद्रध्यान में आ चुके थे, अहंकार के कारण से भीतर का भाव विषाक्त बन चुका था, क्रोध के कारण से मानसिकता विकृत बन चुकी थी, कुल मिलाकर उन हीयमान भावों के कारण पतन का रास्ता तय कर चुके थे। चर्चित और प्रसिद्ध बात है कि तन से वे जरूर साधना में खड़े थे, किन्तु मन से युद्ध क्षेत्र में शत्रु राजा से पूरे कषाय भावों के साथ लोहा ले रहे थे, शस्त्रास्त्र पूरे समाप्त हो चुके थे। शत्रु सेना का वे मन ही मन संहार कर चुके थे और शत्रु राजा को समाप्त करने के लिए अब उनके पास शस्त्र शेष नहीं रहा। सोचा, शस्त्र समाप्त हो गए तो क्या, मुकुट मेरे पास है। एक मुकुट के प्रहार से शत्रु राजा को समाप्त कर दूँगा, ऐसा सोचकर ज्योंही उन्होंने मुकुट लेने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया, तो अपना मस्तक मुण्डित पाया। यहाँ आप देखेंगे कि मुण्डन यानी द्रव्य के प्रभाव से राजा ने साध्य को प्राप्त कर लिया। मुण्डित मस्तक के ध्यान में आने मात्र से उनके भावों के परिवर्तन का जो दौर चला, जो पश्चात्ताप का भाव जगा, इतिहास साक्षी है कि उनके अन्तर्मानस की विशुद्धि के साथ चेतना का ऊर्ध्वीकरण होकर संचित पापों

का विगलन हुआ। कर्मक्षय का जो एक क्रम चला, कुछ ही पल और कुछ ही क्षणों में उन्होंने केवलज्ञान और केवलदर्शन को अर्जित कर लिया। यह है द्रव्य मुण्डन का प्रभाव जो भावमुण्डन (कषाय मुण्डन) में सहायक बना।

द्रव्य-साधना के पक्ष को गौण कहने वाले नहीं जानते कि आज अनेकानेक लोग जो धर्म-साधना से जुड़ रहे हैं, प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं, उसमें अधिकांश रूप से साधु-संतों की विशुद्ध निर्दोष दैनिक चर्या भी निमित्त है। यह जो दैनिक चर्या संतों की नजर आती है चाहे वह ईर्या समिति हो, चाहे वह सत्य सम्भाषण हो और चाहे वह निर्दोष निरवद्य गवेषणा हो, ये सब भी तो एक तरह से द्रव्य साधना के ही तो अंग हैं। मगर यह द्रव्य-साधना आज स्वयं संतों के लिए आत्मलक्ष्यी बनकर उपकारी तो है ही; किन्तु कितने हजार-हजार लोगों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन जाती है। कई बार तो अनेक जन सन्तों के बाह्य आचार-विचार की शुद्धता को देखकर स्वयं को तोलते हुए यहाँ तक विचार कर लेते हैं- कहाँ तो हमारा समस्या का जीवन और कहाँ इनका समाधान का जीवन। कहाँ हमारा सांसारिक विषय-वासना के कीचड़ से सने हुए पाप का जीवन और कहाँ इनका निर्लिप्त शान्त, प्रशान्त, अविकारी जीवन। ये जो भाव लोगों के मन में जगते हैं, उसमें साधु के बाह्य आचार-विचार की ही प्रमुख भूमिका है। उत्तराध्ययन सूत्र का १९वाँ अध्ययन इस बात का साक्षी है कि अनेक रमणियों से घिरा हुआ, विपुल मात्रा में भोग सामग्री जिसके चारों और बिखरी हुई, अनेक दास-दासी जिसके लिए पलक पावड़े बिछाये हुए खड़े थे, सुख-सुविधाओं की सामग्री से युक्त वह मृगापुत्र राजपथ का अवलोकन कर रहा था। तभी उसकी दृष्टि एक ऐसे सन्त पर पड़ी-

अह तत्थ अइच्छंतं, पासइ समणसंजयं।
तव-णियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं॥
तं पेहइ मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ।
कहिं मण्णेरिसं रूवं दिट्ठ पुव्वं मए पुरा॥

-उत्तराध्ययन सूत्र १९.१५-१६

शील और संयम की आभा जिनके चेहरे से साफ झलक रही थी, जो ईर्या समिति का शोधन करते हुए गमन कर रहे थे, ऐसे सन्त को देखकर उसके अन्तर्हृदय में विचार तरंगें जागृत हुई कि ऐसा रूप मैंने पहले कहीं देखा है, ऐसे आचार-विचार से मैं परिचित रहा हूँ और सोचते-सोचते उसे जातिस्मरण ज्ञान हो गया। उस

जातिस्मरण ज्ञान के बल पर जाना कि यह साधुपणा तो मैंने भी पहले स्वीकार किया था। उसे संयमचर्या के सुख का आस्वाद मिलते ही संसार के सारे राग-रंग, भोग-सामग्री, सुख-सुविधाएँ तुच्छ, नगण्य एवं सारहीन प्रतीत होने लगी। जीवन परिवर्तन की इस घटना में प्रमुख रूप से मृगापुत्र के लिए साधु की चर्या वरदान साबित हुई। आगम का यह उदाहरण द्रव्य-साधना से भाव-साधना की प्राप्ति के लिए पर्याप्त प्रेरक है।

मेरी इस चर्चा से आप यह न समझें कि महाराज द्रव्य-साधना को प्रमुखता दे रहे हैं, भाव को गौण कर रहे हैं। नहीं, ऐसी बात नहीं है, यह तो हम भी जानते हैं कि बाह्य क्रिया-कलाप और द्रव्य-साधना करते-करते तो अनन्तकाल बीत गया, पर पाया कुछ नहीं, क्योंकि भावों की विशुद्धि नहीं बनी। परन्तु एकमात्र इस विचारधारा से हमारा द्रव्य पक्ष गौण न हो जाए, इसलिए द्रव्य की भी खुलकर चर्चा कर लेनी चाहिए। यह एक हकीकत भी है कि द्रव्य स्व-पर दोनों का उपकारक है। इसलिए द्रव्य की अपनी एक अलग पहचान है, एक अलग महिमा है। मैं तो आपको यहाँ तक कहूँगा कि द्रव्य का अपना इतना एक अलग प्रभाव है कि जैसे चौराहे पर यूनिफार्म के साथ पुलिसमेन खड़ा है, हर राहगीर उसके एक इशारे पर रुकता है या आगे बढ़ता है, परन्तु वही पुलिसमेन यदि बिना यूनिफार्म के उसी स्थान पर खड़ा होकर दिशा-निर्देश दे तो लोग उसको पागल समझ कर अनदेखी करके आगे बढ़ जायेंगे। जब हम व्यवहार में भी द्रव्य का इतना प्रभाव देखते हैं तो धार्मिक क्षेत्र में यह द्रव्य एक माहौल बनाता है, जन-जन की जागृति में निमित्त बनता है और अनेक लोगों को सत्य को समझने का एक अवसर प्राप्त होता है।

आप जानते हैं कि घेवरिया मुनि ने मात्र आहार लोलुप बनकर ही संयम धारण करने का मानस जगा लिया और गुरु ने भी उसके भव्यत्व को देखकर यह समझा कि इसमें अभी भले ही आहार के निमित्त से संयम धारण करने का संकल्प जगा है, मगर भविष्य इसका उज्ज्वल है। गुरु ने यही शर्त रखी कि मैं अवश्य मिष्ठान्न लाऊँगा, परन्तु तेरे को भी नित्य आगम की ५ गाथाएँ कण्ठस्थ करनी होगी। दोनों तरफ से शर्त मंजूर थी। इसी शर्त के आधार पर वह नवदीक्षित मुनि उत्तराध्ययन सूत्र को कण्ठस्थ कर रहे थे। इसी क्रम में जब उत्तराध्ययन सूत्र के १७वें अध्ययन का क्रम आया और इस गाथा को कण्ठस्थ करने लगे-

दुद्ध-दही विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं।

अरए य तवो कम्मे, पाव-समणेत्ति वुच्चइ॥ -उत्तराध्ययन १७.१५

इस गाथा को पढ़ने के साथ ही उन्हें लगा कि इसमें दूध-दही का वर्णन कैसे आया? लगता है स्वादवर्द्धन का कोई अच्छा फार्मूला दिखता है। इसलिए गुरुजी से इसका अर्थ समझ लेना ठीक रहेगा। लेकिन गुरुजी ने जब इसका आत्मपरक अर्थ समझाया तो सुनने मात्र से उनके भीतर के नेत्र खुल गए। विचारों में और भावों में एक परिवर्तन का दौर जगा। वह परिवर्तन असत् से सत् की ओर था। अन्धकार से प्रकाश की ओर था। पतन से उत्थान की ओर था। असंयम से संयम की ओर था और तत्काल ही भीतर का एक शुद्ध सात्त्विक संकल्प जगा कि मुझे अब पापी श्रमण नहीं रहना है और उन्होंने पाँचों विगयों का एक साथ त्याग कर रसना-विजय का उत्कृष्ट परिचय दिया। कहाँ एक वक्त था जब मिष्ठान्न के लिए अधीर रहते और कहाँ साधुपणे के लिए उद्यत हो गए। प्रारम्भ में उनका यह उद्यम द्रव्यपरक ही तो था। मगर द्रव्य ने भी भाव की ओर बढ़ाने में सहयोग ही किया।

इसलिए एकान्त भाव को ही महत्त्व देने वाले एवं द्रव्य को अनुपादेय समझने वालों के लिए घेवरिया मुनि का यह दृष्टान्त भी पर्याप्त प्रमाण है कि भाव जागृति में द्रव्य भी कितना कारगर बनता है।

जो लोग यह कहते हैं कि मन शुद्ध होना चाहिए, कोई सामायिक करने से ही या धार्मिक क्रियाएँ करने से ही धर्म थोड़े ना होता है- यह एकान्त धारणा है, यह आग्रहवृत्ति एवं धर्म-साधना के प्रति अरुचि का परिचायक और धर्मक्रियाएँ नहीं करने का बहाना मात्र है। यदि यही धारणा रहेगी तो तीर्थ क्या होता है, संघ क्या होता है, न इसकी जानकारी रहेगी और न निरन्तरता बनी रहेगी, अर्थात् धर्म-क्रियाओं के अभाव में तीर्थ का ही विच्छेद हो जाएगा।

ध्यान रहे धर्मतत्त्व को श्रद्धा से स्वीकार करने वाला कभी तर्क में नहीं जाता है और धर्म तर्क का विषय नहीं है, श्रद्धा का विषय है। यद्यपि प्रभु ने "पण्णा समिक्खए धम्मं' के माध्यम से धर्म को प्रज्ञा के द्वारा समझने की बात कही है, किन्तु प्रज्ञा मात्र तर्क का सूचक नहीं है, अपितु वह श्रद्धा से सिक्त होती है। प्रभु की वाणी को श्रद्धा से स्वीकार कर श्रद्धावान श्रावक महीने में छह-छह पौषध करते थे। यह सब द्रव्यक्रिया ही तो थी, मगर उन धर्मक्रियाओं में भी धर्म जागरण के माध्यम से एक भवावतारी बनने की योग्यता हासिल की और सुबाहुकुमार ने उसी भव में संयम स्वीकार कर लिया। यह पौषध में धर्म जागरण का सुफल रहा।

द्रव्य एक निमित्त है जो भावों को प्रभावित करता है। इसके परिणाम दोनों तरह के हो सकते हैं अच्छे भी और बुरे भी। मगर हमें उन निमित्तों से दूर रहना चाहिए जो हमारे भावों को विकृत करें और उन निमित्तों को अपनाना चाहिए जो हमारे भावों में निर्मलता लाएँ, साधना में तेजस्विता लाएँ और धर्मक्रियाएँ दीप्तिमान बनें। अतः आप सभी के लिए यही सुझाव है कि जो आज धर्मक्रियाओं में शिथिलता आ रही है, धर्म-स्थानक सूने पड़े हैं, ताले या जाले लग रहे हैं, वहाँ संकल्पबद्ध होकर प्रार्थना, स्वाध्याय, संवर, सामायिक, पौषध आदि के माध्यम से स्वयं भी जुड़ें और जन-जन को जोड़कर जिनशासन की प्रभावना में सहभागी बनें और स्व-पर कल्याण में अग्रणी बनें, इसी मंगल मनीषा के साथ।

जैनी कहाते हैं

डॉ. सुषमा सिंघवी

जो उठते हैं, चलते हैं, अप्रमत्त हैं सदा।
वे जन कहीं हों विश्व में, जैनी कहाते हैं।।टेर।।

अश्रुत धर्म-श्रवण हेतु जो पुरस्सर हैं,
सुने हुए पे आचरण को जो अग्रसर हैं।
संयम की साधना में हिंसा वृत्ति से निवृत्त हैं,
वासना के त्याग हेतु तप में जो प्रवृत्त हैं।।१।।

असंगियों के संगी जो अनाश्रितों की शरण हैं,
अशिक्षितों में ज्ञान का आधान करने वाले हैं।
रोगियों की वैयावृत्य में सदा प्रसन्न हैं,
विग्रहों को शान्त कर सादगी से रहते हैं।।२।।

विकलांग के जो अंग बनके जीना सीख लेते हैं,
वृद्ध औ अशक्त जन की लाठी बनके चलते हैं।
मंद बुद्धिजन का हँस के हौंसला बढ़ाते हैं,
धुत जनों की लत छुड़ा के चेतना जगाते हैं।।३।।

-निदेशक, वर्द्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

२१वीं सदी में जैन शोध संस्थान एवं उनसे उभरती अपेक्षाएँ

डॉ. जीवराज जैन

मई २००६ के अंक में प्रकाशित लेख जैनदर्शन की वैज्ञानिक समीक्षा और शोध की आवश्यकता के क्रम में द्वितीय लेख-

भारतीय जैन शोध संस्थान व उनका स्वरूप

भारत में जैन समाज के अनेक ट्रस्ट बने हुए हैं, जिन्होंने जैन विद्या की प्रगति के लिए 'शोध-संस्थान' खोल रखे हैं। इनका अध्ययन करने से पता चलता है कि इन्होंने अपने प्रारम्भिक काल में शायद कुछ महत्त्वपूर्ण शोधकार्य किये होंगे, लेकिन कालान्तर में इनका योगदान नगण्य सा हो गया है। कुछ प्रमुख संस्थानों के नाम परिशिष्ट नं. १ में दिये गये हैं।

इनके उद्देश्य और प्रमुख गतिविधियाँ

इन शोध संस्थानों का उद्देश्य मुख्य रूप से दो प्रकार का है-

अ. प्राचीन साहित्य के संग्रहणालय के रूप में कार्य करना।

ब. पारम्परिक अध्ययन व शोध करना।

इनकी प्राप्ति के लिए निम्न प्रकार की गतिविधियाँ चलती हैं।

१. जगह-जगह पर बिखरे हुए 'जैन पुरा-खजाने' को खोजकर चिह्नित करना। मुख्य रूप से जैन आगम, धार्मिक ग्रन्थ व साहित्य को। कहीं-कहीं पर पुरानी जैन कलाओं जैसे वास्तु, चित्र एवं शिल्पकला से संबंधित सामग्री व घटनाओं के उल्लेख से युक्त शिलालेख आदि को भी खोजकर चिह्नित किया जाता है।

२. इन सबका संग्रहण करके, इनको 'ग्रन्थालय' या 'म्यूजियम' के रूप में सुव्यवस्थित रूप से रखना।

३. इनमें 'हस्तलिखित' ग्रन्थों को प्रकाशित करना।

४. पुराने साहित्य का प्राकृत या संस्कृत भाषा से हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी आदि आधुनिक भाषाओं में अनुवाद करना तथा इनको प्रकाशित करना।

५. इन सबको सूचीबद्ध करके रखना।

६. **पारम्परिक अध्ययन-** शास्त्रीय ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु पठन-पाठन में सेवाएँ देना।

७. **शोध व अनुसंधान-** इस पारम्परिक अध्ययन के अलावा जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला, साहित्य व संस्कृति पर शोध करना।

मुख्यतः ये संस्थान 'संग्रहणालयों' के रूप में ही कार्य कर रहे हैं। कुछ ही संस्थान पारम्परिक अध्ययन में अपनी सेवाएँ देते हैं। विश्वविद्यालयों से संबंधित संस्थाएँ 'जैन विद्या' पर शोध करने में ज्यादा सक्षम हैं। अन्य संस्थान मात्र 'शोध संस्थान' का शब्द अपने नाम के आगे जोड़ लेते हैं। जिससे उनका दायरा संग्रहणालयों से ज्यादा व्यापक प्रतीत होने लगता है। शोध संस्थान के रूप में नामांकन हो जाने से उनको सरकारी अनुदान मिलना शुरू हो जाता है और इस अनुदान से कोई भी वंचित नहीं रहना चाहता है।

परम्परागत व वैज्ञानिक अनुसंधान

१. ये संस्थान मुख्य रूप से संग्रहणालय के रूप में ही कार्य कर रहे हैं। इनमें उपलब्ध ग्रन्थों व साहित्य की 'सूची' या तो रजिस्टर के रूप में रहती है या फिर कार्डेक्स सिस्टम से रहती है। इनमें एकरूपता लाने के लिए कुछ सफल प्रयास हो रहे हैं। इससे वहाँ उपलब्ध साहित्य की 'यांत्रिक सूचना' (रचना का नाम, रचनाकार, ग्रंथ की स्थिति, समय आदि) क्रमबद्ध रूप से मिल जाती है। कहीं-कहीं पर रचनाकार के नाम से और ग्रंथ के नाम से दोनों प्रकार की सूचियाँ उपलब्ध हो जाती हैं।

आजकल कुछ समृद्ध संस्थानों ने ये सूचियाँ कम्प्यूटर में भी डाल दी हैं। जिससे उनकी आधुनिकता का आभास होने लगता है। फिर भी उनकी समग्र क्षमता का उपयोग शोध कार्य के लिए नगण्य ही रह रहा है।

२. इन संस्थानों में साधु-साध्वियों के पठन-पाठन की भी व्यवस्था रहती है। लेकिन उनका उपयोग एक अनुमान के अनुसार ५ प्रतिशत से ज्यादा नहीं हो पाता है। गृहस्थ लोग तो १ प्रतिशत से भी कम मात्रा में इनको उपयोग में लेते हैं। कहीं-कहीं तो साल में एक बार भी किताब बाहर नहीं निकलती है। इसको दयनीय स्थिति कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी, क्योंकि संस्थापकों ने शायद सपने में भी ऐसी स्थिति का अनुमान नहीं किया होगा।

कुछ केन्द्रों ने अपने यहाँ 'पंडित' बनाने की योजना चला रखी है। कुछ स्वतंत्र केन्द्र भी ऐसी प्रवृत्ति विद्यालयों के रूप में चला रहे हैं। ये केन्द्र ज्ञान की अभिवृद्धि में काफी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। यहाँ से ऐसे पंडित तैयार हो जाते हैं, जो अच्छे ज्ञाता व श्रावक बन जाते हैं। इनको अच्छे साधुओं का सत्संग बराबर मिलते रहना चाहिए। इस प्रकार की युवा-पीढ़ी समाज के लिए गर्व व सम्मान की पात्र हो सकती है। ये लोग 'शोध' कार्य में भी प्रभावी रूप से आगे आ सकते हैं। वास्तव में पारम्परिक व आगम शोध के लिए संस्कृत भाषा का विशिष्ट ज्ञान इनको होना आवश्यक होता है। क्योंकि आगम की टीकाएँ व चूर्णियाँ संस्कृत में लिखी हुई हैं।

३. एक अध्ययन के अनुसार अधिकांश संस्थानों में, पारम्परिक अनुसंधान भी नाममात्र का ही होता है। कहीं-कहीं पर 'स्नातकोत्तर' डिग्री के लिए अध्ययन जरूर होता है, लेकिन अध्ययन व शोध के लिए मुश्किल से २-४ विद्यार्थी दिखाई देते हैं। प्रकाशित अभिलेखों के आधार पर तो ऐसा लगता है कि शोध कार्य काफी कम हो रहा है और जो भी हो रहा है उसका स्तर काफी निम्न होता है। बहुत ही कम कार्य अच्छे स्तर का है। साहित्य सर्वेक्षण और संकलन का काम ज्यादा होता है। तुलनात्मक अध्ययन व खोज तथा प्रयोग का काम बहुत कम होता है।

गुणवत्ता व विकास की समस्याएँ

एक दृष्टि से इन ग्रन्थालयों का ज्ञान वहाँ की अल्मारियों में ही सिमट कर रह जाता है। संस्थाएँ केवल इस तथ्य का बढ़-चढ़ बखान करके संजीदगी का प्रदर्शन करती हैं कि उनके पास 'इतने पुराने' या इतने 'हस्तलिखित' ग्रन्थ उपलब्ध हैं। वे इस तथ्य को नजरअंदाज करते हैं कि आधुनिक समाज में उस ज्ञान-भंडार की क्या उपयोगिता है? इस पहलू का या इस मुद्दे का चिंतन उनकी सोच के परे का विषय समझा जाता है। केवल पुरानी धरोहर के प्रति गहरी आसक्ति या ममत्व ही इनको जिन्दा रखता है। इन ग्रन्थों से समाज को क्या प्रेरणा मिलती है या समाज के ज्ञान-संवर्द्धन में इनका कैसे योगदान बढ़ सकता है, किसी भी संस्थान के कार्य-प्रारूप में सम्मिलित नहीं है। जैसे इस पक्ष से उनका कोई सरोकार नहीं है।

१. मेरे विचार से यह गहन चिन्ता का विषय है। यह संसाधनों का अपव्यय है।

एक जागृत समाज में यह उसकी निष्क्रियता, अवहेलना व आशातना का प्रतीक है। यदि उपलब्ध ग्रन्थों की जो सूचियाँ बनी हुई हैं, उनको आधुनिक रूप में 'इन्टरनेट' पर उपलब्ध कराई जाय और इससे भी एक कदम आगे बढ़कर प्रत्येक ग्रंथ के सारांश को सांकेतिक शब्दों (**Keywords**) में प्रस्तुत किया जाय, तो संस्थान की उपयोगिता वैश्विक स्तर पर बढ़ाई जा सकती है, स्थापित की जा सकती है। यहाँ तक कि हर पढ़ा-लिखा व्यक्ति या हर जिज्ञासु अपनी ज्ञान-पिपासा ऐसे 'साइट' पर जाकर मिटा सकता है। कोई भी शोधार्थी, चाहे वह अमेरिका में हो, या जर्मनी में हो, यह सुनिश्चित कर सकता है कि वह अपने शोध कार्य में अब तक के उपलब्ध समग्र साहित्य का मंथन कर सकता है, उपयोग कर सकता है।

२. इस प्रवृत्ति के अलावा इन संस्थानों में उनकी 'रुटीन' व एक सी समस्या के समाधान के लिए निरंतर गतिविधियाँ चलती रहती हैं। ये काफी श्रमसाध्य तथा अपव्ययी होती हैं। उदाहरणार्थ-

(अ) सरकारी तंत्र के साथ संपर्क करने में तथा उनके साथ संयोजन करने में, प्रशासनिक समस्याओं व मुद्दों को सुलझाने में योग्य प्रशासक का अपव्यय होता है।

(ब) सरकारी अनुदान को समय पर प्राप्त करने के लिए अपने महत्त्वपूर्ण संसाधन खर्च करने पड़ते हैं। बहुत सी प्रतिभा इसी में फंसी रह जाती है। निराशा व विलम्ब के जंजाल से ज्यादा आगे नहीं जा पाते हैं। छोटे संस्थानों में यह समस्या ज्यादा कठिन है।

३. एक ज्वलंत समस्या, जो प्रायः सभी संस्थानों में विद्यमान है, वह है अच्छे शोधार्थियों का मिलना। उनको आकर्षित करना, इकट्ठा करना और उनको समुचित सुविधाएँ उपलब्ध कराना दुर्लभ होता जा रहा है। आचार्यों की गुणवत्ता का भी ह्रास होता जा रहा है। शोधार्थियों की दुर्लभता के साथ-साथ अच्छे विद्यार्थियों का भी अभाव होता जा रहा है। अधिकांशतः संस्कृत और प्राकृत में जो स्नातकोत्तर अध्ययन करते हैं, वे ही जैन-विद्या की खोज व शोध करने के लिए आगे आते हैं। पार्श्वनाथ विद्यालय (बनारस), टोडरमल शोध संस्थान (जयपुर) तथा उदयपुर के संस्थानों में ऐसी ही वृत्ति दिखाई देती है। ये संस्थान साधारणतया संस्कृत कॉलेजों से जुड़े रहते हैं। कुछ ही संस्थान दर्शन-विभागों से

संबंध रखते हैं।

इस अभाव का मूल कारण है शोधार्थियों के भविष्य में कमाई के मौके की अल्पता, जीवन यापन की असुरक्षा। आज के प्रतिस्पर्धा के जमाने में लोगों की अपेक्षाएँ बढ़ी हैं। भौतिकता का माहौल गर्म हो गया है। ऐसे वातावरण में यदि समाज के प्रतिभावान छात्र दूसरे विषयों के अध्ययन और शोध के लिए स्वाभाविक रूप से उन्मुख होते हैं तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

यदि हमारा साधु-समाज शोधार्थियों के नैतिक मूल्यों के विकास में अपना सक्रिय योगदान दे, तो स्थिति बदल सकती है। इससे अच्छे और समर्पित शोधार्थियों की पौध बराबर तैयार होती रहेगी।

४. संस्थानों में आपसी संचार-व्यवस्था भी बहुत कमजोर है। एक-दूसरे के साथ आपसी संवाद नहीं के बराबर है। शोध कार्यों में इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। शोध की गुणवत्ता कमजोर होती जा रही है। आपसी सूचना-तंत्र की व्यवस्था यदि मजबूत रूप से स्थापित हो जाये तो एक-दूसरे के संसाधनों का, ज्ञान भंडार का उपयोग, शोध कार्यों में सरलता से हो सकेगा। इससे शोध-कार्यों की गुणवत्ता बढ़ेगी।

५. **जैन शोधार्थी-** जैन विद्या में शोध के लिए जैन विद्यार्थियों को आगे आना चाहिए। इसके लिए युवा स्वाध्यायी तथा जैन पंडित एक ऐसी श्रेणी हो सकती है, जो अच्छे धर्माचरण की तरफ ज्यादा झुकी रहती है। लगातार सत्संग के प्रभाव के कारण वे 'स्वयं को पहचान कर अपने लक्ष्य का निर्धारण करने' में सदा सक्षम रहते हैं। वे व्रतधारी व प्रबुद्ध श्रावक के रूप में उभरेंगे। उनमें स्व-प्रोत्साहन व समर्पण का गुण होगा। आवश्यकता रहेगी उनको समुचित निर्देशन की। वास्तव में वे कुछ समय बाद इस प्रकार समर्पित हो जाते हैं कि शोधार्थी से साधु बन जाते हैं।

(अ) संक्षेप में कह सकते हैं कि पंडित योजना के तहत न केवल ज्ञानी पंडित ही बनाये जाते हैं, बल्कि अच्छे आचरण वाले श्रावक भी बनते जाते हैं। शोधार्थियों का जब चुनाव किया जाता है तो उनके आचरण व उनकी प्रतिभा के साथ-साथ उनका शोध के प्रति झुकाव भी देखना चाहिए।

(ब) ऐसे शोधार्थियों को समाज से समुचित सम्मान मिलना अति आवश्यंक है।

क्योंकि ऐसा सम्मान ही उनका सबसे बड़ा प्रोत्साहन व संबल होता है। भविष्य की पीढ़ियाँ अपने आप, तब शोध के प्रति आकर्षित व समर्पित होती जायेगी।

शोध कार्य की व्यवस्था

शोध कार्य की गुणवत्ता के उन्नयन के लिए निम्नोक्त व्यवस्था होनी चाहिए-

१. शोधार्थियों के वार्षिक कार्य का मूल्यांकन।

२. उनकी प्रगति व कार्य-कुशलता के विकास के लिए समुचित प्रशिक्षण की व्यवस्था।

३. शोध-निर्देशन के लिए अच्छे व कुशल मार्गदर्शकों की राष्ट्रीय स्तर पर व्यवस्था।

४. शोधार्थियों के आपसी संपर्क तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिए एक सामूहिक मंच की व्यवस्था। इससे आपसी विचार-विमर्श के अलावा कार्य का सापेक्ष स्तर तय होगा। वर्ष में २-३ संगोष्ठियों का आयोजन। इससे गुणवत्ता के आधार पर उनका चयन करने का व्यापक मंच उपलब्ध होगा।

५. चयनित कार्यों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करने के लिए यह मंच सक्रिय रूप से भाग ले सकता है।

६. जैन-विद्या में शोध कार्यों को विदेशों में प्रोत्साहित करने के लिए यह मंच यथोचित प्रचार-प्रसार कर सकता है।

यह व्यवस्था तभी प्रभावी होगी जब हमारे ग्रंथों का सार सांकेतिक शब्दों में इन्टरनेट पर उपलब्ध हो। इससे विदेशी विश्वविद्यालयों के छात्र, चाहे वे लंदन, जापान, अमेरिका व फ्रांस आदि में कहीं भी अवस्थित हों, समान रूप से लाभान्वित हो सकते हैं।

यह सब कार्य करने के लिए विभिन्न संस्थाओं को आगे आना चाहिए तथा प्रत्येक की भागीदारी के लिए अपना एक 'कान्फेडेरेशन' (**Confederation**) बनाना चाहिए।

सामूहिक मंच

विभिन्न शोध संस्थानों के अपने सामूहिक मंच से न केवल उनके संसाधनों का अपेक्षित उपयोग होगा, बल्कि वे विश्वस्तरीय वैज्ञानिक-

अध्यात्मवाद के विकास में अपनी सहभागिता निभा सकेंगे।

१. यह मंच ग्रन्थों के सार को सांकेतिक शब्दों में इन्टरनेट पर डालने में अहम्-भूमिका निभा सकेगा। इसके माध्यम से अन्य लक्ष्य भी पूर्ण होंगे यथा-

२. परम्परागत शोध के अलावा जैन जीव-विज्ञान और कर्म-सिद्धान्तों की, आधुनिक विज्ञान के सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करने के प्रयासों को प्रोत्साहित करना तथा विधिवत् शोध योजनाओं का संचालन करना।

३. ऐसी शोध योजनाओं की आवश्यकता, महत्ता व उपयोगिता से जन-जन को परिचित कराना।

४. आधुनिक विज्ञान को शोध के नये आयाम प्रस्तुत करना। जैन आगमों में उपलब्ध सिद्धान्तों द्वारा नया मार्ग और क्षेत्र प्रस्तुत करना। प्रयोगात्मक तरीकों से उपलब्ध ज्ञान को सिद्ध करना। ज्ञात सिद्धान्तों का तुलनात्मक रूप से अध्ययन करना। इस सबके लिए एक संगठित मंच होना जरूरी है।

५. उपर्युक्त कार्य संपादन के लिए आवश्यकतानुसार विश्वस्तरीय प्रयोगशाला की स्थापना करना तथा आधुनिक उपकरणों व यंत्रों को उपलब्ध कराना।

६. शोध सूचना और निष्कर्षों को सभी संस्थानों में उपलब्ध कराना व उनको विश्व स्तर पर प्रचारित व प्रसारित करना।

७. वैज्ञानिकों व आगमविदों की सहभागिता सुनिश्चित करना। बहुआयामी योजनाओं में संबंधित विशेषज्ञों की सेवाओं को उपलब्ध कराना। वरिष्ठ वैज्ञानिकों को आकर्षित करना। उनको शोध के विभिन्न आयामों से अवगत कराना व उनकी नैसर्गिक रुचि का संवर्द्धन करना। संबंधित आगम-सिद्धान्तों के प्रसार के लिए 'प्रशिक्षण' शिविर लगाना। खासकर कर्म-सिद्धान्त, जीव-विज्ञान व कषाय पर।

८. शोधार्थियों के प्रयास व पुरुषार्थ को सही गति व दिशा प्रदान करने के लिए शोध संसाधनों को आसानी से तथा उपयोग में लाने योग्य रूप में उपलब्ध कराना। शोध कार्यों का अभिजात-वर्ग से समीक्षण कराकर अच्छे और प्रभावशाली प्रयासों का अभियोजन करना, जिससे संवेदनशीलता व समर्पण का स्तर उन्नत बन सके।

९. यह केन्द्रीय मंच अपने सदस्यों के लिए तथा जैन समाज के लिए प्रवक्ता के

रूप में कार्य करेगा। शोध की मात्रा व गुणवत्ता की लक्ष्यबद्ध उन्नति का मापदंड निर्धारित करेगा। कॉलेज व अध्यात्मवाद के शोध संस्थानों में, वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के साथ भागीदारी स्थापित करेगा। जिससे आपसी उपयोगिता बढ़े व संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो सके।

परिशिष्ट-१

प्रमुख शोध संस्थान-

१. एल.डी. इन्स्टीट्यूट ऑफ इंडोलोजी (अहमदाबाद)
२. **SCER** सेंटर (अहमदाबाद)
३. महावीर जैन आराधना केन्द्र (कोबा, अहमदाबाद)
४. **RISSOS** (अहमदाबाद)
५. धर्म, दर्शन, विज्ञान शोध संस्थान (बड़ौत, उदयपुर)
६. आगम, अहिंसा प्राकृत शोध संस्थान (उदयपुर)
७. अनेकान्त ज्ञान-मंदिर (बीना)
८. पार्श्वनाथ विद्यापीठ (बनारस)
९. टोडरमल शोध संस्थान (जयपुर)
१०. जैन विश्व भारती (लाडनूँ)
११. अहिंसा, शाकाहार संस्थान (कोलकाता)
१२. कुंदकुंद ज्ञानपीठ (इन्दौर)
१३. भोगीलाल लहरचन्द प्राच्य विद्या संस्थान (दिल्ली)
१४. मध्यलोक शोध संस्थान (हस्तिनापुर)
१५. मध्यलोक शोध संस्थान (सम्मेदशिखर)
१६. प्राकृत भारती अकादमी (जयपुर)
१७. कुमारसंभव ग्रन्थालय (कोलकाता)
१८. श्रुत संवर्द्धन संस्थान (मेरठ)
१९. निम्नोक्त शहरों में कुछ अन्य मान्यता प्राप्त शोध संस्थान अवस्थित हैं- जैन भवन (कोलकाता), मथुरा, बीना, बर्हानपुर, जयपुर, बीकानेर, सागर, जबलपुर आदि।
२०. निम्नोक्त विश्वविद्यालयों में 'जैनोलॉजी में शोध के लिए विभाग खुले हुए हैं - उदयपुर, आरा, मद्रास, कटक, सागर, जयपुर, मैसूर आदि।

-४०, कमानी सेन्टर, द्वितीय माला, बिस्तुपुर, जमशेदपुर-१

सम्यक्-तप

न्यायाधिपति श्री जसराज चौपड़ा

विश्व में दो विचारधाराएँ हैं- १. भोगवादी और २. अध्यात्मवादी। चार्वाक दर्शन भोगवादी दर्शन है। वह कहता है-

यावद् जीवेद् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥

अर्थात् जब तक जियें सुख से जियें, ऋण करके भी घी पीयें। पुनर्जन्म किसने देखा है। यह नास्तिक एवं पतनोन्मुख संस्कृति है।

अध्यात्मवादी दर्शन आत्मा की अमरता, कर्म, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक, मोक्ष में विश्वास रखकर राग से विराग एवं विराग से वीतरागता प्राप्ति का एवं भोग से त्याग व भुक्ति से मुक्ति की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। इसका मुख्य आलम्बन है-**'सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः'** अर्थात् सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप को मोक्ष का मार्ग मानना।

इन चारों का समन्वित रूप ही मुक्ति का मार्ग है। तप निर्जरा का एकमात्र साधन है। संवर से आस्रव निरोध होता है। कर्मों का प्रवाह रुकता है, परन्तु संचित कर्मों का क्षरण एकमात्र तप से होता है। तप निर्जरा का हेतु ही नहीं धर्म का उज्ज्वलतम अंग है तभी आचार्य शय्यम्भव ने दशवैकालिक सूत्र की प्रथम गाथा के माध्यम से पुत्र-शिष्य मनक एवं समस्त जगत् को तप का महत्त्व बताते हुए उसे उत्कृष्ट मंगल की संज्ञा दी है। वे कहते हैं- **'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।'** अर्थात् अहिंसा, संयम एवं तप ये तीन उत्कृष्ट मंगल हैं। बिना तप का जीवन बुझे दीपक के समान है- निष्प्राण जीवन है। तभी वेदवाक्य है- "तपसा वै लोके जयन्ति" अर्थात् तप से तेजस्वी बनकर व्यक्ति लोक में विजयश्री एवं समृद्धि प्राप्त करता है। तप-दो अक्षरों से बना है, जिसमें 'त' का अर्थ है 'तत्काल' एवं 'प' का अर्थ है पवित्र करना। इस प्रकार तप तत्काल पवित्रता व निर्मलता प्राप्ति का साधन है। वह आत्मरूपी स्वर्ण को तपाकर समस्त विजातीय द्रव्यों (कर्म-मलों) से आत्मा को मुक्त करके उसे

शुद्ध कुन्दन स्वरूप अमल एवं निखालिस बना देता है। यह क्रिया आत्मा से परमात्मा बनने की प्रक्रिया है। तप समस्त जीवन, धर्म व संस्कृति का आधारभूत तत्त्व है।

महावीर प्रभु ने उत्तराध्ययन सूत्र में फरमाया है कि "कडाण कम्माण न मोक्खो अत्थि।" अर्थात् किये हुए शुभाशुभ कर्मों को भोगे बगैर मोक्ष प्राप्ति संभव ही नहीं है, परन्तु प्रभु ने उसी उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन ३० गाथा ६ में यह भी कहा है कि "भवकोडि-संचियं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जई।" अर्थात् करोड़ों भवों के संचित कर्मों का क्षरण तप के द्वारा संभव है। इसी उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन २८ गाथा ३५ में प्रभु फरमाते हैं कि "तवेण परिसुज्झइ" अर्थात् तप आत्मशुद्धि का साधन है। जो कर्म उदय में नहीं आये हैं, उन्हें भी बगैर भोगे उनका क्षरण करने का एकमात्र साधन यदि कोई है तो वह तप है। आचार्य शय्यम्भव दशवैकालिक सूत्र के अध्ययन ९ उद्देशक ४ गाथा ४ में फरमाते हैं- "तवसा धुणइ पुराणपावगं।" अर्थात् तप से पुराने संचित कर्मों का क्षरण हो उनसे निर्जरा प्राप्त होती है। 'सर्वार्थसिद्धि' ग्रंथ में आचार्य पूज्यपाद फरमाते हैं- "तपोऽभ्युदयकर्मक्षयहेतुः" अर्थात् तप कर्म क्षय की वह प्रक्रिया है जिससे आत्मा का अभ्युदय भी होता है। एक हिन्दी कवि तप के महत्त्व को प्रतिपादित करते हुए कहता है-

तप है जीवन का शुद्ध शोधन, परिष्कार का सच्चा साधन।
अशुभ वृत्ति का करे निवारण, शुद्ध वृत्ति का हो सम्पादन॥

एक अन्य कवि इसी बात को अपने तरीके से इस तरह कहता है-

आत्म सूर्य की ऊष्मा तप है, जिससे जीवन क्षितिज चमकता।
विषय-वासना का अंधियारा, फिर मन जग में कहीं न दिखता॥

तप वस्तुतः ज्वाला भी है तो ज्योति भी है। कर्मक्षय हेतु तप ज्वाला है। वह समस्त संचित कर्मों को जला कर भस्मीभूत कर देता है, परन्तु आत्मगुणों के विकास एवं परिष्कार हेतु वह ज्योति है।

तप दो प्रकार का होता है- बाह्य एवं आभ्यन्तर। दोनों के छह-छह भेद हैं। बाह्य के छह भेद हैं- १. अनशन २. ऊणोदरी (कम खाना) ३. वृत्तिसंक्षेप ४. रस-परित्याग ५. कायक्लेश व ६. प्रतिसंलीनता। आभ्यन्तर तप के छह भेद हैं- १. प्रायश्चित्त २. विनय ३. वैयावृत्त्य ४. स्वाध्याय ५. ध्यान एवं ६.

व्युत्सर्ग। बाह्य तप भी आभ्यन्तर तप के हेतु हैं एवं कर्म-निर्जरा के अमोघ साधन हैं।

तप का उद्देश्य व आधार बताते हुए भगवान् महावीर फरमाते हैं कि **"नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नो परलोगट्ठाए तवमहिट्ठिज्जा। नो कित्तिवण्ण-सद्द-सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठिज्जा, नन्नत्थ निज्जरट्ठाए तव महिट्ठिज्जा॥**

तप न इस लोक के सुखों हेतु, न परलोक के सुखों हेतु, न कीर्ति, प्रशंसा एवं लौकिक कामनापूर्ति हेतु किया जाना चाहिए। तप मात्र कर्मों की निर्जरा, आत्मा की निर्मलता एवं मुक्ति प्राप्ति के उद्देश्य से करना चाहिए। निर्जरा के अलावा तप का अन्य कोई भी हेतु चाहे वह प्रशंसा हो, कष्ट निवारण हो या पीहर से कुछ प्राप्ति का उद्देश्य हो, वह मात्र कर्मबंध का हेतु ही बनेगा। आचार्य मलयगिरि आवश्यकसूत्र की टीका में कहते हैं कि- "तप्यन्ते कर्ममलाः येन तत् तपः।" तप वह है जिससे आत्मा को लिप्त करने वाले कर्ममल-तपकर क्षरण को प्राप्त करें अर्थात् जिस साधना से आत्मा के कर्म तप्त होकर समाप्त हों, वह ही तप है।

आचार्य जिनदासगणि फरमाते हैं- 'तवो णाम तावयति अट्ठविहं कम्मगंठिं।" अर्थात् जो आठ प्रकार की कर्म-ग्रंथियों को तपाकर भवसागर से पार करे, वह तप है। एक आचार्य फरमाते हैं- "आत्मशोधिनीक्रिया तपः।" अर्थात् जिस क्रिया से आत्मा का शोधन हो यानी वह कर्ममुक्त हो, निर्मल बने, वह तप है। आचार्य जिनदासगणि निशीथसूत्र चूर्णि में फरमाते हैं- "तप्यते अणेण पावकम्म इति तपः।" अर्थात् जिस साधना से पाप कर्म तप्त हों वह तप है। आचार्य मलयगिरि आवश्यक सूत्र की टीका में यह भी फरमाते हैं- "तापयति अष्टप्रकारकं कर्म इति तपः।" जिससे आठों कर्म तपकर क्षीण हों, वही तप है। आचार्य उमास्वाति तत्त्वार्थसूत्र में फरमाते हैं- "तपसा निर्जरा च" अर्थात् तप वही कहलाता है, जिससे कर्मों की निर्जरा हो। एक मूर्धन्य आचार्य फरमाते हैं कि- "विषयकषायाहारत्याग इति तपः।" अर्थात् जिस क्रिया से विषय-सेवन व कषायों में मंदता आवे, आहार के प्रति आसक्ति मंद या समाप्त हो, वह तप है। एक आचार्य कहते हैं 'समभावस्थिति इति तपः।' अर्थात् समभाव की स्थिति ही तप है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है- 'इच्छा हु

आगाससमा अणंतिया।' अर्थात् इच्छाएँ आकाश की तरह अनन्त हैं अतएव इच्छाओं को सीमित करना उनका निरोध करना भी तप है-''इच्छानिरोधस्स तपः।''

तप ताप व संताप से भिन्न है- तप के नाम पर अज्ञानवशात् कषायवृद्धि कर दूसरों को क्लेशित करने का भाव 'ताप' है एवं जहाँ ईर्ष्यावशात् दूसरों को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से तप किया जावे, वह ताप ही नहीं संताप है। इसी तरह स्वार्थ, मोह, अज्ञान व नामवरी आदि के लिए तप करे एवं वांछित फल नहीं मिलने पर वह तप की बुराई करे, वह भी तप नहीं संताप है। काया को कष्ट देना इसी श्रेणी में आता है, जैसे तामली तापस का पंचाग्नि तप अथवा भर सर्दी के मौसम में शीतल नदी के जल में आकंठ डूबे रहना आदि। आचार्य भद्रबाहु बालतप की व्याख्या करते हुए फरमाते हैं कि ''कषायों की उत्कटता एवं आत्मभाव के अभाव में किया गया तप 'बाल-तप' है। वह हाथी के स्नान की तरह है, जो स्नान के बाद स्वयं पर ही धूल उछालता है।''

तप का महत्त्व- चार समाधियों में यानी सूत्र, विनय, आचार व तप में तप समाधि चौथी समाधि है। धर्म के चार भेद- दान, शील, तप व भावना में तप का तीसरा स्थान है। श्रावक के छह आवश्यक देवाराधना, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप व दान में तप का पाँचवाँ स्थान है। तीर्थंकर गोत्र बंधन के बीस स्थानकों में तप का चौदहवाँ स्थान है। मोक्षमार्ग के चार साधन- ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप में तप का चौथा स्थान है। स्वयं भगवान् महावीर ने उत्तराध्ययन सूत्र अध्ययन १२ गाथा ३७ में फरमाया है-

सक्खं खु दीसइ तवो विसेसो, न दीसई जाइ विसेस कोई।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं, जस्सेरिसा इड्ढि महाणुभागा॥

अर्थात् जाति नहीं तप की ही विशेषता है तभी चाण्डाल कुल उत्पन्न हरिकेशी मुनि महाभाग एवं पूजनीय हैं। अर्थात् संसार में अन्य कोई विशेषता नहीं है। विशेषत्व प्रदान करने वाला तत्त्व मात्र 'तप' ही है यानी मात्र चारित्र एवं सदाचार ही है।

शुद्ध तप किसका है? इस संबंध में दशवैकालिक सूत्र में कहा गया है-

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठीकुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई॥

तप उसी का कहलाता है जो आकर्षक, प्रिय एवं मनोज्ञ भोगों को पाकर भी एवं उन्हें भोगने की सक्षमता की मौजूदगी में भी स्वेच्छा से उन भोगों का त्याग कर देता है। वही सच्चा त्यागी, तपस्वी एवं अध्यात्मयोगी है। स्वेच्छा से स्वतंत्रतापूर्वक प्राप्त भोगों का त्याग ही तप है। किसान गर्मी में तपता है व रात भर पानी में खड़ा रहता है ताकि फसल बढ़िया हो, बगुला एक टाँग पर खड़ा होता है एवं हर कदम संभल कर बढ़ाता है ताकि निश्चल खड़े होकर आने-जाने वाली मछली का शिकार कर ले। लोभी व्यापारी भारी ग्राहकी के मारे दिन भर भूखा रहकर व्यवसाय करता है, परन्तु यह सब तप की श्रेणी में नहीं आते। यह सारे कार्य स्वार्थ आधारित हैं। निर्दोष, कामनारहित केवल निर्जरा के उद्देश्य से किया गया तप ही शुभ एवं प्रशस्त तप है।

जब तप का उद्देश्य मात्र कर्मों की निर्जरा है तो फिर शरीर को यह कष्ट क्यों दिया जाए? कई लोग यह प्रश्न उठाते हैं कि तप का उद्देश्य कर्म-निर्जरा या आत्मा से कर्मों के लेप को हटाना ही है तो इस बिचारे शरीर को बीच में क्यों घसीटा जाता है एवं इसे क्यों पीड़ा झेलने को मजबूर किया जाता है? इसका उत्तर बड़ा सटीक है कि मक्खन में रही छाछ एवं आर्द्रता को समाप्त कर उसे घी के रूप में परिवर्तित करने हेतु मक्खन को सीधा आग में नहीं डाला जाता है। ऐसा करने पर घी तो मिलता ही नहीं है स्वयं मक्खन भी नष्ट हो जाता है। अतएव मक्खन की छाछ एवं आर्द्रता समाप्त करने हेतु उसे बर्तन में डालकर आग पर चढ़ाया जाता है। उद्देश्य मक्खन से घी निकालना ही है, पर माध्यम के रूप में बर्तन को भी तपना पड़ता है। इसी तरह आत्मा के कर्म रूपी कचरे को जलाकर, आत्मा को शुद्ध एवं निर्मल बनाने हेतु शरीर को माध्यम बना उसे तपाने से आत्मा के कर्म जलकर भस्मीभूत हो जाते हैं। शरीर को तप का माध्यम बनाने का यही कारण है कि आत्मा सीधा तप करने में अक्षम है। शरीर को माध्यम बना कर ही बाह्य तप की एवं कुछ प्रकार के आभ्यन्तर तपों की साधना संभव बन पाती है, जैसे वैयावृत्त्य, स्वाध्याय, ध्यान, व्युत्सर्ग आदि।

तप उतना ही करें जिससे समाधि बनी रहे। तप आत्मप्रधान होता है, देह प्रधान नहीं। देह प्रधान तप अतिरूप में देह दंड या हठयोग का रूप ले लेता है अतएव वह आध्यात्मिक पवित्रता एवं उत्कर्ष का हेतु नहीं बन पाता। तभी कहा है-"अहो कष्टं अहो कष्टं पुनस्तत्त्वं न ज्ञायते।" (वैदिक वाक्य) जो तप

मात्र देह दंड हो जैसे पंचाग्नि तप या सर्दी में बर्फीले पानी में आकंठ खड़े रहना वह तप प्राप्ति का साधन न बन पाने से मात्र देह दंड बन कर रह जाता है, क्योंकि आत्मा अमल, विमल या निर्मल नहीं बन पाती। तप का उद्देश्य अन्तर्मुखी साधना है, मात्र देह दंड नहीं। वस्तुतः सारी तप एवं धर्म-साधना का माध्यम शरीर है। ''शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्॥'' शरीर ही समस्त साधना एवं आराधना का माध्यम है, अतएव तप उतना ही करें जिससे समाधि बनी रहे। मरण-समाधि के श्लोक १३४ में आचार्य फरमाते हैं-

सो नाम अणसण तवो, जेण मणो अमंगलं न चिन्तेइ॥
जेण न इन्दियहाणी, जेण य जोगा न हायन्ति॥

अर्थात् तप वही उचित है जिससे मन की समाधि रहे, अमंगल का चिन्तन या आर्त्त-रौद्र ध्यान न आवे तथा जिसमें इन्द्रियों एवं योगों का हनन न हो। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि सामान्य शारीरिक दौर्बल्य आने के नाम पर तप नहीं किया जाए। तप एक समाधि है जिसमें कर्मों की निर्जरा व कषायों का शमन होता है, अतएव जब तक प्रसन्नचित्त रहकर शरीर बर्दाश्त करे, धर्म-ध्यान, सामायिक, प्रतिक्रमण में मन लगा रहे एवं उसमें किसी तरह का बड़ा या घातक व्यवधान या दुष्परिणाम न आए तब तक तप करते रहना चाहिए, उसे बीच में छोड़ना नहीं चाहिये। प्रभु महावीर ५ माह २५ दिन का निर्जल उपवास करके भी स्वयं भिक्षाचर्या हेतु जाते थे। यही नहीं तप के पारणे हेतु उन्होंने अभिग्रह धारण किये थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की एक श्राविका इचरजकँवर लुणावत, जयपुर ने ५ माह १५ दिन यानी १६५ दिन का तप किया था व अभी गत वर्ष बाफना परिवार की बहन ने चेन्नई में आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के वहाँ चातुर्मास रत रहने पर पूरा चातुर्मास काल उपवास में व्यतीत किया था। जिनके दर्शन मैंने स्वयं किये थे। ये दोनों साध्वियाँ नहीं श्राविकायें थीं। कहते हैं ''तवे शूरा अणगारा'' पर यहाँ तो श्राविकाओं ने ऐसा घोर तप किया है। अतएव कहने का सबब यही है कि ''शक्तितस्त्यागतपसी'' जितनी शक्ति हो उतना तप अवश्य करें क्योंकि यही एकमात्र निर्जरा का साधन है।

तप का यह उद्देश्य विस्मृत न हो कि यह एकमात्र निर्जरा का साधन है। अतएव इसे कर्मबंध का साधन न बनाएँ। बहनें अठाई एवं मासखमण करके

जिस तरह ढोल-ढमारों से उसे पचक्खने आती हैं एवं पीहर और ससुराल, पुत्र एवं पुत्रों के ससुराल द्वारा उस अवसर पर जो काज किरियावर करने की कामना रखती है एवं तपस्या के उपलक्ष्य में जो बड़े-बड़े भोज आयोजित किये जाते हैं, यह सारे कार्य कर्मबंध का कारण बनते हैं, निर्जरा के नहीं। निर्जरा का एकमात्र साधन किसी भी कीमत पर कर्म-बंधन एवं कषाय-अभिवृद्धि का कारण नहीं बनाया जाना चाहिये। यदि राग-द्वेष बढ़ते हैं तो तपस्या करने का उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। एक संत ने कितना सटीक कहा है -

राग-द्वेषौ यदि स्यातां, तपसा किम् प्रयोजनम्।
राग-द्वेषौ न च स्यातां, तपसा किम् प्रयोजनम्॥

अर्थात् यदि राग-द्वेष व कषाय नियन्त्रित न किए जायें तो तपस्या का कोई प्रयोजन ही नहीं रह जाता। उसका आधार ही समाप्त हो जाता है। यदि राग-द्वेष नहीं हैं, समाप्त हो गये हैं तो भी तपस्या करने का कोई कारण नहीं रह जाता है। वीतराग को तप नहीं करना पड़ता, क्योंकि उनके कर्म तो कट ही चुके हैं, अतः तप जहाँ राग-द्वेष व कषाय बढ़े तो तप करना व्यर्थ है। राग-द्वेष यदि समाप्त हैं तो कर्मों के बीज जलकर नष्ट हो चुके हैं अतएव फिर तप की आवश्यकता ही नहीं रह जाती, क्योंकि तप तो संचित कर्मों को नष्ट करने का साधन है।

तप का प्रभाव- कोयला सर्वांग काला होता है। छुओ तो काला करता है, पीसो तो हाथ काले करता है, लगाओ तो कहते हैं कालिख लग गई। एक दिन दुःखी कोयला एक ऋषि के पास गया व अपनी व्यथा कथा सुनाकर अपने कल्याण का मार्ग पूछा तो ऋषि ने एक ही शब्द में उत्तर दिया 'तप'। कोयला ऋषि वाक्य को ब्रह्मवाक्य मानकर तपा तो काले से लाल एवं ऊर्जायुक्त हो गया। उससे जो कलुष का क्षरण हुआ तो वह सफेद रंग की राख के रूप में परिवर्तित हुआ, जिसे भभूत मानकर ऋषियों ने अपनी जटा में लगा लिया एवं बहनों ने उस राख को कलुष को साफ करने, झूठे बर्तन माँजने में काम ले लिया। इस तरह तपकर जब कोयले का काला व कलुषमय देह ऋषि जटा में लगाने की भस्म बन गया एवं मैले बर्तन साफ करने का माध्यम बन गया तो हमारा जीवन कोयले जितना काला तो नहीं है कि तप के माध्यम से हमारे कर्मों का कलुष धुल नहीं पाए।

आपने ईंट देखी होगी। वह काली चिकनी मिट्टी की बनती है, पर आग में तपकर वह लाल रंग की बन जाती है। तप वह साधन है जो कच्चे को पक्का बनाता है चाहे वह ईंट हो या घड़ा एवं काले से पीला व लाल बना देता है। मटकिंयों के रंग से आप नावाकिफ नहीं है। यह है तप का महत्त्व। इसीलिये वाल्मीकि-रामायण में कहा है- "तपो हि परमं श्रेयः" अर्थात् तप परम कल्याणकारी है। अतएव हे साधना पथ के पथिको! तप की त्रिवेणी में नहाकर अर्थात् उपवास की यमुना में नहाकर तन को रोगमुक्त कीजिये। ब्रह्मचर्य की गंगा में डुबकी लगाकर मन को विकारमुक्त कीजिये एवं स्वाध्याय की सरस्वती में स्नान कर बुद्धि को अज्ञानमुक्त कीजिये। उपवास शरीर व आत्मा का सामीप्य प्रदान कर उसे रोगमुक्त व अग्नि में तपे स्वर्ण की तरह निर्मल बनाता है। आवे की अग्नि में तपे घड़े की तरह शरीर को कष्ट सहिष्णु व परिपक्व बना देता है। ब्रह्मचर्य रूपी गंगा में स्नानकर विचारशुद्धि, पवित्रता एवं परम शौच प्राप्त होता है। स्वाध्याय रूपी सरस्वती में डुबकी लगाने पर बुद्धि निर्मल व प्रज्ञा प्रखर बनती है। इसीलिए संत-मुनिराजों एवं महासतियों के लिए प्रभु महावीर का निर्देश है- "चउकालं सज्झायं" अर्थात् दिन के आठ प्रहर में से चार प्रहर स्वाध्याय में व्यतीत करें। प्रभु महावीर आगे फरमाते हैं- "न वि अत्थि न वि हवइ सज्झाय समं तवो कम्मं।" अर्थात् स्वाध्याय के समान तप न हुआ है न होगा। यह हेय, ज्ञेय व उपादेय का ज्ञान कराने वाला है। अतः तप ही आत्माभ्युदय का साधन है। तप का मूल धैर्य है एवं समत्व है। इसीलिए कहा है- "तवस्स मूलं धित्ति।" एवं "तदेव हि तपः कार्यं दुर्ध्यानम् यत्र नो भवेत्।" अतः तप करने की योग्यता उन्हें ही हासिल है जिनके आर्त्त-रौद्र ध्यान न हो यानी जो धैर्यवान एवं समत्व के साधक हैं उन्हीं का तप फलदायी होता है एवं ऐसे धैर्यवान तथा समत्व के साधक ही मोक्ष के अधिकारी बनते हैं। यथा- "यस्य धृतिस्तस्य तपो यस्य, तपस्तस्य सुगतिः सुलभा।" अर्थात् जिनके पास धैर्य है, वही तप कर पाते हैं एवं ऐसे तपस्वी ही सुगति एवं मोक्ष के अधिकारी बन पाते हैं।

-पूर्व न्यायाधिपति राजस्थान उच्च न्यायालय

२०/३३, रेणुपथ, मानसरोवर, जयपुर(राज.)

वर्णव्यवस्था - हिन्दू धर्म तथा जैन धर्म में

डॉ. दीपंजय श्रीवास्तव

विश्व के धर्मों में जैन एवं हिन्दू धर्म का विशिष्ट स्थान है। इनकी प्राचीनता का आकलन संभव नहीं है। एक का उद्गम अनादि अपौरुषेय वेद से है और दूसंरा अनादि काल से अस्तित्व में है। वैदिक वाङ्मय में तीर्थंकरों के नामोल्लेख से जैन धर्म की प्राचीनता प्रामाणित होती है। दोनों भारत के सनातन तथा जीवन्त धर्म हैं और दोनों में देश काल की इयत्ता के अतिक्रमण का सामर्थ्य है। निश्चयतः वह दिन दूर नहीं है जब युद्ध की विभीषिका से भयभीत विश्व का प्रत्येक मानव वास्तविक सुख और शांति के लिए इन धर्मों का स्वेच्छापूर्वक वरण करेगा।

'वर्ण व्यवस्था' प्राचीन भारत में स्थापित उन शाश्वत मूल्यों में से एक है, जिसकी स्थापना भौतिक और आध्यात्मिक उपलब्धियों के लिए की गयी थी। प्राचीन भारत में वर्णव्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में चार वर्णों का विभाजन किया गया था। जिसका आधार समाज में व्याप्त सहयोग, सामंजस्य और सहकारिता की भावना थी।

व्युत्पत्ति की दृष्टि से 'वर्ण' शब्द 'वृञ् वरणे' या 'वरी' धातु से बना है जिसका अर्थ है वरण करना अथवा चुनना। अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य जिस व्यवसाय का वरण करता है, वही उसका वर्ण होता है। अतः वर्ण का जाति से कोई अनिवार्य संबंध नहीं होता। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार भागों के पीछे मनोवैज्ञानिक कारण यह है कि ये ज्ञान, सुरक्षा, आजीविका तथा सेवा मनुष्य की इन चार स्वाभाविक इच्छाओं की तुष्टि करते हैं। इस दृष्टि से जो पठन-पाठन का कार्य करते हैं वे ब्राह्मण, जो रक्षा का कार्य करते हैं वे क्षत्रिय, जो व्यवसाय में रुचि लेते हैं वे वैश्य तथा जिनकी सेवा-कार्य में विशेष अभिरुचि है वे शूद्र कहलाते हैं। 'वर्ण' का यही वास्तविक अर्थ है। ऋग्वेद के पुरुषसूक्त में चार वर्णों का वर्णन इस प्रकार आया है- विराट् पुरुष (परमेश्वर) के मुख से ब्राह्मण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्र की उत्पत्ति हुई है।[1] इससे हमें पता चलता है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्णो की उत्पत्ति विराट् पुरुष (परमेश्वर) से हुई है। भगवद् गीता में *श्रीकृष्ण ने बतलाया है कि गुण और कर्म के अनुसार चारों वर्णों की उत्पत्ति*

भगवान से हुई है।[२] महाभारत में कहा गया है कि इन चार वर्णों के स्वभाव और कर्म भिन्न-भिन्न हैं।[३]

भृगु-संहिता के अनुसार ब्रह्मा ने सर्वप्रथम केवल ब्राह्मणों की ही सृष्टि की थी। पर आगे चलकर मानव जाति उनके रंगों के अनुसार चार वर्णों में विकसित हो गई। ब्राह्मणों का रंग सफेद, क्षत्रियों का लाल, वैश्यों का पीला तथा शूद्रों का रंग काला माना गया, किन्तु आगे चलकर स्वयं भृगुमुनि को स्वीकार करना पड़ा कि रंग के आधार पर वर्णों का विभाजन नहीं किया जा सकता। वर्णों के विभाजन का वास्तविक आधार तो कर्म है। जो सत्त्वगुण प्रधान थे वे ब्राह्मण कहलाये, जो रजोगुण प्रधान थे वे क्षत्रिय हुए, जो तमोगुण मिश्रित रजःप्रधान व्यक्ति थे वे वैश्य कहलाये तथा जो तमोगुण प्रधान थे उन्हें शूद्र के नाम से अभिहित किया गया।

यद्यपि हिन्दू धर्म में वर्ण-व्यवस्था को माना गया है फिर भी इसे कट्टरता के साथ नहीं माना गया है। विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति तथा समूह अपनी सामाजिक जाति या वर्ण को बदल सकते हैं। विश्वामित्र, पुरामिध और अजामिध ब्राह्मण जाति के अन्तर्गत माने गये और उन्होंने वैदिक मंत्रों की भी रचना की। राजा जनक जन्म से क्षत्रिय होते हुए भी अपनी परिपक्व विद्वत्ता तथा पवित्र चरित्र के कारण ब्राह्मण माने गये। शूद्र होते हुए भी व्यक्ति अच्छा कार्य करने पर ब्राह्मण हो सकता है।[४]

१. ब्राह्मण

ब्राह्मण का मुख्य धर्म वेदाध्ययन करना और कराना, यज्ञ करना और कराना, दान लेना और देना है।[५] निरुक्त तथा मनुस्मृति में कहा गया है कि विद्या ब्राह्मणों के पास आयी और सम्पत्ति के समान अपनी रक्षा करने के लिये ब्राह्मणों से प्रार्थना की।[६] महाभारत के अनुसार सत्य, दान, क्षमा, शील, मृदुता, तप, दया आदि ब्राह्मण के लक्षण माने गये हैं।[७] आर्थिक क्षेत्र में विशेषाधिकार के अन्तर्गत ब्राह्मण को दान लेने का अधिकार था। यज्ञ की बची सामग्री ब्राह्मण की ही होती थी। उसके धन को राजा भी ग्रहण नहीं कर सकता था। वह राजकर से मुक्त था।[८] ब्राह्मण को प्रत्येक वर्ण में विवाह करने का अधिकार था। चार पत्नियाँ रखना उसकी स्थिति, गरिमा और प्रतिष्ठा को व्यक्त करता है।[९]

२. क्षत्रिय

क्षत्रिय के प्रमुख कार्य प्रजा की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ कराना आदि में संलग्न रहना था। ब्राह्मण के बाद क्षत्रिय का स्थान माना गया है। ऋग्वेद में क्षत्रिय को 'राजन्य' कहा गया है। इन्हें राज्य की भुजाएँ भी कहा जाता था। वे अध्यापन तथा अध्ययन भी कर सकते थे, परन्तु उनका प्रमुख कार्य चतुर्वर्णों की रक्षा करना था। आचार्य गौतम ने इस वर्ण को तीन वेदों पर अधीन बताया है।[१०] कौटिल्य के अर्थशास्त्र में क्षत्रिय के प्रमुख कर्मों में अध्ययन करना, यज्ञ करना, शस्त्रधारण करना और भूरक्षण को परिगणित किया गया है।[११] क्षत्रियों का कार्य न्याय की स्थापना करना तथा दण्ड देना भी था।

३. वैश्य

वैश्य की गणना द्विजाति में की गई है। ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इन तीन वर्णों को 'द्विज' कहा गया है। द्विज के लिये यज्ञ करना, वेदाध्ययन करना एवं दान देना कर्त्तव्य माना गया है।[१२] वैश्यों का प्रमुख कार्य अर्थव्यवस्था से संबंधित था तथा अन्य वर्णों का भरण-पोषण करना था। वे कृषि कर्म, पशुपालन, व्यापार उद्योग-धंधे तथा दान आदि में निपुण थे।[१३] अपनी उत्पादित आय का कुछ भाग उन्हें कर के रूप में देना पड़ता था। आपातकाल में वह अन्य वर्णों के व्यवसाय को अपना सकता था। गाय, ब्राह्मण तथा अपने वर्ण की रक्षा के लिये वह शस्त्र भी धारण कर सकता था।[१४]

४. शूद्र

शूद्र वर्ण का एक ही काम था कि वह द्विज वर्णो की सेवा करे।[१५] महाभारत में भी कहा गया है कि शूद्र की उत्पत्ति भगवान् ने सभी की सेवा के लिए की है।[१६] परन्तु याज्ञवल्क्य ने बतलाया है कि शूद्र केवल सेवा पर ही निर्भर नहीं थे। अपनी जीविका के लिये शूद्र बढ़ई, चित्रकार, पच्चीकार, रंगसाज, नृत्य, गायन, वादन आदि का कार्य भी करते थे।[१७]

जैनधर्म में वर्ण-व्यवस्था संबंधी विचार

जैनधर्म जन्मना वर्ण-व्यवस्था को नहीं मानता है। पद्मचरित में कहा गया है- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र रूप में जाति के जो चार भेद कहे गये हैं, वे अहेतुक हैं। यदि कहा जाय कि वेदवाक्य और अग्नि के संस्कार से दूसरा

जन्म होता है तो यह भी ठीक नहीं है। इसके लिए युक्ति यह है कि जहाँ जहाँ जाति भेद देखा जाता है, वहाँ वहाँ शरीर की विशेषता अवश्य पाई जाती है।[१८] जिस प्रकार कि मनुष्य, हाथी, गधा, घोड़ा आदि में पायी जाती है।[१९] इससे सिद्ध है कि ब्राह्मणादि में जाति वैचित्र्य नहीं है। कोई जाति निन्दनीय नहीं है, गुण ही कल्याण करने वाले हैं। यही कारण है कि व्रत धारण करने वाले चाण्डाल को भी गणधरादि देव ब्राह्मण कहते हैं।[२०] विद्या और विनय से सम्पन्न ब्राह्मण, गाय, हाथी, कुत्ता और चाण्डाल के विषय में पण्डितजन समदर्शी होते हैं।[२१] पद्मचरित में बतलाया है कि जो सब प्रकार के आरम्भ में प्रवृत्त हैं, निरन्तर कुशील में लीन रहते हैं तथा क्रियाशील हैं वे केवल ब्राह्मण नामधारी ही हैं, वास्तविक ब्राह्मणत्व उनमें कुछ भी नहीं है।[२२]

जैनधर्म एक मनुष्य जाति को ही मानता है। जैन धर्म के अनुसार जातियों के भेद की कल्पना केवल आचार की विशेषता से ही की गयी है। ब्राह्मणों की प्रशंसनीय जाति कहीं भी नियत नहीं है।

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों ही वर्णों की जाति वस्तुतः एक ही मनुष्य जाति है। उसके भीतर यदि विभाग किया जाता है तो वह विविध प्रकार के आचार से ही किया जाता है। यदि उक्त चारों वर्ण वालों के मध्य स्वभावतः जाति भेद होता है तो फिर ब्राह्मणी से क्षत्रिय की उत्पत्ति किसी प्रकार से भी नहीं होनी चाहिए थी। कारण कि शील जाति में क्रोध की उत्पत्ति कभी नहीं देखी गई है।

जैन धर्म के अनुसार शूद्र भी धर्मपालन का अधिकारी है।

शूद्रोऽप्युपस्कराचारवपुःशुद्धोस्तु तादृशः।
जात्या हीनोऽपि कालादिलब्धौ ह्यात्माऽस्ति धर्मभाक्॥

उपकरण, आचार और शरीर की पवित्रता से युक्त शूद्र भी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान जिन धर्म सुनने का अधिकारी है। जाति से हीन आत्मा भी काल आदि लब्धि के आने पर धर्म का अधिकारी होता है।

जबकि इसके विपरीत मनुस्मृति में कहा गया है-

न शूद्राय मतिं दद्यान्नोच्छिष्टं न हविष्कृतम्।
न चास्योपदिशेद्धर्मं न चास्य व्रतमादिशेत्॥[२३]

अर्थात् शूद्र के लिए बुद्धि नहीं देनी चाहिए, न जूठन और न हवि का

शेष भाग ही देना चाहिए। इसको न धर्म का उपदेश देना चाहिए और न व्रत का उपदेश देना चाहिए। पुनः "जो इस (शूद्र) को धर्म का कथन करता है अथवा व्रत का उपदेश देता है वह उसी के साथ असंवृत नामक नरक में डूब जाता है।"[२४]

जैन धर्म के अनुसार जिस जाति में संयम, शील, तप, दान, दया, इन्द्रिय व कषायों का दमन आदि परमार्थभूत गुण अवस्थित रहते हैं, वही सत्पुरुषों की श्रेष्ठ जाति समझी जाती है।

शीलवान् मनुष्य नीच जाति में उत्पन्न होकर भी स्वर्ग को प्राप्त हुये हैं तथा उत्तम कुल में उत्पन्न होकर भी कितने ही मनुष्य शील व संयम को नष्ट करने के कारण नरक को प्राप्त हुए हैं। सज्जनों को केवल शील, संयम आदि गुणों से रहित जाति का अभिमान नहीं करना चाहिए। क्योंकि वह कोरा अभिमान नीच गति में प्रवेश कराने वाला है, किन्तु इसके विपरीत उन्हें शील का अतिशय आदर करना चाहिये, क्योंकि वह उच्च पद को प्राप्त कराने वाला है।[२५]

मानव के उत्तम गुणों के द्वारा उत्तम जाति प्राप्त होती है और उन गुणों के नष्ट होने पर वह विनाश को प्राप्त होती है, अतः विद्वानों को गुणों के विषय में उत्कृष्ट आदर करना चाहिये।

संदर्भ

१. ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्............शूद्रोऽजायत। -ऋग्वेद १०/९०/१२

२. चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं.............-गीता ४/१३

३.ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्यानां शूद्रानां........स्वभावप्रभवैःगुणैः।-महाभारत भीष्मपर्व ४१/४२

४. रीलिजन एण्ड सोसायटी -डॉ. एस. राधाकृष्णन्, पृष्ठ १३

५. कौटिल्य अर्थशास्त्र ११३, याज्ञवलक्य ५/१८८

६. विद्या ब्राह्मणमित्याहुः............स्यां वीर्यवत्तमा। -मनुस्मृति २/११४

७. सत्यं दानं क्षमाशीलं आनृशंस्यं......ब्राह्मण इति स्मृतिः। -महाभारत, वनपर्व १८०/२१

८. कौटिल्य अर्थशास्त्र २/१, मनुस्मृति ७/१३३

९. अथर्ववेद ५/१७/८.१

१०.गौतम धर्मसूत्र १३/३, ११/९

११.कौटिल्य अर्थशास्त्र ३/६

१२.इज्याध्ययनदानानि वैश्यस्य क्षत्रियस्य च। -याज्ञवल्क्य स्मृति १/११८

१३.गौतम धर्मसूत्र - १०/१-३
१४.बोधायन धर्मसूत्र २/२२०
१५.एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुः.........वर्णानां शुषामनसूयया। -मनुस्मृति १/९१
१६.प्रजापतिर्हि वर्णानां दासं शूद्रमकल्पयत्। -महाभारत
१७.शूद्रस्य द्विजशुश्रूषा.........जातिहितमाचरन्। -याज्ञवल्क्य-१/१२०
१८.पद्मचरित- ११/१९४-९५
१९.पद्मचरित- ११/१९६
२०.पद्मचरित- ११/२०३
२१.पद्मचरित- ११/२०४
२२.वही- १०९/८२
२३.मनुस्मृति - ४/८०
२४.मनुस्मृति- ४/८१
२५.अमितगति : धर्म परीक्षा- १७/२४-३३

-प्लाट नं. ९३, साकेत नगर कॉलोनी, वाराणसी(उ.प्र.)

प्रार्थना

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

प्रभु हमारे जीवन का उत्थान कीजिये।
सुखमय हो संसार, यह आशीष दीजिये।।टेर।।

मंगल करना, मंगलदाता, करते हैं फरियाद,
तम में डूबी इस दुनियाँ को आलोक दीजिये।। प्रभु......

मानवता की पगडंडी पर, बढ़ते रहें सदा।
मानवता हो इस जीवन में, वरदान दीजिये।। प्रभु......

गुरु चरणों में सदा करें हम, जीवन का निर्माण।
जीवन में कुछ कर जाएँ, नव विश्वास दीजिये।। प्रभु......

प्रभु चरणों में सदा सदा है, वंदन शत शत बार।
भक्ति में रम जाए यह मन, अनुराग दीजिये।। प्रभु......

-स्टेशन रोड़, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

सर्वाङ्गीण विकास का साधन : सामायिक व्रत(६)

श्री प्रेमचन्द कोठारी

भाव से- सामान्यतया सामायिक में दो करण तीन योग से सावद्य व्यापार (१८ पापों) का त्याग किया जाता है। मानसिक, वाचिक एवं कायिक योगों की एकरूपता के द्वारा पाप न करने व न कराने की प्रवृत्ति सामायिक में रहना आवश्यक है। मन अति चंचल है, क्षणभर में न जाने क्या-क्या और न जाने कहाँ-कहाँ की निरर्थक सोच उसमें चलती ही रहती है। मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मन की गति प्रकाश व विद्युत से भी तीव्र है, प्रकाश की गति एक सैकेण्ड में २,९८,००० कि.मी. के लगभग है, विद्युत की गति एक सेकण्ड में ४,८०,००० कि.मी. के लगभग है जबकि मन की गति एक सेकण्ड में लगभग ३७,७५,२०० कि.मी. के लगभग है। यह विज्ञान का मानना है। जैन दर्शन तो मानता है कि मन एक क्षण में सातवीं नरक में और कुछ क्षण में सर्वार्थसिद्ध में पहुँच सकता है तथा सर्वज्ञता भी प्राप्त कराने में सक्षम है। कहा भी है-

मन सब पर असवार है, मन का मता अनेक।
जो मन पर असवार है, वह लाखों में एक।।

मन एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसका प्रभाव बोली, व्यवहार, चेहरे, शरीर, वस्त्र, स्थान, व्यक्ति आदि पर पड़ता है। आज मनोवैज्ञानिक चिकित्सकों की मान्यता है कि लगभग ६० प्रतिशत बीमारियों का कारण अस्वस्थ मानसिकता से संबंध रखता है। आज तनाव, डिप्रेशन, ब्रेन-हेमरेज, हृदय रोग आदि में भी मानसिकता का बहुत बड़ा कारण है। मन को नियन्त्रण में करने का शुभ ध्यान अचूक उपाय है। विषय को विस्तार से बचाने के लिए अभी तो इतना ही संकेत करना है कि सामायिक के लिए स्थानक में प्रवेश करते समय शब्दों से ''निस्सहि निस्सहि'' तीन बार बोलने के साथ ही मन को पक्का बनाएँ कि अब मेरा सांसारिक, सामाजिक आदि कार्यों से संबंध-विच्छेद हो गया है। स्थानक में बिना इधर-उधर की बातों के शान्ति के साथ प्रवेश हो, चरणपादुका भी अव्यवस्थित नहीं खोलें। कपड़े उतारते समय मानसिकता बनाएँ कि अन्दर आत्मा के राग-द्वेष, अहंकार, कषाय आदि के चीर भी उतार दिये हैं (जैसे शरीर पर सामायिक योग्य वेशभूषा धारण की जाती है वैसे ही आत्मा पर भी अब मैं वीतरागता, नम्रता, शान्ति, समता आदि का वेश-धारण कर रहा हूँ) बिना

चंचलता एवं जल्दबाजी किए मुँहपत्ति, पूँजनी, आसन, पुस्तकों आदि का प्रतिलेखन करें (जो अधिक बार सामायिक करने वाले हैं वे भी दिन में एक बार तो अवश्य प्रतिलेखना करें) बाद में पूज्य संत-सती विराजते हों तो उनके सामने, अन्यथा उत्तर या पूर्व में अथवा दोनों के बीच ईशान कोण में मुँह करके सामायिक लेने की विधि सम्पन्न करें, लेकिन सामायिक के पाठों का भी उनके अभिप्राय में पूर्ण उपयोग लगाते हुए बहुमान पूर्वक मन, वाणी एवं काया की एकरूपता से उच्चारण करें। मन कहीं जा रहा है, हाथ, पाँव व आँखे कहीं जा रही हैं और तोते की तरह पाठ बोले जा रहे हैं, इस प्रवृत्ति से हटना है। उपयोग लगाते हुए पाठों के बोलने से मन में तन्मयता, पाठों के प्रति आदरभाव आदि की वृद्धि होती है। प्रारम्भ में किसी को अर्थ नहीं आते हों तो आँखे बन्द कर शब्द उच्चारण करते समय यह सोचे कि बोर्ड पर लिखे हुए पढ़ रहा हूँ अथवा मैं स्वयं लिख रहा हूँ ताकि मन इधर-उधर नहीं जाए। (लेख को विस्तार से बचाने के लिए सामायिक विधि, अतिचार आदि का विवेचन नहीं दिया जा रहा है। विधि में परम्परागत भेद भी हैं, फिर भी अतिचार के विवेचन व उनसे बचने में सब परम्पराएँ एक मत हैं। लेख में किसी भी परम्परा के खंडन से ऊपर उठ कर सिर्फ यह आग्रह अवश्य है कि सामायिक में सदोष तथा सावद्य प्रवृत्ति से, पूर्ण रूप से निर्भय व अनाग्रह होकर बचें।)

सामायिक में मन को पूर्ण नियन्त्रण में रखने के लिए, सामायिक को पूर्ण सार्थक बनाने के लिए तथा सामायिक से जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए सामायिक को पाँच चरणों में विभक्त किया जा सकता है। पहले चरण में हम दैनिक कार्यक्रम जैसे माला फेरना, आनुपूर्वी पढ़ना या अन्य कोई कार्य हो उसे पूरा कर लें, अगर दैनिक कार्यक्रम अधिक लम्बे हों तो उनका संक्षेपीकरण किया जा सकता है। इसमें कोई विराधना की संभावना नहीं है। बहुत से पूरी सामायिक को दैनिक कार्यक्रम में पूरा कर देते हैं, लेकिन इससे उनका अन्य विकास नहीं हो पाता है। दूसरे चरण में पुराने सीखे हुए ज्ञान की पुनरावृत्ति की जाए। हमें अपने सीखे हुए ज्ञान की सूची बना लेना चाहिए व उसकी निरन्तर पुनरावृत्ति का लक्ष्य रखना चाहिए, ताकि ज्ञान का विसर्जन न हो। तीसरे चरण में नया ज्ञान सीखें। (क्रम इस प्रकार है- सामायिक के पाठ, सामायिक विधि, सामायिक के ३२ दोष, सामायिक के पाठों के अर्थ, प्रतिक्रमण के पाठ, विधि, अर्थ आदि ६३ शलाकापुरुषों के नाम, २५ बोल, समकित के ६७ बोल, कर्म-

प्रकृति, गति-आगति, लघुदण्डक आदि थोकड़े एवं स्वाध्याय, भजन आदि भी जोड़े जाएँ।) चौथे चरण में स्वाध्याय करें, अगर मूल पढ़ने में दिक्कत आती हो तो अर्थ ही पढ़ें, लेकिन पूर्ण श्रद्धा व तन्मयता से वाचन हो, एक बार में समझ नहीं आए तो उसी पृष्ठ को २-३ बार या अनेक बार भी पढ़ा जाए, लेकिन उसके समझ में आने पर ही आगे बढ़ें। स्वाध्याय में अगर मन अधिक चंचल हो तो धर्म कथानुयोग जैसे उपासकदशांग, ज्ञाताधर्मकथा आदि का स्वाध्याय किया जाए, अन्यथा दशवैकालिक, नन्दीसूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र आदि पढ़े जाएँ या जैसा पूज्य गुरु भगवन्त मार्गदर्शन फरमावें।

पाँचवें चरण में आज जो स्वाध्याय किया तथा बोल सीखे उनकी अनुप्रेक्षा (चिन्तन), पुनरावृत्ति तथा अपने जीवन में कल क्या-क्या विकृतियाँ आई, क्या दोषपूर्ण प्रवृत्ति की, उस पर दृष्टिपात तथा आज पूर्ण निर्दोष जीवन जीने का संकल्प किया जाए। यह भी सोचा जाए कि आज किस-किस व्यक्ति से सम्पर्क की संभावना है, कैसी-कैसी परिस्थितियों की संभावना है? उस समय मुझे कैसे पूर्ण सजग रहकर अकर्तव्य की दुर्गन्ध से बचना है। इस तरह नित्य सामायिक करने से मन अवश्य नियंत्रण में हो सकता है, दिन भर के कार्य में तथा जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ सकता है। सामायिक की सुगन्ध से व्यक्ति स्वयं तो सुवासित होगा ही साथ वालों पर भी सुगन्ध की महक आएगी। जिनशासन की प्रभावना बढ़ेगी, दूसरे भी सामायिक के लिये अपने आप प्रेरित होने लगेंगे। इस प्रकार क्रम विभाग करने से सामायिक की निर्दोषता बनी रहेगी, पुराना ज्ञान सुरक्षित रहेगा, नित नया ज्ञान बढ़ता रहेगा और स्वाध्याय, अनुप्रेक्षा, आत्म-निरीक्षण आदि व्यवस्थित चलते रहेंगे। मन शान्त व निर्मल रहने पर वाणी भी सुसंस्कारित रहेगी, कायिक प्रवृत्तियों में भी सुधार आएगा अर्थात् एक सामायिक दिन भर के क्रिया-कलापों को सुसंस्कारित कर देगी। इस समय यह बताना प्रासंगिक होगा कि अगर कोई रूढ़ि रूप में सामायिक में इधर-उधर की बातें करते हैं, निन्दा-विकथा करते हैं, सामायिक में अनेक प्रकार के दोष लगाते हैं तो उनकी देखा-देखी हमें गलती नहीं करना है, हमें तो आनन्द जी, कामदेव जी, पूनिया श्रावक जैसी पूर्ण निर्दोष सामायिक करना है।

कई बहिनें मासिक धर्म की अवधि में सामायिक नहीं करती हैं, यह परम्परा भी अनुचित है, मासिक धर्म की अवस्था में भी सामायिक, प्रतिक्रमण, माला, भजन आदि में कोई बाधा नहीं है। हाँ, आगमों के पाठ का स्वाध्याय

नहीं करना चाहिए। सामायिक का काल पूरा होने पर पूर्ण श्रद्धा व एकाग्रतापूर्वक सामायिक पारने की विधि व पाठों के उच्चारण की प्रक्रिया पूरी करनी चाहिए। सामायिक पारने के बाद मन में ऐसी मानसिकता बनावें कि अब तक तो मैं शान्ति सागर में था, अब सांसारिक झंझटों में जाना पड़ रहा है अर्थात् यह मानस धीरे-धीरे बनने लग जाए कि धार्मिक क्रिया करनी है, सांसारिक काम करने पड़ रहे हैं। मैं भगवान का उपासक प्रतिनिधि हूँ, सांसारिक कार्य करते हुए मेरे प्रतिनिधित्व की गरिमा बनाई रखने की पूर्ण सजगता बनी रहे अर्थात् सांसारिक किसी भी प्रवृत्ति में अकर्त्तव्य की सड़ांध (बदबू) नहीं आनी चाहिए।

पाठकों से निवेदन है कि जो सामायिक नहीं करते हों, वे सब कामों को गौण कर सामायिक को प्रधानता देकर नित्य शुद्ध सविधि सामायिक करना आरंभ करें। जो सामायिक करते हैं वे किसी प्रकार का दोष नहीं लगने दें, क्योंकि सामायिक करने वालों की सदोष प्रवृत्ति व व्यावहारिक जीवन में अप्रामाणिकता से सामायिक के प्रति लोगों की निष्ठा बिगड़ती है। जो नित्य सामायिक करते हैं वे सामायिक की संख्या बढ़ाएँ (नित्य एक सामायिक करने से एक वर्ष में १२ दिन-रात साधु जैसा जीवन निर्वाह हो जाता है अर्थात् संसार के काम करते हुए हमसे सहज में अपनी आत्मा का काम भी होता रहता है।) सामायिक करने वाले यह भी ध्यान रखें कि मैं भगवान का उपासक हूँ, प्रतिनिधि हूँ, अतः मेरी प्रत्येक प्रवृत्ति में, श्वास में प्रामाणिकता, समता, विनम्रता, सरलता, सजगता, भगवान के प्रति समर्पणता, कर्तव्यपरायणता, व्यवहार-कुशलता आदि लक्षित होना चाहिए। ऐसी प्रवृत्तियों से मेरा भी इहलोक-परलोक सुधरेगा, जिनशासन की प्रभावना होगी तथा अन्यों को भी सामायिक के लिए प्रेरणा प्राप्त होगी। हमको अपने परिवार, संघ आदि को भी सामायिक-स्वाध्याय से जोड़ने का पुरुषार्थ करना है। हर वर्ष कम से कम ५ नये भाई-बहिनों को सामायिक-स्वाध्याय की निरन्तरता से जोड़ने का पुरुषार्थ करने का मानस बनाना है।

अंत में पाठकों से निवेदन है कि लेख में कोई अनागमिक, अप्रामाणिक लिखने में आ गया हो तो मेरी अल्पज्ञता, असावधानी के लिये मुझे क्षमा करें तथा प्रामाणिक लिखने में आया हो तो वह मात्र गुरु भगवन्तों की कृपा का प्रसाद ही है, अपना कुछ भी नहीं है।

-चौगान गेट, बून्दी

मूढ़ता से दुर्गति

आचार्य श्री विजयरत्नसुन्दरसूरि जी

एक आदमी ने दूसरे से कहा,

"आपकी आँख बहुत ही लाल हो गई है।"

"जी हाँ, मुझे अत्यन्त वेदना हो रही है।"

"डाक्टर को दिखाया?"

"जी नहीं।"

"क्यों?"

"क्योंकि इसका कारण मैं जानता हूँ।"

"क्या कारण है?"

"बात यह है, परसों रविवार था। एक ही दिन में मैंने अलग-अलग थियेटर में लगी फिल्म के चार शो देख लिये। लगता है यह उसका ही परिणाम है। आँख भी एक दिन में चार-चार फिल्म देखकर आखिर थकेगी नहीं तो और क्या होगा?"

मूर्ख को समझ दी जा सकती है, पागल को समझदार बनाया जा सकता है, मंदबुद्धि को बुद्धिमान बनाया जा सकता है, किन्तु जो मूढ़ ही है उसे न समझदार बनाया जा सकता है न ही बुद्धिमान। उसे न विवेकी बनाया जा सकता है न ही विनयी।

"तम्बाकू सेवन अर्थात् कैन्सर को आमंत्रण।" ऐसा कई बार सुनने पर भी, अनेक पत्रिकाओं में तम्बाकू खाने वाले को कैन्सर हुआ है, यह पढ़ने पर भी जो आदमी अपने मुँह में तम्बाकू डालता ही रहता है, उसे आप मूढ नहीं कहेंगे तो और क्या कहेंगे?

यह बात केवल तम्बाकू खाने वालों पर ही लागू नहीं होती। पाँचों इन्द्रियों के विषयों के पीछे जो अंधे बन चुके हैं, विषयभोग के प्रमाण का जिन्हें कोई अंदाजा ही नहीं है, विषय-सेवन में ही जो जीवन की सार्थकता मान बैठे हैं वे व्यक्ति मूढ ही हैं। ऐसे मूढ की दशा क्या होती है? यही कि शरीर रोगग्रस्त हो जाता है, मौत दर्दनाक होती है और परलोक में दुर्गति।

-'कमाल' से साभार

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(काय स्थिति-५)

श्री धर्मचन्द जैन

प्र.२०१ अन्तर्मुहूर्त की कायस्थिति किन जीवों की होती हैं?

उत्तर अन्तर्मुहूर्त की काय स्थिति मुख्य रूप से मनुष्य और तिर्यंचों में होती है। उनमें भी जो अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं, उनकी तो नियमा अन्तर्मुहूर्त ही होती है। पर्याप्त होकर काल करने वाले अनेक मनुष्य-तिर्यंचों की भी जघन्य कायस्थिति अन्तर्मुहूर्त की हो सकती है। पाँच स्थावर के सूक्ष्म जीवों के मात्र पर्याप्तकों की जघन्य उत्कृष्ट कायस्थिति भी अन्तर्मुहूर्त की ही होती है।

चारों गतियों में करण अपर्याप्तक जीवों की जघन्य-उत्कृष्ट कायस्थिति भी अन्तर्मुहूर्त की ही होती है। कोई भी जीव जब तक स्व-योग्य पर्याप्ति पूर्ण न कर ले, तब तक करण अपर्याप्तक कहलाता है। दूसरी अपेक्षा से जब तक कोई जीव इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण न कर ले, तब तक भी उसे करण अपर्याप्तक कहा जाता है।

प्र.२०२ अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं?

उत्तर जो काल मुहूर्त अर्थात् ४८ मिनिट से कम हो, किन्तु एक समय से अधिक हो उसे अन्तर्मुहूर्त कहते हैं।

प्र.२०३ अन्तर्मुहूर्त के कितने भेद होते हैं ?

उत्तर यद्यपि अन्तर्मुहूर्त के समयों के आधार पर असंख्यात भेद तक भी हो सकते हैं, तथापि स्थूल दृष्टि से अन्तर्मुहूर्त के तीन भेद किये जा सकते हैं- १. जघन्य २. मध्यम और ३. उत्कृष्ट।

प्र.२०४ जघन्य अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं?

उत्तर सबसे छोटे अन्तर्मुहूर्त को जघन्य अन्तर्मुहूर्त कहते हैं। जघन्य अन्तर्मुहूर्त कितने समय का मानना चाहिये, इस बारे में दो मत मिलते हैं- प्रथम मतानुसार जघन्य अन्तर्मुहूर्त का काल दो समय मानना

चाहिये। कारण कि उत्तराध्ययन सूत्र के ३३वें कर्म-प्रकृति अध्ययन में वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त बतलायी है। अन्तर्मुहूर्त की यह स्थिति साता वेदनीय की दो समय की स्थिति की अपेक्षा ही घटित होती है, जो कि ११, १२, १३वें गुणस्थानों में बंधती है। नीचे के गुणस्थानों में तो साता वेदनीय की बारह मुहूर्त से कम स्थिति बंधती ही नहीं हैं।

द्वितीय मतानुसार ९ समय का जघन्य अन्तर्मुहूर्त होता है। इसका उल्लेख कर्मग्रन्थ भाग ४-५, पंचसंग्रह, लोकप्रकाश, विशेषावश्यक भाष्य, अभिधान राजेन्द्र कोष आदि व्याख्या ग्रन्थों में मिलता है।

९ समय मानने का तर्क इस प्रकार भी दिया जाता है कि जहाँ-जहाँ ८ समय तक का काल लगता है, वहाँ- वहाँ प्रायः समयों का उल्लेख किया है,अन्तर्मुहूर्त का नहीं। जैसे अन्तराल गति में अनाहारक का काल एक, दो, तीन समय, अन्तराल गति में लगने वाला काल- एक, दो, तीन, चार समय, केवली समुद्घात में अनाहारक का काल- तीन समय, केवली समुद्घात में लगने वाला काल-आठ समय आदि। अतः द्वितीय मत के अनुसार ९ समय को जघन्य अन्तर्मुहूर्त माना है।

उक्त दोनों मतों के अभिप्राय को जानकर भी प्रथम मत को अधिक प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

प्र.२०५ मध्यम अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं?

उत्तर ३ समय से लेकर ४८ मिनिट में २ समय कम तक के काल को मध्यम अन्तर्मुहूर्त कहते हैं। इस अन्तर्मुहूर्त के समयों की भिन्नता को लेकर संख्यात-असंख्यात भेद भी हो सकते हैं।

प्र.२०६ उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं?

उत्तर सबसे बड़े अन्तर्मुहूर्त को उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कहते हैं अर्थात् ४८ मिनिट में १ समय कम का काल उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कहलाता है। जघन्य अन्तर्मुहूर्त तथा उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त का एक-एक ही भेद होता है।

प्र.२०७ एक अन्तर्मुहूर्त में किन-किन जीवों के कितने भव हो सकते हैं?

उत्तर जो जीव नियमा अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं, ऐसे तिर्यंच व मनुष्य गति के जीवों के भव को क्षुल्लक भव कर्मग्रन्थ भाग-५ में बतलाया गया है। २५६ आवलिका का क्षुल्लक भव अर्थात् सबसे छोटा भव होता है। एक मुहूर्त में १, ६७, ७७, २१६ आवलिकाएँ होती हैं। इस अपेक्षा से उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त काल में ६५५३६ क्षुल्लक भव अधिकतम हो सकते हैं। 'जैन तत्त्व प्रकाश' में एक मुहूर्त में जीवों के होने वाले भवों की गिनती इस प्रकार बतलायी है-

पृथ्वी, जल, अग्नि और वायुकाय के जीव -१२८२४

प्रत्येक वनस्पतिकाय के जीव -३२०००

द्वीन्द्रिय के जीव-८०, त्रीन्द्रिय के ६०, चतुरिन्द्रिय के ४०, असंज्ञी पंचेन्द्रिय के जीव-२४ तथा संज्ञी पंचेन्द्रिय के जीव-१ बार जन्म-मरण करते हैं।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

ऊर्जा का अपव्यय रोकें

श्री अभयकुमार जैन

हमारे देश में ऊर्जा की आवश्यकता और आपूर्ति में २० : १०० का ही अंतर है। इसके बावजूद देश में उपलब्ध ऊर्जा का २५ प्रतिशत अपव्यय हो रहा है। यही कारण है कि महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने देश से ऊर्जा की बचत करने के लिए कहा है। ऊर्जा के अपव्यय को रोकने में अपना योगदान देना होगा।

बढ़ती जनसंख्या तथा घटते संसाधन के द्वारा कई समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं। पानी की समस्या, बिजली की समस्या मुख्य हैं। इनका कुछ समाधान व निराकरण प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर कर सकता है। आवश्यकता मामूली ध्यान देने की है। हम चाहे जहाँ हों, घर, कार्यालय संस्थान, खेत हर जगह पर बिजली की बचत पर ध्यान दिया जा सकता है। बिजली की बचत आर्थिक, धार्मिक एवं राष्ट्रीय सभी दृष्टियों से उपयोगी है।

-'तृप्ति' बंदा रोड़, भवानीमण्डी (राज.)

धारावाहिक (क्रमशः२९)

जम्बूकुमार

जैनदिवाकर श्री चौथमल जी म.सा.

पूर्ववृत्तः-जम्बूकुमार ने समुद्रश्री को कौए की आसक्ति का परिणाम समझाकर संसार-सागर को पार करने का आदेश दिया। एकान्त दुःखों के परमधाम इस संसार के सत्य स्वरूप को जानकर समुद्रश्री ने आत्मकल्याण के पथ की पथिक बनने की इच्छा प्रकट की। यह सब सुनकर जम्बूकुमार की दूसरी पत्नी पद्मश्री कहती है-

---

"जम्बूकुमार के पास न जाने कैसा अनोखा जादू है। जो उनसे बात करता है, वही उनके रंग में रंग जाता है। पर मैं अपने ऊपर वह जादू कदापि न चलने दूँगी। यही नहीं वरन् मैं अपना जादू उन पर चलाकर रहूँगी। न चला सकी तो मेरा नाम पद्मश्री नहीं। बड़े-बड़े देवों के मन को चंचल कर देने वाली नारी शक्ति की आज परीक्षा होगी। देखूँगी प्राणनाथ में कितनी दृढ़ता है? मेरा नाम पद्मश्री (कमल की शोभा के समान शोभा वाली) है। पद्मश्री की मनोहरता किसे नहीं डिगा सकती। किसके नेत्र उसे देखकर अनुराग से रंजित नहीं हो जाते? पद्मश्री की ओर किसका हृदय आकर्षित नहीं होता। मैं अपने स्वर्णिम सौन्दर्य से और प्रबल युक्तियों से प्राणनाथ को अवश्य आकृष्ट करूँगी।"

इस प्रकार विचार करके पद्मश्री जम्बूकुमार के पास पहुँची और कहने लगी-

"नाथ! इस नवयौवन अवस्था में आपको यह क्या धुन समाई है ? मानव जीवन में यह अपूर्व यौवन एक मूल्यवान रत्न के समान है। इसका अधिक से अधिक सदुपयोग करना उचित है। क्या यह यौवन रत्न जंगल में जाकर लुटा देने के लिए मिला है? जीवन का यह सर्वश्रेष्ठ समय है, जीवन रूपी उद्यान का यह सौरभपूर्ण सुन्दरतम सुमन है। क्या यह सुमन अरण्य में व्यर्थ मुरझा जाने योग्य है।"

जम्बूकुमार-"प्रिये! तुम्हारा कथन सत्य है। मैं उसे स्वीकार करता हूँ। सचमुच जीवन में यौवन का समय सर्वश्रेष्ठ है और उसका अधिक से अधिक सदुपयोग करना चाहिये। मैं यही करना चाहता हूँ।"

पद्मश्री- "कृतार्थ हुई नाथ! आपने मेरी बात की सत्यता को स्वीकार कर लिया। मेरे तथा मेरी साथिन बहनों के भाग्य धन्य हैं।"

जम्बूकुमार- "पद्मश्री! मैंने तुम्हारी बात की सच्चाई को स्वीकार किया है पर तुमने मेरी बात की सच्चाई स्वीकार नहीं की है।"

पद्मश्री- "वह कौनसी बात, जीवनधन?"

जम्बूकुमार- "वह यह कि जीवन का अधिक से अधिक सदुपयोग भोगोपभोग भोगने में नहीं, किन्तु उसके त्यागने में है। इसमें जीवन की कृतार्थता है।"

जम्बूकुमार का यह कथन सुनकर पद्मश्री मानो आकाश से जमीन पर आ गिरी। उसने सोचा था- मेरी सहज ही विजय हो गई है। पर जम्बूकुमार के अंतिम शब्दों ने उसकी विजय भावना को पराजय के रूप में परिणत कर दिया। उसके चारों ओर घोर निराशा का अंधकार छा गया। वह फिर बोली-

"आप कृपा कर पहेली न बनिए। हम अबलाओं को शब्द के चक्कर में न फँसाइए। स्पष्ट कहिए आपका अभिप्राय क्या है?"

जम्बू- देखो पद्मश्री! मैं किसी को छलने का प्रयास नहीं करता। बात यह है कि सब गतियों में मनुष्यगति श्रेष्ठ है, मनुष्य गति पाने पर भी सद्गुरु का कल्याणकारी धर्मोपदेश श्रवण करने का अवसर दुर्लभ है, धर्मोपदेश श्रवण का सुअवसर पाने पर भी उस उपदेश का रग-रग में रच-पच जाना, उस पर प्रगाढ प्रतीति होना, रुचि होना और निश्चल श्रद्धा होना कठिन है। श्रद्धा हो जाने पर भी उस परमोत्तम धर्मोपदेश का स्पर्श करना, मन-वचन-काय से पालन होना अतीव कठिन है। इस प्रकार इन चार अंगों की प्राप्ति होना भगवान् ने अत्यन्त पुण्य का फल कहा है। शास्त्र बतलाता है-

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुणो।
माणुसत्तं सुई सद्धा, संजमम्मि य वीरियं॥

जिस पुण्यात्मा पुरुष को इन चार अंगों की प्राप्ति हो चुकी है, वह अतिशय धन्य है। जिसे एक ही प्राप्ति हुई हो उसे अगले अंगों की प्राप्ति करनी चाहिए। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे तीन अंग प्राप्त हुए हैं और चौथे अंग को प्राप्त करने अर्थात् संयम में सम्पूर्ण शक्ति लगाने का मैं संकल्प कर चुका हूँ।

प्रत्येक जीव-कीड़ी से कुंजर तक सुख की प्राप्ति को अपना ध्येय मानता है। स्थायी और निर्बाध सुख पाना सर्वोत्कृष्ट ध्येय है। इस ध्येय की प्राप्ति करने में ही जीवन व्यतीत करना जीवन यौवन का अधिक से अधिक सदुपयोग है। यौवन अवस्था में ही प्रबल पुरुषार्थ द्वारा अनन्त, अव्याबाध सुख की प्राप्ति हो सकती है। अतएव मैं अपनी युवावस्था का अधिक से अधिक सदुपयोग करना चाहता हूँ। यही मेरा आशय

है।

पद्मश्री-''नाथ! आपको ज्ञात है कि पति के बिना स्त्री के लिए दूसरा सहारा नहीं है। आपके अतिरिक्त हमारा और कौन धनी-धोरी है? जैसे भोजन नमक के बिना नीरस होता है उसी प्रकार पति-विहीन नारी का जीवन नीरस है, आप इस बात का भी विचार कीजिए कि हम निरपराध अबलाओं का असमय में परित्याग करना कहाँ तक न्याय संगत है? आप प्राप्त सुखों को छोड़कर अप्राप्त सुखों के लिए उद्विग्न हो रहे हैं, पर इससे पश्चात्ताप ही करना होगा।''

जम्बूकुमार-''पद्मश्री! चाहे स्त्री हो, चाहे पुरुष, चाहे कीटपतंग हो या हाथी और सिंह हो, मानव हो या दानव हो, देव हो या नारकी हो, कोई भी हो, सब में अनन्त शक्तिशाली आत्मा विराजमान है। सिद्ध भगवान् की आत्मा में जितनी शक्ति है जितने गुण हैं, वह सब संसारी आत्मा में विद्यमान हैं।'' वस्तुतः परमात्मा और आत्मा में कुछ भी मौलिक भेद नहीं है। सामान्य संसारी आत्मा ही अपने स्वरूप का विकास करके परमात्मा की संज्ञा प्राप्त करता है। अतएव अपने को या दूसरे किसी को निर्जीव, निस्तेज, अशक्त या निर्बल समझना आत्म-देव की आसातना करना है। तुम्हें अपने को अबला नहीं समझना चाहिए। तुम्हारे भीतर असीम शक्ति विद्यमान है। उसे तुमने अभी पहचाना नहीं है। उस ओर तुम्हारा लक्ष्य नहीं है। अपने आन्तरिक खजाने को देखो। अपने ऊपर विश्वास रखो। अपनी शक्ति को पहचान कर उसे अधिक से अधिक अभिव्यक्त करने का प्रयास करो। तुम अबला नहीं सबला हो, प्रबला हो, शक्ति के अक्षय भण्डार की स्वामिनी हो।

पतिविहीन नारी का जीवन नीरस होता है, यह कथन भी एकान्त सत्य नहीं है। जो रस, जो सुख दूसरे पर आश्रित है वह पराधीन है; जो सुख पराधीन है वह तभी तक रहता है जब तक वहाँ 'पर' विद्यमान रहे। 'पर' सदा विद्यमान नहीं रह सकता, अतः वह सुख भी सदा विद्यमान न रहेगा। ऐसे विनाशशील सुख के लिए प्रयत्न करना वृथा है। जो सुख पराधीन न हो, जो अपनी आत्मा में ही निवास करता हो, शाश्वत हो और जिसके भोगने से दुःख न भोगना पड़े, वही स्वाधीन सुख वास्तविक है।

मैं तुम्हें त्याग रहा हूँ, यह कथन भ्रमपूर्ण है। मैं आत्मा हूँ, तुम भी आत्मा हो। निश्चय से आत्मा किसी को न ग्रहण करती है और न आत्मा को कोई ग्रहण कर ही सकता है। ग्रहण करने का अर्थ संबंध स्थापित करना है तो संसार में ऐसा कोई जीव नहीं जिसके साथ सब जीवों का संबंध स्थापित न हो चुका हो। इस दशा में किसी को ग्रहण

करना और किसी को त्यागना क्या न्याय संगत है? अतएव सब जीवों को समान भाव से देखना चाहिए। पृथ्वीकाय आदि से लेकर देवगति तक के सभी जीव संयम धारण करने पर ही समान भाव से देखे जा सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि सबके साथ समान संबंध स्थापित करने के लिए संयम स्वीकार किया जाय। *(क्रमशः)*

(पद्मश्री जम्बूकुमार को समझाने का प्रयत्न कर रही है। दोनों के द्वारा किन-किन उदाहरणों से अपनी-अपनी बात की पुष्टि की जाती है, पढ़िए अगले अंक में)

टी.वी. और कम्प्यूटर की लत घातक

ब्रिटिश डायटिक एसोसिएशन (बीडीए) के अनुसार बच्चों का कम्प्यूटर और टी.वी. के प्रति अधिक लगाव उनके स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है। शोध के अनुसार बच्चे एक साल में औसतन ढाई महीने का समय टेलीविजन या कम्प्यूटर की स्क्रीन को देखते हुए गुजारते हैं, जो कि उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत ही घातक सिद्ध हो सकता है। शोध में लगभग तीन हजार स्कूली बच्चों को शामिल किया गया। सामने आया कि ये बच्चे अपने समय का लगभग बीस प्रतिशत हिस्सा कम्प्यूटर गेम खेलने, टेलीविजन देखने और कम्प्यूटर का इस्तेमाल करने में ही गुजार देते है। ब्रिटेन में एक तिहाई बच्चे टेलीविजन देखते हुए ही खाना पसंद करते है। वहीं पाँच प्रतिशत बच्चे अपना पसंदीदा कार्यक्रम देखने के लिए नाश्ता तक छोड़ देते है। लगभग १० प्रतिशत बच्चे ऐसे होते है, जो नाश्ते के समय बिस्तर पर ही लेटे रहना पसंद करते है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह बढ़ते आलस्य से आजकल बच्चे छोटी उम्र में ही मोटापे के शिकार हो जाते है। उधर बीडीए के प्रवक्ता और आहार विशेषज्ञ डॉक्टर फ्रैंकी फिलिप का कहना है कि उच्च तकनीक वाले उपकरणों से बच्चों और किशोरों के मन पर व्यापक असर पड़ता है, जो बेहद चिन्ताजनक है।

शोधकर्ताओं का यह कहना है कि कम्प्यूटर गेम बच्चों के भविष्य पर ग्रहण लगा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि एक खास सीमा के बाद कम्प्यूटर गेम का नशा किसी नशीले पदार्थ के नशे से कम खतरनाक नहीं होता। जिस तरह नशेड़ी समाज और घर-परिवार भूल जाता है उसी तरह कम्प्यूटर गेम का दीवाना अपने स्वास्थ्य और परिवार के प्यार की कीमत पर घंटों गेम में उलझा रहता है। एक विशेषज्ञ पीटर ग्रॉश के मुताबिक कम्प्यूटर गेम में लीन रहने वाले छात्रों का स्कूली प्रदर्शन खराब हो जाता है। वहीं बाहरी दुनिया से इन छात्रों का सम्पर्क कटने लगता है। ऐसे छात्र आत्म-केन्द्रित हो जाते हैं और उनकी दूसरे कार्यों में रुचि घट जाती है।

दशवैकालिक सूत्र का जानें हम मर्म(९)

प्रश्न १९. कायोत्सर्ग (ध्यान) कब करना चाहिए?

उत्तर- १. परिट्ठप्प पडिक्कम्मे- मुनि कुछ भी प्रासुक अथवा अप्रासुक वस्तु को अचित्त भूमि में परठ कर कायोत्सर्ग करें।-अध्य.५, उद्दे. १, गाथा ८१, ८६

२. इरियावहियमायाय आगओ य पडिक्कम्मे- गोचरी जाकर आने पर गमनागमन कायोत्सर्ग करें।-अध्ययन ५, उद्देशक १, गाथा ८८

३. की हुई आलोचना सम्यक् न हो पाई हो तो फिर से कायोत्सर्ग करें।

-अध्ययन५, उद्दे. १, गाथा ९३

प्रश्न २०. कायोत्सर्ग में क्या-क्या करना चाहिए?

उत्तर- दशवैकालिक सूत्र में दसवें अध्ययन की १३वीं गाथा में कायोत्सर्ग में ममत्व त्याग करने को कहा है- 'असई वोसट्ठ चत्तदेहे'-शारीरिक परिक्रम (मर्दन, स्नान, विभूषा आदि) परित्याग करना कायोत्सर्ग है। जि.चू. में शारीरिक अस्थिरता से निवृत्त होने को कायोत्सर्ग कहा है, जो मौन और ध्यानपूर्वक किया जाता है। पाँचवें अध्ययन के प्रथम उद्देशक की गाथा ८८ 'इरियावहियमायाय, आगओ य पडिक्कमे' के अनुसार ईर्यापथिकी प्रतिक्रमण अर्थात् 'इच्छाकारेणं' के पाठ का भावपूर्वक मानसिक उच्चारण कर जीव विराधना की आलोचना करे। गाथा ९१, ९२, ९३ के भाव के अनुसार कायोत्सर्ग में जिनेन्द्र भगवान् द्वारा देशित वृत्ति पर अहोभाव अभिव्यक्त करे- पेट का पोषण, कर्म का शोषण, आत्मा का तोषण, मोक्षपुरी प्लोषण, अर्थात् मात्र संयम-निर्वहन हेतु आहार करते हुए भी मैं देहाध्यास से मुक्त होता चलूँ, आगे बढ़ता चलूँ।

दूसरी चूलिका गाथा १२ व १३ के अनुसार आत्मावलोकन करे- ''मैंने क्या किया? मुझे क्या करना शेष है? समर्थ होते हुए भी मैं क्या नहीं कर पा रहा हूँ?' मेरी स्खलना होने पर अन्य मुझे किस रूप में देखते हैं? मुझे कैसा लगता है? मैं गलती क्यों नहीं सुधार पा रहा? आदि।

प्रश्न २१. दशवैकालिक सूत्र में मन या चित्त शब्द कहाँ आया है?

उत्तर- जस्स धम्मे सया मणो। -अध्ययन १ गाथा १

सिया मणो निस्सरइ बहिद्धा। -अध्ययन २ गाथा ४

मणेणं वायाए काएणं। अध्ययन ४ गाथा १०-२२ (१७ को छोड़कर)

मणसा वि न पत्थए। -अध्ययन ५ गाथा २३

मणसा काय वक्केणं। -अध्ययन ८ गाथा ३

मणसा वि न पत्थए। -अध्ययन ८ गाथा १०, २८

मणसा, वयसा, कायसा। -अध्ययन ६, गाथा २७, ३०, ४१, ४४

कायग्गिरा भो मणसा य। -अध्ययन ९ गाथा १२

मणवयकाय सुसंवुडे। -अध्ययन १० गाथा ७

किंमग पुण से मणोदुहं। -चू. प्रथम, गाथा १५

काएण वाया अदु माणसेणं। -चू. प्रथम, उद्दे. १, गाथा १८

काएण वाया अदु माणसेणं। -चू. द्वितीय, गाथा १४

चित्तमंतमचित्तं वा। -अध्ययन ६, गाथा १४

चित्तमंतमक्खाया। -अध्ययन ४, गाथा ४-८

अविक्खत्तेणं चेयसा। -अध्ययन ५, प्रथम उद्दे., गाथा ९०, ९२

साहवो तो चिअत्तेणं। -अध्ययन ५, प्रथम उद्दे., गाथा ९५

निच्चं चित्त समाहिओ हव्विज्जा। -अध्ययन १० गाथा १

विसंमतो इमं चिंते। -अध्ययन ५ प्रथम, गाथा ९४

भुंजित्तु भोगाइं पसज्झ चेयसा। -चू. प्रथम, गाथा १४

प्रश्न २२. दशवैकालिक में समान गाथाएँ (२ या उससे अधिक बार) कौनसी हैं?

उत्तर- समान गाथाएँ २ या उससे अधिक बार-

अध्ययन ५ प्रथम- गाथा ४३, ४८, ५०, ५२, ५४, ५८, ६०, ६२, ६४

अध्ययन ५ प्रथम- गाथा ८१=८६

अध्ययन ५ द्वितीय-गाथा १५=१७

जब तक हवा-पानी अपनी मर्यादा में हैं जीवन के लिये अमृत तुल्य हैं, ज्योंही मर्यादा का उल्लंघन कर तूफान व बाढ़ का रूप धारण किया जाता है तो विनाशकारी लीला उपस्थित हो जाती है। इसी प्रकार मर्यादा व संयम पर संसार सुरक्षित है, असंयम से सद्गुणों के विनाश की बाढ़ आ जाती है।

आत्महत्या से जीवन की ओर

डॉ. श्वेता कोटड़िया

दुःखों एवं कष्टों से घबराकर स्वयं की हत्या कर लेना आत्महत्या है। जैन धर्म कहता है- 'आत्मघाती महापापी'। जीवन के दौरान किये गये पापों का प्रायश्चित्त करने का हमें अवसर मिलता है, किन्तु आत्महत्या का प्रायश्चित्त करने का हमें मौका नहीं मिलता, अतः निश्चित रूप से आत्महत्या से बढ़कर कोई पाप नहीं है। किसी कवि ने कहा है-

क्या है संसार, मन का विस्तार, केवल विचार।
नहीं कुछ सार, वही वही तो है संसार॥

अर्थात् यह संसार हमारे विचारों का विस्तार है। शुभ-अशुभ विचारों का उतार-चढ़ाव जीवन में चलता-रहता है। निरन्तर एवं अत्यधिक अशुभ विचार हमें आत्महत्या की ओर प्रेरित करते हैं। इसलिए अशुभ भावों को हमें सदैव त्यागने का प्रयास करना चाहिए।

वर्तमान समय में भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ, बनते-बिगड़ते रिश्ते, असाध्य रोग, प्रतिस्पर्धा, मानसिक अवसाद आदि आत्महत्या की घटनाओं के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं। एक व्यक्ति के शरीर पर मात्र उसका ही अधिकार नहीं होता, अपितु उसके परिवार, समाज और राज्य का भी होता है क्योंकि उसके निर्माण में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से इन सबका योग रहा है। इसीलिए भारतीय दण्ड संहिता की धारा ३०९ के तहत आत्महत्या के प्रयत्न को अपराध माना गया है।

प्रतिकूल परिस्थितियों के बढ़ने से और सहनशीलता की कमी के कारण आत्महत्याएँ बहुत बढ़ रही हैं। भारत में एक वर्ष में एक लाख आत्महत्याएँ होती हैं। जो इस बात को प्रकट करती है कि लोगों के मन और मस्तिष्क बहुत अशांत है। इस अशांति को मिटाने का मात्र एक रास्ता है- अध्यात्म की ओर गमन और वीर प्रभु की शरण।

आत्महत्या से होता है पतन, आत्महत्या है दुर्गति का कारण,
आत्महत्या नष्ट करता है जीवन, अतः आप सबसे करती हूँ निवेदन।
आत्महत्या त्याग कर बन जाओ पावन, उत्तम जीवन का करो अभिनन्दन॥

-१२/७, समता कुंज, जालम विलास, पावटा बी रोड़, जोधपुर

कुरुदत्तमुनि का देहोत्सर्ग

डॉ. राजेन्द्र मुनि

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर १० जुलाई २००६ तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१ (राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की परिवर्तित राशि निम्नानुसार है- प्रथम पुरस्कार-२५० रुपये, द्वितीय पुरस्कार-२०० रुपये, तृतीय पुरस्कार- १५० रुपये तथा १०० रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। प्रतियोगिता में अब १० वर्ष से २१ वर्ष तक के छात्र-छात्रा भाग ले सकते हैं।

हस्तिनापुर नगर में कुरुदत्त नाम के एक श्रेष्ठी रहते थे। वे दानवीर और बारहव्रती श्रावक थे। अनेक विधवाएँ दीन-हीन, वृद्ध और निराश्रित जन उनके धन से जीवनयापन करते थे। कुरुदत्त जैसे धनी श्रेष्ठी नगर में और भी थे, पर उनके समान उदारता किसी में नहीं थी। अपनी उदारता और धार्मिकता के कारण ही उन्होंने हस्तिनापुर में प्रसिद्धि पाई थी।

एक बार सवेरे श्रेष्ठी कुरुदत्त दुकान जाने की तैयारी कर रहे थे। उनका रथ बाहर खड़ा था। तभी एक अन्य श्रेष्ठी उनसे आकर बोले-

"क्या आप भी वहीं जा रहे हैं? मैं भी वहीं जा रहा हूँ। चलिए दोनों साथ चलते हैं। मेरे रथ में ही बैठ जाइए। आपका रथ खड़ा देखकर मैंने सोचा, आप अभी घर ही हैं तो अपना रथ रुकवा दिया।"

"लेकिन श्रेष्ठी जी, मैं तो कुछ भी नहीं समझा कि आप कहाँ जाने के लिए कह रहे हैं।" श्रेष्ठी कुरुदत्त बोले- "मैं तो नित्य की तरह दुकान जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"अरे तो आपको नहीं मालूम?" दूसरे श्रेष्ठी ने कहा- "हस्तिनापुर के राजोद्यान में एक ज्ञानी मुनि आये हुए हैं।"

"मैं रात ही दूसरे नगर से लौटा हूँ।" श्रेष्ठी कुरुदत्त ने हर्षित होकर

कहा- ''नगर में घोषणा तो हुई होगी। यह तो हमारा बड़ा सौभाग्य है कि हमारे यहाँ ज्ञानगंगा बहेगी। मैं भी आपके साथ ही मुनि की देशना सुनने चलता हूँ।''

हजारों व्यक्ति राजोद्यान में एकत्रित थे। सभी दत्तचित्त होकर मुनि की देशना सुन रहे थे। मुनिश्री ने अपनी देशना में कहा-

''भव्य जीवों, हम लोग पूरी तरह संसार पर ही निर्भर रहते हैं। हम सोचते हैं कि हमारा जीवन-मरण संसार पर ही टिका है और यह सोचकर ही हम प्राणपण से रात-दिन अपनी स्वार्थ-रक्षा, अधिकार रक्षा और सुखोपलब्धि के लिए न जानें कितना तूफान खड़ा करते रहते हैं। इस आपाधापी में हम खुद भी अशान्त रहते हैं और दूसरों को सताने-कष्ट देने में भी नहीं चूकते। रात-दिन दौड़-धूप, लूटपाट, भाग-दौड़ करते-करते ही हमारा जीवन चला जाता है। किसी से कहो, धर्म की आराधना के लिए समय देना है तो उत्तर मिलेगा- हमें तो मरने तक की फुर्सत नहीं है। यह सब कषायों का जादू है जो सिर पर चढ़ कर बोल रहा है।''

''भव्य जीवों! माता बैठे-बैठे अपने बच्चों की क्रीड़ा देखती रहती है और मन ही मन हँसती है। कुत्ता-बिल्ली के बच्चे भी आपस में खेलते हैं तो एक-दूसरे को काटाकाटी करते हैं-एकाध दाँत भी गड़ा देते हैं। माया के खेल में हम इतने लिप्त हो जाते हैं कि मरने की भी फुर्सत नहीं मिलती।''

''खेल जब जम जाता है तो अभिनेता-अभिनेत्री अपनी यात्रा की भूमिकाओं में घुलमिल कर खेल को ऐसा बना देते हैं कि वह बिल्कुल सच्चा मालूम पड़ता है। तभी तो नाटक देखते हुए लोग हँसते भी हैं-रोते भी हैं। लेकिन नाटक तो थोड़ी देर के लिए ही होता है। संसार का जो खेल हम इतनी तन्मयता से खेल रहे हैं कि मरने की भी फुर्सत नहीं पाते, वह संसारी खेल भी टिकाऊ नहीं है। जब तक कर्म है, तभी तक आपको नाचना है। तो क्यों नहीं इन कर्मों को नष्ट कर देते? क्या कठिनाई है इन्हें नष्ट करने में? केवल यही समझना है कि संसार झूठा है- धर्म सच्चा है। जिसकी समझ में सच-झूठ का यह भेद आ गया, वही कर्मक्षय के लिए चल पड़ेगा।''

श्रेष्ठी कुरुदत्त पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने तत्क्षण कर्मक्षय करने का संकल्प कर लिया। कथा को समेटते हुए संक्षेप में यह कहें कि श्रेष्ठी कुरुदत्त

अब मुनि कुरुदत्त हो गए। गुरु मुनि तथा अन्य श्रमणों के साथ उन्होंने हस्तिनापुर से अन्यत्र विहार किया।

तपश्चर्या और शास्त्रचिंतन में मुनि कुरुदत्त आगे बढ़ते गए। उन्होंने एकाकी विहार के द्वारा जन-कल्याण करने में समर्थ देख गुरुमुनि ने उन्हें अकेले विहार करने का परामर्श देते हुए कहा-

"मुने! साधना अपने बल पर ही चलती है। अब तुम अकेले ही विहार करो और जन-जन तक धर्म का संदेश पहुँचाओ और स्वयं आत्मदर्शन करो।"

गुरु का आदेश मानकर मुनि कुरुदत्त ग्रामानुग्राम विहार करते। वे जहाँ भी जाते, जन समूह उनकी देशना सुनने को उमड़ पड़ता। मरघट, नदी तट, वन-कछार जहाँ भी एकान्त मिलता मुनिवर ध्यानस्थ होकर गहराई में उतर जाते।

एक बार मुनि कुरुदत्त एक गाँव के बाहर वृक्षमूल में खड़े होकर ध्यानस्थ हुए। उन्होंने चार प्रहर तक कायोत्सर्ग करने का अभिग्रह किया था। यों कायोत्सर्ग करते हुए एक प्रहर बीत गया।

गाँव में एक श्रेष्ठी के घर कुछ चोर घुस आये। वे चोरी करके जाने लगे तो तभी घरवालों की आँख खुल गई। वे चोर-चोर चिल्लाये तो गाँव के और लोग इकट्ठे हो गए। अंधेरी रात थी। गाँव वाले लालटेन लेकर चोरों के पीछे भागने लगे। चोर भी आगे-आगे भाग रहे थे। भागते-भागते चोर वहीं पहुँच गए जहाँ मुनि कायोत्सर्ग कर रहे थे। वहीं से चोर झुरमुट में छिप गए। जब गाँव वाले वहाँ पहुँचे तो ठिठक कर चारों ओर दृष्टि दौड़ाने लगे-

"चोर हमने इधर ही देखे थे। यहाँ से किधर गए?"

"इसी बाबा से पूछ लो।" एक गाँव वाले ने कहा- "बाबा ही बतायेगा कि चोर किधर भागे हैं।"

गाँव वाले बार-बार कायोत्सर्ग में लीन मुनि कुरुदत्त से पूछने लगे, पर वे ध्यानस्थ थे। गाँव वालों के चीखने-चिल्लाने से मुनि का ध्यान भंग हो गया तो उनके कानों में गाँववालों के प्रश्न गूँजने लगे -

"अरे ढोंगी बता चोर किधर गए हैं। तू भी चोरों का साथी मालूम पड़ता है।"

मुनि सोचने लगे- "मैंने तो चोरों को आते-जाते नहीं देखा। फिर कैसे

कहूँ कि किधर गए हैं। अगर कहूँ कि मुझे नहीं मालूम तो भी ये विश्वास नहीं करेंगे, क्योंकि इनकी समझ से मैं भी चोरों का साथी हूँ। ये लोग चोरों को पकड़ कर व्यर्थ में हिंसा करेंगे? अतः मौन रहना ही ठीक है।''

गाँव वाले चीखते-चिल्लाते रहे, पर कुरुदत्त मुनि ने मुँह नहीं खोला। उनके मौन व चुप्पी से गाँव के लोग उत्तेजित और क्रुद्ध हो गए। दो-चार ने मिलकर कहा-

''ढोंगी को ऐसा दण्ड मिले कि यह भी याद करे।''

''तो जाओ थोड़ा गीली मिट्टी ले आओ।'' एक ग्रामीण बोला- ''पास में ही नदी है, वहाँ गीली मिट्टी मिल जाएगी। फिर मैं दण्ड की व्यवस्था करता हूँ।

बस फिर गाँववालों ने मुनि के सिर पर गीली मिट्टी से चारों और मेड सी बाँध दी और बीच में दहकते अंगारे रख दिये। इतना करके सब गाँव वाले भाग खड़े हुए।

हवा से अंगारे दहके। मुनि की त्वचा, रक्त-माँस जलने लगे। लेकिन मुनि समभाव में ऐसे डूबे थे कि देह की प्राणान्तक पीड़ा भी उनको विचलित नहीं कर सकी। वे देहातीत होकर आत्मलीन हो गए। शुद्ध ध्यान और समता में लीन मुनि कुरुदत्त ने प्राणोत्सर्ग कर दिया और मरकर देवलोक में देव बने।

कष्टों को समभाव में सहन करने वाला ही साधक सच्चा साधक होता है।

प्रश्न

१. श्रेष्ठी कुरुदत्त किसके लिए प्रसिद्ध थे?

२. मुनि कुरुदत्त को सच्चा साधक क्यों कहा गया है?

३. अर्थ लिखिये- प्राणान्तक, श्रेष्ठी, आपाधापी, प्राणोत्सर्ग, ग्रामानुग्राम।

४. मुहावरों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिये- तूफान खड़ा करना, सिर पर चढ़ कर बोलना।

५. इस कथानुसार बताइये कि संसार कैसा है?

६. कुरुदत्त श्रेष्ठी दुकान जाने की बजाय मुनि के प्रवचन-श्रवण हेतु गए। क्या आप उनके निर्णय से सहमत हैं? यदि सहमत हैं तो क्यों?

७. क्या ध्यानस्थ मुनि को चोरों के बारे में जानकारी थी?

८. कुरुदत्त मुनि की कथा किस सन्त से मेल खाती है? दोनों में समानता का उल्लेख करें।

बाल-स्तम्भ [अप्रेल-२००६] का परिणाम

जिनवाणी के अप्रेल-२००६ के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'संशयात्मा विनश्यति' कहानी के प्रश्नों के उत्तर ३२ बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। प्राप्तांक २० में से दिए गए हैं। इस अंक की प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-२५०/-	सुनयना गेलड़ा-बोरावड़	१९.२५
द्वितीय पुरस्कार-२००/-	नमन मेहता-पीपाड़ शहर	१९
तृतीय पुरस्कार-१५०/-	स्वाति चोरडिया-गुवाहटी	१८.७५
सान्त्वना पुरस्कार-१००/-	हिमांशु सिंघवी-जोधपुर	१८.५
	यशवन्त गोलेछा-ब्यावर	१८.५
	गर्व लुंकड़-कोटा	१८.५
	हंसा गोखरू-मालपुरा	१८.२५

जिनवाणी की सदस्यता हेतु अर्द्धमूल्य योजना

सुश्राविका श्रीमती कपूरीदेवी जी जैन धर्मपत्नी स्वाध्यायी सुश्रावक स्व. श्री सौभाग्यमल जी जैन, अलीगढ़, जिला-टोंक (राज.) का २६ अप्रेल २००६ को ७२ वर्ष की वय में स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्य-स्मृति में उनके सुपुत्र डॉ. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, ऋषभचन्द जैन-मुम्बई, टीकमचन्द, विनोदकुमार जैन-अलीगढ़ (टोंक) ने जिनवाणी के ७२ आजीवन सदस्यों हेतु अर्द्धमूल्य (१८ हजार रुपये) की सहयोग राशि प्रदान की है। जो भी महानुभाव इस योजना के अन्तर्गत सदस्य बनने के इच्छुक हों वे आजीवन सदस्यता हेतु ५००/- के स्थान पर २५०/- जिनवाणी, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर को सीधे प्रेषित कर सकते हैं। यदि ड्राफ्ट भेज रहे हों तो 'जिनवाणी' के नाम से बनाएँ।

-प्रेमचन्द जैन, मंत्री

अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा आयोजित

'आओ स्वाध्याय करें' त्रैमासिक प्रतियोगिता (१०) का परिणाम

जिनवाणी के जनवरी २००६ अंक में आयोजित त्रैमासिक प्रतियोगिता (१०) में २४१ प्रतियोगियों ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता जिनवाणी के जनवरी से मार्च २००६ के अंकों पर आधारित थी। प्रतियोगियों के उत्साह से आयोजकों को प्रमोद है। द्वितीय, तृतीय एवं सान्त्वना पुरस्कार ड्रा द्वारा निकाले गये हैं। परिणाम इस प्रकार हैं-

प्रथम पुरस्कार- १००१/- रुपये	नीलू जैन-लुधियाना	(४९)
द्वितीय पुरस्कार- ५०१/- रुपये	ऋषभ जैन-इन्द्रगढ़	(४८)
तृतीय पुरस्कार- २५१/- रुपये	पुष्पा जैन-पाली	(४८)

सान्त्वना पुरस्कार- १००/- रुपये प्रत्येक

डॉ. अरूणा सिंगी-नागपुर	(४८)	किरण कुम्भट-जोधपुर	(४८)
कांता बेताला-जयपुर	(४८)	नीता सिंघवी-जोधपुर	(४८)
दर्शिका टाटिया-जलगाँव	(४७)	पारस जैन-बलारी	(४७)
संगीता जैन-जलगाँव	(४७)	शांता पितलिया-अमरावती	(४७)
लीलाबाई कोठारी-अहमदनगर	(४७)	राजुल कोठारी-धुले	(४७)

अन्य प्रतियोगी-

अन्य ४७ अंक प्राप्त करने वाले अन्य प्रतियोगी :- सरोज रुणवाल-धुलिया, नथमल कोठारी-बालोद, विशाल कांकरिया-पाली, अनिल कुमार जैन-कोटा, हंसा गोखरू-मालपुरा, रीमा जैन-लुधियाना, सुनीता लुणावत-आचीणा, मोनिका दुधेड़िया-मेड़ता सिटी, गर्व लुंकड़-कोटा, कुसुम मारू-राजकोट, शांता मोदी-जयपुर,

४६ अंक प्राप्त करने वाले प्रतियोगी :- भाग्यश्री बरडिया-बोदवड़, प्रमीला पोखरणा-धुले, अमित कर्णावट-जयपुर, सरोज खाबिया-मैसूर, सुनील जैन-मैसूर, गणपत सुराणा-जोधपुर, भोपालचन्द सेठिया-जोधपुर, शांता बम्ब-जोधपुर, नैनचन्द बाफना-जोधपुर, नवरतन नाहर-चेन्नई, हेमंत डागा-बूंदी, मुन्नालाल भंडारी-जोधपुर, सुमन डागा-भोपाल, चंदनबाला लोढ़ा-मथानिया, किरण कटारिया-नागपुर, निर्मला भलगट-चन्द्रपुर, भगवती जैन-इन्दौर, महेन्द्र लुणावत-पालदा, अंकिता बरडिया-इन्दौर, श्वेता वेदमुथा-नासिक, विमला खिंवसरा-धुले, सुनंदा लोढ़ा-धुले, लता आंचलिया-औरंगाबाद, कंचन कोचर-धुले, अनीता दुग्गड़-धुले, विजया लोढ़ा-धुले, प्रकाशवती-उदयपुर, तृप्ति जैन-अलीगढ़, बाबूलाल जैन-भरतपुर, अंशिमा जैन-अलीगढ़, सूरजकुमारी जैन-मालपुरा, सिद्धार्थ जैन-मालपुरा, ऋषभ जैन-जरखोदा, उषा भंडारी-पीपाड़, दिलीप भंडारी-पीपाड़, दीपक जैन-जोबनेर, सुशीला देवी-जोबनेर, रज्जुलाल जैन-जोबनेर, निशा लुंकड़-कोटा, पुष्पा गांधी-जोधपुर, लीला जैन-इन्द्रगढ़, सरला रांका-नागपुर, दिव्या डागा-जयपुर, बसंती जैन-

आचीणा, आनंद बोहरा-पुष्कर, गौरव जैन-कोटा, मनीला कटारिया-जलगाँव, उषा जैन-जलगाँव, शकुंतला कटारिया-जलगाँव, दीपाली दुगड़-मुकटी, सपना दुगड़-मुकटी, अजय मारू-राजकोट, मंजू जैन-मैसूर, शारदा मुथा-लासूर, सुनीता दुस्साज-जयपुर, रमणलाल छाजेड़-धुले, कमला सिंघवी-जयपुर, अक्षिता मण्डारा-जलगाँव, शीतल बंब-लासुर, शशिकला लुणावत-नासिक, विमला बरडिया-बोदवड़, अभिनन्दन जैन-अहमदनगर।

सही उत्तर

उपर्युक्त त्रैमासिक प्रतियोगिता (१०) के प्रश्नों के सही उत्तर जिनवाणी अंक एवं उसके पृष्ठ के साथ यहाँ दिए जा रहे हैं -

उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या	उत्तर	माह/पृष्ठ संख्या
१. १२	मार्च/७१	२. ७	मार्च/४९-५०
३. ७२	जनवरी/४५	४. ३	मार्च/२९
५. १२	मार्च/३१	६. १२ या १३	जनवरी/५२
७. १०/११	मार्च/३	८. २१	मार्च/१६
९. संवत् १९९०	जनवरी/१३	१०. ४९	मार्च/२५
११. भ्रष्टाचार	फरवरी/४	१२. कूणिक	फरवरी/५५
१३. दान	मार्च/८	१४. अभिमान	मार्च/४५
१५. दलुभाऊ	मार्च/८०	१६. पश्चात्ताप	फरवरी/३१
१७. गुरु	जनवरी/१२	१८. आत्मा	जनवरी/३०
१९. पुण्य	जनवरी/४६	२०. श्रावक	मार्च/१२
२१. वाक्यशुद्धि	फरवरी/३४	२२. मनभेद	फरवरी/९
२३. पत्रकारिता	मार्च/३	२४. प्रेरणा	मार्च/४६
२५. मृत्यु	फरवरी/३०	२६. सामायिकवाला	फरवरी/४५
२७. सम्यग्दर्शन	मार्च/१९	२८. संघ	जनवरी/१०
२९. श्रुत सामायिक	फरवरी/४६	३०. कृष्णवासुदेव	फरवरी/११
३१. सामायिक	मार्च/३०	३२. वीतरागता	मार्च/१८
३३. मेघकुमार	जनवरी/३	३४. १ मुहूर्त्त	जनवरी/४३
३५. दीक्षा	फरवरी/३२	३६. व्युद्ग्राहित	फरवरी/६
३७ कर्त्तव्यदान	मार्च/१५	३८. दोहद	मार्च/४०
३९. मृत्यु	मार्च/२७	४०. इन्ट्यूशन	फरवरी/३७
४१. असामान्य	मार्च/३९	४२. मौत	जनवरी/१८
४३. अपृथक्त्वानुयोग	जनवरी/२१	४४. देवलाली	मार्च/८०
४५. महाभारत	मार्च/५०	४६. रात्रिभोजी	मार्च/५०
४७. अहंकारी एवं घमण्डी व्यक्ति			जनवरी/५१
४८. प्रभव	मार्च/२१		
४९. प्रभव	फरवरी/३२	५०. प्रभव	मार्च/२२

सरलहृदय, चिन्तनशील, शिक्षाविद् वरिष्ठ स्वाध्यायी डॉ. पदमचन्द जी मुणोत, जयपुर

विनोदप्रिय, विवेकशील, विनयवान्, सरलहृदय, सेवाभावी, चिन्तनशील, वरिष्ठ स्वाध्यायी डॉ. पदमचन्द जी मुणोत का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा दशमी संवत् १९९२ को किशनगढ़ निवासी श्री गाढ़मल जी मुणोत की धर्मपत्नी श्रीमती सुन्दरदेवी जी मुणोत की कुक्षि से गोगेलाव (जिला- नागौर) में हुआ।

आपकी सम्पूर्ण व्यावहारिक शिक्षा राजस्थान की राजधानी गुलाबी नगरी जयपुर में हुई। आपने उच्च शिक्षा श्री महाराजा कॉलेज, जयपुर में ली। सन् १९५८ में आपने स्वर्ण पदक के साथ एम.ए.सी. (गणित) की परीक्षा में सफलता हासिल कर विशेष योग्यता का परिचय दिया। सन् १९७१ में आपने पी-एच्.डी. की उपाधि प्राप्त की। अध्ययन के पश्चात् आप श्री जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष (गणित एवं सांख्यिकी) के पद पर कार्यरत रहे।

युवावस्था में मित्रों के साथ खेलते-खेलते कुछ मित्रों में मतभेद हो जाने के कारण आपके मन में चिन्तन चला कि क्यों न हम खेल में समय बिताने के बजाय समाज-सेवा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दें। अपने विचार मित्रों के सम्मुख रखे। सभी मित्र आपके विचारों से सहमत हुए और उसी दिन से आपकी मित्र मण्डली ने समाज सेवा हेतु योजना बनानी प्रारम्भ की। संयोग से उन्हीं दिनों प्रातःस्मरणीय सामायिक-स्वाध्याय के प्रेरक पूज्य आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का भी आपको सान्निध्य मिला। उनके विचारों से प्रभावित होकर आप सन् १९६० में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के सदस्य बन गये। तब से प्रतिवर्ष पर्वाधिराज पर्युषण में संत-सती विहीन क्षेत्रों में पधार कर जिनवाणी की प्रभावना करते रहे हैं।

शिक्षा जगत् से जुड़े होने के कारण वर्षों से आप विभिन्न शिविरों में भाग लेकर अपने अनुभवों से शिविरार्थियों को लाभान्वित करते रहे हैं। स्वाध्याय संघ की यह विशेषता रही है कि इस संघ के पदाधिकारी का दायित्व उसी को सौंपा जाता है जो स्वयं स्वाध्यायी हो। एक अच्छे स्वाध्यायी के साथ शिक्षाप्रेमी व अच्छे प्रशासक होने के कारण आपने स्वाध्याय संघ के सन् १९६८ से १९७१ तक संयोजक पद का कुशलता से निर्वहन किया।

ध्येय रहा। यही कारण है कि आप सन् १९७२ से १९८७ तक तथा पुनः १९९० से १९९५ तक जोधपुर सिंहसभा के सदस्य रहे। सन् १९५५ से १९५८ तक श्री तरूण जैन परिषद्, जयपुर के सचिव पद का नवम्बर १९८४ से १९८७ तक श्री सरदार हाई स्कूल के संचिव पद के उत्तरदायित्व का भी आपने बखूबी निर्वहन किया। सन् २००३ से २००५ तक श्री एस.एस. जैन सुबोध शिक्षा समिति, जयपुर के महामंत्री पद को सुशोभित किया। सन् २००२ से २००४ तक श्री जवाहर नगर श्वेताम्बर संघ के सदस्य एवं स्थानक संयोजक के पद पर रहकर अपने उत्तरदायित्व का भलीभाँति निर्वहन किया। श्री जैन रत्न संघ, जोधपुर के सदस्य एवं संयुक्त मंत्री के दायित्व को भी आपने पूर्ण रूप से निभाया।

संत-सतियों का सान्निध्य मिलने पर, आवश्यक होने पर उनको अध्ययन कराना तथा उनके द्वारा नया ज्ञान सीखने का आपका लक्ष्य रहता है। आपने आचारांग, उत्तराध्ययन, समवायांग, अन्तकृद्दशांग, उपासकदशांग, सुखविपाक, तत्त्वार्थ सूत्र, कर्मग्रन्थ १ से ६ भाग, दशवैकालिक, कल्पसूत्र तथा जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग १ व २ का वाचन किया है। दशवैकालिक के एक से पाँच अध्ययन, उत्तराध्ययन के तीन से चार अध्ययन एवं तत्त्वार्थ सूत्र के कुछ अध्ययन आपको कण्ठस्थ हैं। २५ बोल, ६७ बोल, उपयोग, गति-आगति का थोकड़ा आदि कई थोकड़े आपको कण्ठस्थ हैं।

पर्वाधिराज पर्युषण में आप प्रातः एवं सायं प्रतिक्रमण, प्रार्थना, अन्तगड वाचन व विवेचन, प्रवचन, कल्पसूत्र वाचन, लावणी, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम द्वारा जन-जन में जिनवाणी की महती प्रभावना करते हैं।

गणित विषय पर आपके अनेक शोध-पत्र देश-विदेश की शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। आपने तीन शोधार्थियों को पी-एच्.डी. की उपाधि हेतु मार्गदर्शन किया है। गणित के अनेक आधुनिक विषयों का अध्ययन कर आपने अध्ययन कराया है। कई ग्रीष्मकालीन शिविरों में शिविरों का संचालन किया है। एन.सी.ई.आर.टी. के अनेक शिविरों में गणित के आधुनिक पेपर सेटिंग का भी आपने संयोजन किया है। धार्मिक क्षेत्र में सामायिक सूत्र पुस्तक का संयोजन आप द्वारा किया जा चुका है। धार्मिक विद्यालयों का संयोजन भी आपने कुशलतापूर्वक किया है।

आप उत्तम वक्ता तथा चिन्तनशील लेखक हैं। आप बारह व्रती श्रावक हैं। सन् १९६० से रात्रि भोजन का त्याग कर चुके हैं। जयपुर में रहते हुए प्रतिदिन कम से कम ५ सामायिक, पाँचों तिथियों को पौषध अथवा संवर करने का प्रयास रहता

है। दोपहर को लगभग १.५ से २ घण्टे नित्य स्वाध्याय करते हैं। आपके लेख जिनवाणी में प्रकाशित होते रहते हैं। आप समाज-सेवा व दान के लिए एक चेरिटेबल ट्रस्ट भी चलाते हैं।

अब तक आपने लाडपुरा, जैतारण, मेड़ता सिटी, फालना, सरदारपुरा, बाड़मेर, कोसाणा, धुन्धाड़ा, अलीगढ़, गंगापुर सिटी, डेह, बाड़मेर, जावरमाइन्स, विवेक विहार, कृष्णा नगर-दिल्ली, दरीबामाइन्स, बिलाड़ा, कुकड़ेश्वर आदि कई स्थानों पर पर्युषण सेवा दी है।

स्वाध्याय-संघ परिवार आपकी सुदीर्घ आयु तथा उज्ज्वल भविष्य की मंगल-कामना करता हुआ जिनेश्वर देव से प्रार्थना करता है कि आप स्वस्थ रहें तथा जिनवाणी की प्रभावना करते रहें। ***-श्रीमती मोहनकौर जैन, सचिव***

अहिंसा

श्रीकान्त जैन

जैन धर्म में जो पाँच महाव्रतों का विधान बतलाया है।
उनमें अहिंसा महाव्रत ने, मूर्धन्य स्थान पाया है।।१।।
हिंसा का अभाव ही अहिंसा, ऐसा पढ़ने में आया है।
'न हिंसा इति अहिंसा' लिखकर सबने समझाया है।।२।।
प्रश्नव्याकरण के संवर द्वार में अहिंसा का वर्णन आया है।
जिसमें अहिंसा के गुणनिष्पन्न ६० नामों को गिनाया है।।३।।
उन ६० नामों में ही अहिंसा भगवती का मर्म है।
उन पर चिन्तन-मनन करना हम सभी का धर्म है।।४।।
जैन संस्कृति में हिंसा को दो रूपों में व्यक्त किया है।
द्रव्य हिंसा की अपेक्षा भाव हिंसा विरति पर बल दिया है।।५।।
जैन शास्त्र में कथा रूप में तन्दुल मत्स्य का वर्णन आया है।
जिसमें भाव हिंसा के सूक्ष्म तत्त्व और भीषण परिणाम को बतलाया है।।६।।
आत्म समानता ही अहिंसा के आचार का आधार कहाया है।
आचारांग में भी 'णो हीणे णो अतिरित्ते' इस तरह का सूत्र आया है।।७।।
'आत्मवत् सर्वभूतेषु' से ही जीवन उज्ज्वल हो पाएगा।
'श्रीकान्त' शान्ति, समता, सहिष्णुता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा।।८।।

-अधिष्ठाता : श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर

कृति की २ प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

प्रतिष्ठा लेख संग्रह (द्वितीय भाग):- संकलक एवं सम्पादक *- साहित्यवाचस्पति म. विनयसागर,* ***प्रकाशक****-प्राकृत भारती अकादमी एवं एम.एस.पी.एस.जी. चेरिटेबल ट्रस्ट, १३-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर(राज.)३०२०१७, फोन नं. ०१४१-२५२४८२७* ***पृष्ठ*** *१८+१९६,* ***मूल्य*** *१५० रुपये, सन् २००३*

प्रतिष्ठा-लेख-संग्रह के प्रथम भाग का प्रकाशन द्वितीय भाग के प्रकाशन से ५० वर्ष पूर्व हो गया था। द्वितीय भाग में ७५७ प्राचीन शिलालेखों एवं मूर्तिलेखों का संकलन है। पुस्तक के अंत में सात परिशिष्ट हैं, जिनमें क्रम से मूर्तिलेख के अन्तर्गत आए नगर, ग्राम एवं मन्दिर का उल्लेख है। द्वितीय परिशिष्ट में गच्छों के नाम, तृतीय परिशिष्ट में आचार्य एवं मुनियों के नाम दिए गए हैं। चतुर्थ, पंचम, षष्ठ एवं सप्तम परिशिष्ट में क्रमशः ग्राम का नाम, राजा का नाम, जाति का नाम एवं गोत्रों की सूची अकारादि क्रम से दी गई है। महोपाध्याय विनयसागर जी पुरालिपियों के विशेषज्ञ हैं तथा खरतरगच्छ के इतिहास और साहित्य के धुरन्धर ज्ञाता हैं।

जगायें संस्कार*-श्री पदमचन्द गाँधी* ***प्रकाशक****-प्यारेलाल गौतमचन्द गुन्देचा, २/१६, महाराजपुरम्, सन्तानम् सालै, टी.नगर, चेन्नई-६०००१७(तमिलनाडु),* ***पृष्ठ*** *१६+१५५,* ***मूल्य*** *संस्कार निर्माण एवं आत्मोत्थान, सन् २००६*

वर्तमान एवं भावीपीढ़ी को सन्मार्ग से न भटकने के लिए संस्कारों के संवर्द्धन की महती आवश्यकता है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में टी.वी. एवं कम्प्यूटर गेम के इस काल में बालकों के संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं। ऐसे समय में श्री पदमचन्द गाँधी की पुस्तक 'जगायें संस्कार' पाठकों में आत्म-विश्वास एवं सत्संस्कारों के प्रति आस्था जगाती है। पुस्तक में माताओं, युवकों, बालकों एवं बड़ों सबके व्यवहार के परिमार्जन हेतु सामग्री उपलब्ध है। पुस्तक में भ्रूणहत्या, वृद्ध-सेवा, मानसिक-प्रदूषण, दहेज, कुशल नेतृत्व, सामायिक, फास्टफूड आदि विविध विषयों पर प्रकाश डाला गया है।

समाचार-संकलन

विक्रम सम्वत् २०६३ के स्वीकृत चातुर्मास

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने सर्वप्रथम चैत्र शुक्ला पंचमी, रविवार दिनांक २ अप्रेल २००६ को एवं तदनन्तर अक्षय तृतीया वैशाख शुक्ला ३, रविवार दिनांक ३० अप्रेल २००६ को कतिपय चातुर्मास घोषित किए वे जिनवाणी के अप्रेल एवं मई के अंक में प्रकाशित किए जा चुके हैं। आचार्यप्रवर ने अवशेष रहे चातुर्मास १ जून २००६ को वेल्लूर में साधु मर्यादा में रखने योग्य आगारों के साथ घोषित किए है। रत्नसंघ के विक्रम संवत् २०६३ के चातुर्मास इस प्रकार हैं-

१. बंगारपेट (कर्नाटक)	- परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ८
२. पीपाड़सिटी (जिला-जोधपुर)राज.	- परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा ५
३. घोड़ों का चौक, जोधपुर	- साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा ७
४. जावला (जिला-नागौर)राज.	- सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४
५. पीपाड़ सिटी(सकारण)	- शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४
६. जबलपुर (म.प्र.)	- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७
७. वेल्लूर-तमिलनाडू (सकारण)	- व्याख्यात्री महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७
८. कानपुर (उ.प्र.)	- विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४
९. आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर	- व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी

	म.सा. आदि ठाणा ६
१०.कोटा (राज.)	- व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५
११.काचीगुड़ा, हैदराबाद (आ.प्र.)	- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५
१२.पाली-मारवाड़(राज.)	- व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा ३
१३.गदग (कर्नाटक)	- व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३
१४.सहकारनगर-नाशिक(महा.)	- सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३
१५.भोपालगढ़ (जोधपुर)राज.	- महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३

आचार्यप्रवर ने २.४.२००६ को व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास 'देई' स्वीकार किया था, किन्तु महासती श्री रुचिता जी म.सा. के स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. का चातुर्मास 'देई' के स्थान पर 'आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर' घोषित किया है।

-नवरतन डागा, महामंत्री

नवदीक्षित संत-सती का महाव्रतों में आरोहण

नये नाम-लोकचन्द्र मुनि एवं सुव्रतप्रभा

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार क्रांति के सूत्रधार, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा.की आज्ञा से सूर्यनगरी में वैशाख शुक्ला षष्ठी बुधवार ३ मई को आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से श्री महाराजा माध्यमिक विद्यालय परिसर में मुमुक्षु श्री ललित जी हुण्डीवाल एवं मुमुक्षु सुश्री सीमा जी हुण्डीवाल की भागवती दीक्षा हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई।

वैशाख शुक्ला एकादशी, मंगलवार ९ मई को चौपासनी हाऊसिंग बोर्ड स्थित सामुदायिक भवन में उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से अहिंसा-संयम-तप रूप धर्म की साधना के लिए नवदीक्षित संत-सती को छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ

करवाया गया। उपाध्यायप्रवर ने दशवैकालिक सूत्र के प्रथम चार अध्ययन मूल, अर्थ व भावार्थ रूप में समझाते हुए धर्म के स्वरूप और उसकी महिमा का परिचय दिया। "धर्म की दीप्तिमान आराधना कामनामुक्त साधक कर सकता है" भगवान की वाणी के माध्यम से उपाध्यायप्रवर ने उसका हार्द समझाया। बावन अनाचारों से बचने के साथ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि पाँच महाव्रतों का सम्यक् पालन कैसे करना इसका स्वरूप समझाया। षट्काय के जीवों के रक्षण हेतु पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय की हिंसा टालने की प्रतिज्ञा करवाते हुए जीवन में अब तक हुई विराधना का प्रतिक्रमण, आत्मसाक्षी से निन्दा, गुरु साक्षी से गर्हा करवाते हुए नवदीक्षित संत-सती को कष्ट आने पर नहीं घबराने की प्रेरणा दी गई।

नवदीक्षित संत-सती को महाव्रतों में आरोहण करवाने के अनन्तर उपाध्याय प्रवर ने नवदीक्षित संत का नाम **'लोकचन्द्रमुनि'** और नवदीक्षित साध्वी का नाम **'सुव्रतप्रभा'** घोषित किया। उपस्थित जनसमुदाय ने नवदीक्षित सन्त और साध्वी के नाम का उच्चारण कर जय-जयकार किया।

बड़ी दीक्षा पश्चात् श्री गौतममुनि जी म.सा. ने नवदीक्षित संत-सती के माता-पिता का साधुवाद ज्ञापित करते कहा कि हुण्डीवाल परिवार ने अपने कुलदीपक और कुल ज्योति को शासन सेवा में समर्पित किया है, इसके लिए परिवार धन्यवाद का पात्र है। संसार का मार्ग समस्याओं का, संघर्षों का, भव-भव भटकाने वाला और दुःखों का मार्ग है। नवदीक्षित संत-सती संयम के राजमार्ग पर आरूढ़ हुए हैं इसका प्रमोद है। मुनिश्री ने कहा कि आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानचन्द्र जी म.सा. जिन्होंने अपने ज्ञान, निर्मल चारित्र और कठोर अनुशासन से रत्नसंघ परम्परा को उज्ज्वल किया है, समाज दोनों महापुरुषों का आभारी है। मुनिश्री ने नवदीक्षित श्री लोकचन्द्रमुनि जी एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री सुव्रतप्रभाजी को अपनी शुभकामना प्रदान करते हुए अपेक्षा रखी कि आप निभने-निभाने, ज्ञान में वर्द्धापन करने, चारित्र में निरन्तर कदम बढ़ाने के साथ समाचारी पालन में सजगता रखने और रत्नसंघ व जिनशासन की सौरभ बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

शीलव्रत के नियम- बड़ी दीक्षा के प्रसंग पर सुश्रावक श्री पुखराज जी मोहनोत, श्री चंचलचन्द जी सेठिया, श्री राधेश्याम जी गोटेवाला और श्री बुधमल जी चौपड़ा ने उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से शीलव्रत अंगीकार किया। कार्यक्रम पश्चात् सेठिया

परिवार की ओर से आयोजित भोज में सम्मिलित हो श्रावक-श्राविकाओं ने सद्भाव का परिचय दिया।

-नवरतन डागा, महामंत्री

आचार्यप्रवर का वेल्लूर होते हुए बंगारपेट की ओर विहार

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, शीलव्रत के प्रेरक, समाज-सुधार की अभिनव क्रान्ति के पथ-दर्शक, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी सेवामूर्ति श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ ने दृढ़ इच्छाशक्ति और आत्मबल से साहूकारपेट, चेन्नई से ६ मई को विहार किया। साहूकार पेट से अयनावरम् ५ कि.मी. के विहार के पश्चात् विहार की क्रमबद्धता के लक्ष्य से दिनांक ७ मई को ११ कि.मी. विहार कर अम्बातूर पधारे। ८ मई को ९ किमी. का विहार कर आवड़ी पदार्पण हुआ। ९ मई को ५ किमी. विहार कर पट्टाभिराय पधारे। १० मई को ४ किमी. विहार कर तिरिनिंखुर, ११ मई को ७ किमी. विहार कर सेवापेट, १२ मई को ७ किमी. विहारकर तिरुवेल्लूर पधारे। तिरुवेल्लूर श्रीसंघ की भावनानुसार वहाँ दो दिन विराजकर १४ मई को ९ किमी. विहार कर कडम्बत्तुर, १५ मई को फिर ९ किमी. का विहार कर पेरुमबाक्कम पदार्पण हुआ। १६ मई को १० किमी. विहार कर तक्कोलम, १७ मई को ६ किमी. विहार कर तक्कोलम रेलवे स्टेशन और १८ मई को ११ किमी. विहार कर नेमली पधारे। भक्तों की भावना रखने के लिए नेमली में दो दिन विराजना रहा। २० मई को ९ किमी. का विहार कर पानपाक्कम पदार्पण हुआ। पानपाक्कम से कावेरीपाक्कम, बालाजापेट, आरकाट, रत्नागिरी, सत्वाचारी एक-एक दिन विराजकर २६ मई को वेल्लूर में आचार्यप्रवर का मंगलप्रवेश जय-जयकारों के साथ हुआ। वेल्लूर से विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. ने पुनः पुनः आचार्यप्रवर के दर्शन-वन्दन एवं सेवा-भक्ति की भावना निवेदन करवाई कि स्वास्थ्य में प्रतिकूलता के कारण वेल्लूर से विहार करने की मेरी स्थिति नहीं है। श्रीसंघ की विनति चल ही रही थी। अतः दयालु गुरुवर्य ने अपने विहार क्रम में वेल्लूर का लक्ष्य रखा। मध्यान्तर के कई क्षेत्रों की पुरजोर विनतियों पर आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आपकी भावना उत्तम है, किन्तु विहार क्रम में आसपास के क्षेत्रों को फरसने के बजाय आगे बढ़ने का लक्ष्य बना हुआ है। वेल्लूर में आचार्यप्रवर के मंगलप्रवेश के दिन आबाल-वृद्ध सभी में उल्लास छा गया।

सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ठाणा

३ का २७ मई को वेल्लूर पदार्पण हो गया। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ भी चेन्नई के उपनगर पट्टाभिराय से विहार कर ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए २६ मई को वेल्लूर पधारे।

आचार्यप्रवर के चेन्नई से विहार एवं विहार की निरन्तरता को देख-सुनकर चातुर्मास की विनति के प्रयोजन से आवड़ी श्रीसंघ ने १८ व १९ मई को आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में भावपूर्ण विनति रखी कि आपश्री वेल्लूर से आवड़ी पधारकर आवड़ी श्रीसंघ की चातुर्मास की विनति साकार करें। आवड़ी की भाँति चेन्नई के अन्य उपनगरों की भी विनतियाँ बराबर चलती रहीं। राजाजी नगर बैंगलोर ने १५ मई को, दौड्डबालापुर श्रीसंघ ने १७ मई को चातुर्मास की विनति रखी। बंगारपेट व वेल्लूर श्रीसंघ सेवा में अपने-अपने क्षेत्रों की पुनः पुनः विनति रख रहे हैं। कावेरीपाक्कम में २१ मई को राजाजीनगर, शिवाजीनगर, बंगारपेट श्रीसंघ उपस्थित हुए और आगामी चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। बंगारपेट श्रीसंघ तो विहार सेवा के लाभ के साथ चातुर्मास की विनति बराबर कर रहा है। आचार्यप्रवर ने १ जून को चातुर्मास खोलने की भावना का संकेत फरमा दिया, अतः १ जून को वेल्लूर में चेन्नई श्रीसंघ, चेन्नई के कतिपय उपनगरों के संघों, बैंगलोर के राजाजीनगर, शिवाजीनगर संघों के साथ दौड्डबालापुर श्रीसंघ, बंगारपेठ श्रीसंघ एवं वेल्लूर श्रीसंघ ने आचार्यप्रवर के पावन श्रीचरणों में चातुर्मास की भावपूर्ण विनति रखी। आचार्यप्रवर ने साधु मर्यादा के आगारों के साथ अपना चातुर्मास बंगारपेट घोषित किया तो बंगारपेट के श्रद्धालुओं ने जय-जयकार के जयनाद कर अपना हर्ष प्रकट किया। बैंगलोर के कुछ उपनगर चातुर्मास के लिए आचार्यप्रवर की विहार क्रमबद्धता को देखकर बैंगलोर चातुर्मास करने की पुनः पुनः प्रार्थना कर रहे थे। आचार्यप्रवर ने अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति करते फरमाया कि साधना के लिए शहर से गाँव अच्छा है। आचार्यप्रवर ने विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ७ का चातुर्मास वेल्लूर फरमाया, वहीं सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का चातुर्मास सहकार नगर, नाशिक (महा.) की घोषणा फरमाई। आचार्यप्रवर अभी वेल्लूर विराजमान हैं। वेल्लूर से अगले कुछ दिनों में गुड़ियातम-बी.कोटा आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए बंगारपेट की ओर विहार की संभावना है।

१. **Shri Gautamchand Ji Hundiwal, 4/29, Shandy Road, Pallavaram, Chennai-600043(T.N.) Ph. 044-22641554/22640914/ Mob.98401-12346/ 944388565, Fax : 044-22641569**

२. **Shri Mahendra Ji Kankaria, Mahendra Jewllers, 1000-1001, T.H. Road, Kaladipet, Chennai-19(T.N.) Ph. 044-25991313/25994466**

Mob.94440-51313

उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा की सन्निधि में सूर्यनगरी में धर्मोद्योत गतिमान

आत्मार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर, प्रबल पुरुषार्थी परमश्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा ५ एवं साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १० पावटा क्षेत्र में क्रमशः वर्द्धमान भवन और सिद्धान्तशाला में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं।

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के सूर्यनगरी पधारने के साथ मुमुक्षु श्री ललित जी एवं सुश्री सीमा जी के दीक्षा महोत्सव में उमंग-उल्लास से संघ-सदस्यों में नवस्फूर्ति का संचरण हुआ। ३० अप्रेल को तप और दान का विशिष्ट पर्व 'अक्षय तृतीया' कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। ३ मई को उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से मुमुक्षु भाई-बहिन की भागवती दीक्षा हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुई। उपाध्यायप्रवर के घोड़ों का चौक विराजते शहर क्षेत्र में १९ अप्रेल से २७ अप्रेल तक जिनवाणी-श्रवण के लाभ के साथ दया-संवर और उपवास-पौषध की साधना में श्रावक-श्राविकाओं ने अपूर्व उत्साह प्रदर्शित किया। २८ अप्रेल से ६ मई तक नेहरू पार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन सबके लिए आकर्षण का केन्द्र रहा। उपाध्यायप्रवर एवं साध्वीप्रमुखा के नेहरू पार्क क्षेत्र विराजने से अक्षय तृतीया और भागवती दीक्षा जैसे वृहत् कार्यक्रमों के साथ नित्यप्रति प्रवचन एवं व्रत-प्रत्याख्यानों की प्रभावना का सुन्दर रूप नेहरू पार्क क्षेत्र की विशेषता रही। दिनांक ७ मई को समता भवन में प्रवचन का लाभ उस क्षेत्र के वासियों ने उठाया। दिनांक ८ मई से १५ मई तक चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन में धर्म-ध्यान का ठाट रहा। दिनांक ९ मई को नवदीक्षित संत-सती की बड़ी दीक्षा सामुदायिक भवन में विशाल जनमेदिनी के बीच सम्पन्न हुई। दिनांक ११ मई को उपाध्यायप्रवर के ४४वें दीक्षा-दिवस के प्रसंग से हाउसिंग बोर्ड में दया-संवर का वृहद् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। १६ मई को उपाध्यायप्रवर का देवनगर स्थित महावीर वाटिका पदार्पण हुआ। परम्परा के मूलपुरुष पूज्य श्री कुशलचन्द जी म.सा. की २२३ वीं पुण्य तिथि एवं आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का आचार्यपद ग्रहण दिवस देवनगर में त्याग-तप के साथ मनाया गया।

देवनगर विराजते समय आसपास के क्षेत्रों की क्षेत्र फरसने की पुरजोर विनतियों के चलते उपाध्यायप्रवर ने देवनगर से विहार कर वर्द्धमान भवन, पावटा

पधारकर पावटा क्षेत्र की भावना साकार की। साध्वीप्रमुखा का भी नेहरूपार्क से पुष्प भवन, जैन भवन, अजीत कॉलोनी क्षेत्र फरसकर पावटा पदार्पण हुआ।

उपाध्यायप्रवर के श्रीचरणों में लक्ष्मीनगर, मूथा जी के मन्दिर सहित जोधपुर के कई उपनगरों की क्षेत्र फरसने की विनतियाँ चल रही हैं। भोपालगढ़-गोटन-पालासनी श्रीसंघ भी उपाध्यायप्रवर के पावन श्रीचरणों में अपने-अपने क्षेत्र की विनतियाँ रख चुके हैं। साध्वीप्रमुखा महासतीजी के आग्रह को ध्यान में रखकर उपाध्यायप्रवर अभी कुछ दिन जोधपुर विराजें ऐसी संभावना है। क्रियोद्धारक पूज्य आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की पुण्यतिथि जोधपुर में त्याग-तप के साथ मनाने हेतु संघ सदस्यों की सक्रियता अनुकरणीय है।

सम्पर्क सूत्र-(१) डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, अध्यक्ष, फोन नं. ०२९१-२५४४१०९/ २५४५१०५, (२) श्री अमरचन्द जी सदावत मेहता, मंत्री, फोन नं. ०२९१-२७२२१३६, २७४२१३८, २६३६७६३, (३) ३. श्री नवरतन जी डागा, महामंत्री, फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६५४६७२, २६५४४२७, ९८२८०-३२२१५

महासती मण्डलों का स्वीकृत चातुर्मास स्थलों की ओर सुख-शांति पूर्वक विहार

卐 साध्वीप्रमुखा, परमविदुषी, शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा., तत्त्वचिन्तिका व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा १० पावटा क्षेत्र स्थित सिद्धान्तशाला में सुखशांतिपूर्वक विराजमान हैं। साध्वीप्रमुखा का चातुर्मास घोड़ों का चौक स्वीकृत हुआ है तथा महासती श्री विनीतप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास भोपालगढ़ स्वीकृत हुआ है। अतः चातुर्मासार्थ यथासमय पधारने की संभावना है।

卐 सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ लाखन कोटड़ी, अजमेर क्षेत्र सिंचित कर २१ मई को महावीर नगर पधारे। अभी कुछ दिन यहीं विराजने की संभावना है। महासती मण्डल का चातुर्मास जावला स्वीकृत हुआ है। अतः पुष्कर-थांवला होते हुए जावला की ओर विहार की संभावना है।

卐 शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ सकारण पीपाड़ शहर में विराजमान हैं।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ७ का जबलपुर की ओर विहार चल रहा है। दिनांक २६ मई को नृसिंहपुर पधारे। नृसिंहपुर से जंबलपुर ९०

किमी. है। जबलपुर श्रीसंघ के सेवाभावी श्रावक समय-समय पर विहार-सेवा का लाभ ले रहे हैं। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के पाँवों के दर्द की वजह से थोड़ा-थोड़ा विहार हो रहा है, लेकिन विहार की क्रमबद्धता से अगले एक पखवाड़े में जबलपुर सीमा में प्रवेश की संभावना है।

卐 विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. स्लिप डिस्क के कारण वेल्लूर विराजकर स्वास्थ्य लाभ ले रहे हैं। विदुषी महासती जी ने संघनायक पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. से वेल्लूर पधारकर दर्शन-वन्दन के लाभ के साथ सेवा का अवसर प्रदान करने का पुनः पुनः निवेदन करवाया था। विदुषी महासतीजी की भावना और वेल्लूर श्रीसंघ की विनति को ध्यान में रखकर आचार्यप्रवर २६ मई को वेल्लूर पधारे। सेवाभावी श्री नन्दीषेण जी म.सा. आदि ठाणा ३ का २७ मई को वेल्लूर पदार्पण हुआ। व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ भी २६ मई को वेल्लूर पधारे। वेल्लूर श्रीसंघ की पुण्यवानी के कारण परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के वेल्लूर विराजने से एवं समीपवर्ती-सुदूरवर्ती संघों के आवागमन से वेल्लूर मानो तीर्थधाम बना हुआ है।

卐 विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ कानपुर के उपनगर आनन्दपुरी में विराजमान हैं। आचार्यप्रवर ने कानपुर श्रीसंघ की भावना का समादर करते हुए महासती मण्डल का चातुर्मास माता रुकमणी जैन भवन, खोया बाजार, कानपुर की स्वीकृति फरमा दी है। अतः अभी कुछ दिन उपनगरों में विचरण की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.आदि ठाणा ६ धनोप विराज रहे थे तब महासती श्री रुचिता जी म.सा. के स्वास्थ्य में कुछ प्रतिकूलता बन गई थी। श्रमणोचित औषधोपचार के अनन्तर कुछ स्वास्थ्य लाभ होने पर धनोप से विहार किया। फूलियाकलां-कादेड़ा क्षेत्र पावन कर महासती मण्डल सावर विराजमान हैं। सावर से नापाखेड़ा पधारने की संभावना है। आचार्यप्रवर ने महासती श्री रुचिता जी म.सा. के स्वास्थ्य संबंधी कारणों पर विचार-चिन्तन कर व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. का देई का चातुर्मास स्थगित करके आवासनमण्डल, सवाईमाधोपुर के लिए व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ६ के चातुर्मास की स्वीकृति प्रदान की है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ५ धनोप से

फुलियाकलां, कादेड़ा, सावर, मेहरकलां, देवली आदि मध्यान्तर के ग्रामों में ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते रविवार २८ मई को बून्दी पधारे हैं। बून्दी से कोटा चातुर्मासार्थ पधारने की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ रायचूर में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना कर स्वीकृत चातुर्मास स्थल हैदराबाद की ओर विहार कर रहे हैं। रायचूर की संक्षिप्त रिपोर्ट अलग से दी जा रही है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने नागौर में एक पखवाड़ा विराजकर जिनवाणी का पान तो करवाया ही, बालक-बालिकाओं में संस्कार सृजित करने के उद्देश्य से शिविर आयोजित कर बालक-बालिकाओं को प्रेरणा प्रदान की। नागौर से बासनी, सिमरानी, बलाया, मुन्दियाड़ा, शंखवास, कंकराय, आसावरी आदि मध्यान्तर के क्षेत्रों को पावन कर २९ मई को गोटन पधारे। वहाँ से पीपाड़सिटी होते हुए जोधपुर पधारकर उपाध्यायप्रवर आदि संत-मुनिराजों एवं साध्वीप्रमुखा आदि महासतीवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं सेवा-लाभ लेकर चातुर्मासार्थ पाली की ओर अग्र विहार की संभावना है।

卐 व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ ने हुबली में धर्म प्रभावना की, बाल संस्कार शिविर के माध्यम से बालक-बालिकाओं को धर्म से जोड़ने का प्रयास किया। हुबली से धारवाड़-सवदति-लक्षमेश्वर होते हुए चातुर्मास स्थल गदग की ओर विहार चल रहा है।

卐 सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.आदि ठाणा ३ नाशिक क्षेत्र में धर्मप्रभावना कर रहे हैं। आँखों के ऑपरेशन के पश्चात् समाधि बनी हुई है।

कानपुर में व्यसन निवारण की प्रेरणा एवं आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के पुण्य-दिवस पर त्याग-तप की प्रभावना

जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा ४ का चातुर्मास कानपुर घोषित हुआ है। विदुषी महासती मण्डल ने आगरा से ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए औद्योगिक नगरी कानपुर में मंगल प्रवेश किया। कानपुर शहर एवं उपनगरों में गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय एवं गुरु हीरा के व्यसन-त्याग संदेश की प्रेरणा करते महासती मण्डल का आनन्दपुरी क्षेत्र में पदार्पण हुआ। सत्संग सेवा और संत-समागम के सुयोग

का अधिक से अधिक लाभ प्राप्त हो इस लक्ष्य से २२ मई को प्रातः ९ बजे सरस्वती विद्या मन्दिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, आनन्दपुरी व केशवनगर के समस्त शिक्षकों के बीच प्रवचन में विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. ने भारतीय संस्कृति में माता-पिता एवं गुरु की महत्ता प्रदर्शित करते बताया कि **बचपन में पल्लवित संस्कारों की सौरभ जीवन पर्यन्त** रहती है। विदुषी महासती ने कलाचार्य, शिल्पाचार्य और धर्माचार्य का हार्द समझाते फरमाया कि कलाचार्य और शिल्पाचार्य का जीवन में इसलिए महत्त्व है कि वे अर्थोपार्जन के गुर सिखाते हैं। **धर्माचार्य समाज को सही मार्ग बताते हैं और धर्म का स्वरूप समझाते हैं।** विदुषी महासती ने गुटखा, बीड़ी, सिगरेट आदि व्यसनों के दुष्परिणाम बताते हुए फरमाया कि आप शब्दों के माध्यम से ही नहीं अपितु आचरण के माध्यम से स्वयं नजीर प्रस्तुत करें। आपके आचरण की छाप बच्चों पर पड़ेगी और वे निर्व्यसनी जीवन को सहज अंगीकार करेंगे। सरस्वती विद्या मन्दिर के प्राचार्य श्री विनोदकुमार जी दीक्षित ने बताया कि बालक का कोमल हृदय कच्ची मिट्टी की तरह होता है, जिसमें सुन्दर पुष्प लगाये जा सकते हैं और कंटीली झाड़ियाँ भी। जरूरत है बचपन में बच्चों को संस्कार दिये जायें। सुश्रावक श्री मनमोहनचन्द जी बाफना ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में आभार प्रदर्शित किया। सरस्वती विद्या मन्दिर के प्रबंधक श्री सूरजराज जी नाहटा, श्री लूणकरण जी लोढ़ा, श्री बंशीलाल जी बागमार, श्री उगमराज जी बेताला आदि विशिष्ट जन भी प्रवचन में उपस्थित थे।

विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ४ ने खोया बाजार स्थित माता रूकमणी जैन भवन स्थानक में अक्षय तृतीया एवं आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का पुण्य-दिवस त्याग-तप के साथ भावनापूर्वक मनाया। विदुषी महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा., महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. ने युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्य भगवन्त के यशस्वी जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि उस दिव्य दिवाकर ने जन्म से मरण तक एक से बढ़कर एक अनेक कीर्तिमान कायम किए। गुरु हस्ती की प्रेरणा सामायिक-स्वाध्याय को कर्म निर्जरा के लिए आवश्यक बताते हुए त्याग-तप में पुरुषार्थ प्रदर्शित करने का विदुषी महासती जी ने आह्वान किया। स्थानीय संघाध्यक्ष श्री दौलतराम जी जैन ने आगत श्रावक-श्राविकाओं का अभिनन्दन किया। महामंत्री श्री गौतमचन्द जी लोढ़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया। आचार्य भगवन्त के पुण्य-दिवस पर श्रावक-श्राविकाओं ने पाँच-पाँच सामायिकें तो की ही दया-संवर, उपवास-पौषध आदि कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लिया।

हुबली में महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया सहित अनेक कार्यक्रम

व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ३ का ५ अप्रेल को हुबली शहर में मंगल प्रवेश हुआ। हुबली श्रीसंघ ने महासती मण्डल की सन्निधि के सुयोग का लाभ उठाने की भावना से ९ अप्रेल से १६ अप्रेल तक बाल शिक्षण शिविर का आयोजन किया। बालक-बालिकाओं को धर्म के संस्कार देने की दृष्टि से शिविर सफल रहा। महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया एवं आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्य तिथि त्याग-तप के साथ श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह पूर्वक मनायी। महासती-मण्डल के विराजने से हुबली के श्रद्धालु सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहे। महासती-मण्डल का चातुर्मास गदग स्वीकृत हुआ है। धारवाड़, सवदति, लक्षमेश्वर फरसते गदग की ओर १० मई को सुखशांतिपूर्वक विहार हुआ है।

रायचूर में धर्मप्रभावना

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा ५ ने १५ अप्रेल को सिंधनूर से विहार किया और मानवी क्षेत्र पावन करते हुए २४ अप्रेल को प्रातः विशाल जनमेदिनी के साथ रायचूर के महावीर चौक स्थित स्थानक में प्रवेश अत्यन्त भव्यता से हुआ। प्रवचन सभा में विशाल जनमेदिनी ने महासती-मण्डल के सरल, सरस एवं सुमधुर प्रवचनों का लाभ लिया। रायचूर में अक्षयतृतीया और आचार्य श्री हस्ती की पुण्य तिथि पर त्याग-तप की प्रभावना हुई। महासती-मण्डल की प्रेरणा से १ से ५ मई तक बालक-बालिकाओं का शिक्षण शिविर लगाया गया, जिसमें ९० शिविरार्थियों ने लाभ लिया। दिनांक १२ मई को पाक्षिक पर्व सामायिक दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें सामायिक की अनेक पचरंगियाँ हुईं। ५० दयाव्रत एवं एकाशन के प्रत्याख्यान हुए। महासती मण्डल का चातुर्मास काचीगुड़ा-हैदराबाद स्वीकार हुआ है। अतः १५ मई को रायचूर से विहार हुआ है। जून के प्रथम सप्ताह में या उसके आसपास हैदराबाद पहुँचने की संभावना है। *-चमनलाल मुथा*

आचार्य भगवन्त के पुण्य-दिवस पर कोलकाता में संगोष्ठी

कोलकाता- प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि वैशाख शुक्ला अष्टमी का आयोजन निकटस्थ ७ मई के रविवारीय अवकाश के दिन त्याग-तप के साथ किया गया। संगोष्ठी में अन्तर्राष्ट्रीय विद्वान् डॉ. भागचन्द जैन ने ''आतंकवाद के निराकरण और विश्व शांति की प्रस्थापना में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. का अवदान'' विषय पर अपने मनोभाव व्यक्त करते कहा कि आतंक की समस्या का समाधान अहिंसा के साथ सामायिक-स्वाध्याय की

साधना से संभव है। मुख्यातिथि श्री हीरालाल जी बोहरा, महामंत्री वीरायतन ने अहिंसा-अपरिग्रह पर विचार व्यक्त किए। समारोह के अध्यक्ष वाणिज्य कर आयुक्त श्री सी.एल. बच्छावत आई.ए.एस. ने आचार्य श्री हस्ती के सिद्धान्तों का विवेचन करते हुए बताया कि उस महापुरुष ने जन-जन को आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के अध्यक्ष प्रो. कल्याणमल जी लोढ़ा ने प्रासंगिक प्रसंगों के परिप्रेक्ष्य में विचार रखते हुए बताया कि विज्ञान और अध्यात्म के पारस्परिक संबंध से मनुष्य हिंसात्मक प्रवृत्ति छोड़ सकता है। संघ महामंत्री श्री मदनरूपचन्द जी भंडारी ने दूरदर्शी महापुरुष के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रकाश डालते कहा कि वे सम्प्रदाय विशेष के आचार्य होते हुए भी असाम्प्रदायिक महापुरुष थे। श्रीमती मधु सिंघवी ने 'चन्दनबाला महिला मण्डल' की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा संचालित परीक्षा में उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को रजत पदक एवं कोलकाता संघ द्वारा प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किये गये। श्रीमती प्रतिभा मेहता, श्रीमती मंजू भण्डारी, श्रीमती कंचन बाफना, श्रीमती विद्या सिंघवी एवं श्रीमती अनु मेहता ने भक्ति-भावना के साथ गुणगान एवं भजनों की प्रस्तुति दी। श्री नौरतनमल जी भंडारी एवं मास्टर हर्ष बच्छावत ने भी सुमधुर स्वर में गीत प्रस्तुत कर अपनी भावना का इजहार किया। संघ उपाध्यक्ष श्री सुमेरचन्द जी मेहता ने आचार्य भगवन्त के प्रति श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए मंचासीन महानुभावों एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं का आभार प्रदर्शित किया। -*मदनरूपचन्द भंडारी*

इन्दौर में आचार्य श्री हस्ती का पुण्य-दिवस मनाया

अध्यात्मयोगी, युगद्रष्टा आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा., कविरत्न उपाध्याय पं. रत्न श्री केवलमुनि जी म.सा. के पुण्य-दिवस पर महावीर भवन, इमली बाजार में आयोजित धर्मसभा में डॉ. मधुबाला जी म.सा. ने फरमाया कि महापुरुषों के बताये मार्ग पर चलना ही सच्ची श्रद्धांजली है। महासती श्री प्रतिभा जी म.सा. के मंगलाचरण से प्रारम्भ कार्यक्रम में महासती श्री सौरभसुधा जी म.सा. ने कहा कि आचार्य श्री का जीवन सरलता की प्रतिमूर्ति था, जिन्होंने सामायिक-स्वाध्याय संदेश को घर-घर और जन-जन तक पहुँचाया। उपाध्याय श्री केवलमुनि जी म.सा. ने सरल-शिक्षाप्रद कथा साहित्य के माध्यम से नैतिक संस्कार सृजित किए। उनकी वह देन सदा स्मरणीय रहेगी। श्रीमती मंजुला बहन बोटादरा, श्री हस्तीमल जी झेलावत, श्री गजराजसिंह जी झामड़, श्री अशोक जी मण्डलिक ने एवं श्रीमती निर्मला जी भटेवरा ने गुरुभक्ति में गुणगान किए। श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा ने दोनों महापुरुषों

के व्यक्तित्व-कृतित्व पर प्रश्नोत्तर कार्यक्रम के माध्यम से विस्तृत जानकारी करवाई। बच्चों की दया का आयोजन श्री हरकचन्द जी जैन परिवार की ओर से किया गया। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के द्वारा उत्तीर्ण परिक्षार्थियों को चाँदी के सिक्के प्रदान किये गये। कार्यक्रम का संचालन श्री अभिषेक जी नाहर ने किया। - *विमल तातेड़, मंत्री*

जयपुर में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा परीक्षा संबंधी गतिविधियों की समीक्षा करने हेतु राजस्थान प्रान्त के केन्द्राधीक्षकों एवं कार्यकर्ताओं की द्विदिवसीय कार्यशाला दिनांक १७ व १८ जून २००६ को सुबोध कॉलेज, रामबाग सर्किल, जयपुर में आयोजित की जा रही है। इस कार्यशाला में पल्लीवाल, पोरवाल, मेवाड़, मारवाड़, जयपुर क्षेत्र के साथ ही पंजाब व हरियाणा क्षेत्र के केन्द्राधीक्षकों को आमंत्रित किया गया है। कार्यशाला के तुरन्त पश्चात् शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के कार्यकारिणी सदस्यों की मीटिंग भी कार्यशाला स्थल पर रखी गई है। संबंधित महानुभावों से अनुरोध है कि वे कार्यशाला में अवश्य पधारें। कार्यशाला में भाग लेने की स्वीकृति बोर्ड कार्यालय को अवश्य भिजवायें।

आगामी परीक्षा

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा १ से १४ तक की आगामी परीक्षा २३ जुलाई २००६, रविवार को दोपहर १२.३० से ३.३० बजे तक लगभग ४०० केन्द्रों पर आयोजित की जायेगी।

ध्यातव्य

१ किसी केन्द्र पर पुस्तकों आदि की आवश्यकता हो तो बोर्ड कार्यालय से सम्पर्क करावें।

२. यदि किसी क्षेत्र में धार्मिक शिक्षण कराने वाले योग्य शिक्षक हों तो उनके नाम, पता, फोन आदि की जानकारी बोर्ड कार्यालय को तुरन्त भिजवाएँ ताकि शिक्षण कार्य में उनकी सेवाएँ प्राप्त की जा सकें।

३. यदि किसी केन्द्र पर धार्मिक शिक्षण की आवश्यकता हो तो परीक्षार्थियों की संख्या, शिक्षण की कक्षा आदि की जानकारी लिखित में बोर्ड कार्यालय को भिजवा दिरावें, ताकि शिक्षण की व्यवस्था की जा सकें।

४. कम से कम १० परीक्षार्थी होने पर परीक्षा का नया केन्द्र प्रारम्भ किया जा सकता है।

५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये ५० प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है। सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को पुरस्कार तथा कक्षा में प्रथम स्थान पाने वालों को स्वर्णपदक एवं द्वितीय-तृतीय स्थान पाने वालों को विशिष्ट पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

परीक्षा संबंधी विशेष जानकारी के लिये सम्पर्क करें- *विमला मेहता, संयोजक, घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन नं ०२९१-२६३०४९०, फैक्स-२६३६७६३*

उच्च शिक्षा हेतु प्रवेश का स्वर्णिम अवसर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, बजाज नगर, जयपुर इस वर्ष राजस्थान एवं अन्य प्रदेशों की बोर्ड परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण छात्रों को संस्थान में प्रवेश हेतु पुनः एक स्वर्णिम अवसर प्रदान कर रहा है। इस संस्थान का उद्देश्य संस्कारशील उच्च स्तरीय जैन विद्वान् तैयार करना है। इसके लिए छात्रों को प्राकृत, संस्कृत, न्याय एवं दर्शन विषयों का अध्ययन कराया जाता है। इसके साथ-साथ विद्यार्थियों को अंग्रेजी एवं कम्प्यूटर का भी शिक्षण दिलाया जाता है। इसके लिए संस्थान में कम्प्यूटर उपलब्ध है। यहाँ अध्ययनरत छात्र व्यावहारिक शिक्षण में भी वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करते हैं। छात्रों को आत्मनिर्भर बनाने हेतु पूर्ण सहयोग दिया जाता है।

संस्थान में रहकर अध्ययन करने वाले छात्रों को भोजन-आवास-शिक्षण आदि की व्यवस्था निःशुल्क है। एम.ए. करने वाले विद्यार्थियों को ३००/- मासिक व पी-एच्.डी. करने वाले छात्रों को ५००/- मासिक छात्रवृत्ति देने का प्रावधान है। पी-एच्.डी. के पश्चात् संघ में सेवा देने वाले के लिए व्याख्याता ग्रेड दिए जाने का भी प्रावधान है।

यद्यपि पूर्व में संस्थान में प्रवेश हेतु ३० अप्रेल २००६ तक आवेदन मांगे गए थे, किन्तु अब परीक्षा परिणाम घोषित हो जाने के कारण प्रतिभावान विद्यार्थी जीवन-निर्माण के लिए संस्थान में प्रवेश हेतु २५ जून से ३० जून २००६ के बीच अपनी १०वीं बोर्ड परीक्षा की अंकतालिका के साथ स्वयं उपस्थित हो सकते हैं। ***सम्पर्क सूत्र- श्रीकान्त जैन, अधिष्ठाता-श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, ए-९, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर (राज.), दूरभाष-०१४१-२७१०९४६***

शिविर-समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश के सदुपयोग के लक्ष्य से बालक-बालिकाओं में धार्मिक ज्ञानावृद्धि हेतु शिक्षण शिविर जोधपुर के घोड़ों का चौक, पावटा, नेहरू पार्क, लक्ष्मीनगर, सिंहपोल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड व सरस्वती नगर में १७ मई से ४ जून तक लगाया गया, जिसमें लगभग १२०० शिविरार्थियों ने भाग लिया। २ जून को सीखे ज्ञान का मूल्यांकन करने के उद्देश्य से सभी केन्द्रों पर लिखित

परीक्षा आयोजित की गई। उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन कर शिक्षकों के सार्थक सद्प्रयासों से परीक्षा परिणाम तैयार किया गया। रविवार दिनांक ४ जून को प्रातः ७.१५ बजे शिविर का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह ओसवाल कम्यूनिटी हॉल, तारघर के पास श्रीमान् लूणकरण जी लोढ़ा, कानपुर के मुख्य अतिथ्य में रखा गया। शिविर में विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री अनराज जी बोथरा, उद्योगपति श्री शांतिमल जी मेहता एवं समाजसेवी श्री कुशलचन्द जी बाफना को विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। समापन समारोह में मंगलाचरण के अनन्तर स्वागत-गीत, स्वागत-भाषण एवं शिविर की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों पर जानकारी दी गई। शिविर संयोजक श्री नरपतराज जी चौपड़ा ने जोधपुर शहर के भिन्न-भिन्न केन्द्रों पर बालक-बालिकाओं को एकत्रित करना, सामायिक वेश में उन्हें ज्ञानाभ्यास करवाना, बालक-बालिकाओं में धर्म के संस्कार बढ़े एतदर्थ व्यवहार में धर्म कैसे अपनाया जाय समझाना, परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग की भावना जगाना, सामूहिक धर्म-साधना कर जैनत्व के गौरव को उजागर करना, शिविर समापन के साथ बड़ों का चरण-स्पर्श कर आशीर्वाद लेना, माला जपना, सामायिक करना, संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन के साथ प्रवचन-श्रवण का लाभ लेना जैसे संकल्प करवाये गये। समापन समारोह में अभिभावकों का आभार प्रदर्शित करते हुए संघाध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भांडावत ने अपेक्षा रखी कि आप अपने होनहार बालक-बालिकाओं को धार्मिक शिक्षण शिविर में तो भेजें ही, घर पर उन्हें देव-गुरु-धर्म तत्त्व की जानकारी निरन्तर प्रदान करें जिससे हमारी भावी पीढ़ी भौतिकता की चकाचौंध में भ्रमित होने से बच सके।

मुख्य अतिथि श्री लूणकरण जी लोढ़ा एवं विशिष्ट अतिथियों ने बालक-बालिकाओं द्वारा सीखे ज्ञान की सुन्दर प्रस्तुति पर प्रसन्नता व्यक्त की और ऐसे शिविर लगाने की आवश्यकता पर विचार रखे। परीक्षा में प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन स्वरूप पारितोषिक प्रदान किया गया एवं प्रत्येक शिविरार्थी को भी पुरस्कृत किया गया। समारोह का संचालन डॉ. मीता मुल्तानी ने किया।

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी बालक-बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर प्रातः ७ बजे से ९ बजे तक सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल, महावीर नगर स्थित साधना भवन, जवाहर नगर स्थित महावीर साधना केन्द्र एवं नित्यानंद नगर स्थित जैन रत्न स्वाध्याय भवन में २६ मई से १५ जून तक आयोजित किया जा रहा है। सुबोध स्कूल में १६ मई से शिविर का

शुभारंभ कर दिया गया। शिविर में सामायिक वेश में शिविरार्थी ज्ञानार्जन कर रहे हैं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार सुयोग्य शिक्षक अध्ययन कार्य संभाल रहे हैं। शिविर में दो वर्ष के बच्चों से लेकर महाविद्यालय स्तर तक के बालक-बालिकाएँ ज्ञानार्जन कर रहे हैं। १५ जून को लिखित परीक्षा होगी, जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा। ७५ प्रतिशत उपस्थिति वाले शिविरार्थियों को समापन समारोह में पुरस्कृत किया जायेगा।

-प्रमोद हीरावत, शाखा प्रमुख

भोपाल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी १ मई से ५ मई तक धार्मिक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ५७ शिविरार्थियों ने भाग लिया। शिविर में इन्दौर के स्वाध्यायियों ने सेवाएँ दीं। दिनांक ५ मई को आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. की पुण्यतिथि के प्रसंग से गुणानुवाद के साथ एक घंटे तक नमस्कार महामंत्र का जाप हुआ। संघ-सेवी सुश्रावक श्री घेवरचन्द जी की सेवाएँ अनुकरणीय रही। श्रावकरत्न श्री नाहर साहब ने ८७ वर्ष की आयु में प्रतिदिन १५ सामायिक के साथ स्वाध्याय तो किया ही, सामायिक-स्वाध्याय की प्रेरणा करने में भी वे अग्रणीय रहे। *-नरेन्द्र मेहता, अध्यक्ष*

अहमदाबाद- श्री राजस्थान स्थानकवासी संघ, अहमदाबाद द्वारा २० मई से ३ जून तक संस्कार जागरण शिविर आयोजित किया गया , जिसमें ३०० बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर में आधे शिविरार्थी अन्य-अन्य ग्राम-नगरों से आए। जोधपुर, ब्यावर, उदयपुर, सूरत, नन्दूरबार, पूना के अलावा शेष शिविरार्थी अहमदाबाद के थे। संस्कार निर्माण की दृष्टि से एवं धार्मिक ज्ञानाभ्यास के लक्ष्य से शिविर का आयोजन उपयोगी रहा। *-दौलतराज बांठिया*

सातारा के निहाल-निधि का अनुकरणीय आदर्श

अध्यात्मयोगी युगमनीषी परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा.के अनन्य भक्त संघनिष्ठ सुश्रावक श्री हिम्मतमल जी मूथा-सातारा का नाम रत्नवंश में बड़े आदर से लिया जाता है। आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा का विक्रम संवत् २०६० का चातुर्मास सातारा देकर सातारा श्रीसंघ को ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप और साधना-आराधना में आगे बढ़ने का सुन्दर अवसर प्रदान किया, परिणामस्वरूप सातारा श्रीसंघ में एवं जैन महिला मण्डल सातारा में सामायिक-स्वाध्याय, जप-तप, सेवा और शिक्षण के प्रति सकारात्मक सोच

बनी जो चातुर्मास की अनुपम उपलब्धि कही जा सकती है। धर्मस्थान में सामायिक के साथ धार्मिक शिक्षण शिविरों के आयोजन सातारा में आज भी उत्साह से चलते रहते हैं। अप्रेल २००६ में बालक-बालिकाओं का शिविर आयोजित किया गया, जिसमें ३० शिविरार्थियों ने शिक्षण प्राप्त किया। शिविर समापन के समय जैन महिला मण्डल, सातारा की अध्यक्षा सौ. हेमलता मुथा के पौत्र मास्टर निहाल एवं पौत्री कुमारी निधि ने अपनी मनीबैंक(गुल्लक) की राशि रुपये २,२००/- जीवदया को समर्पित की। नन्हें-मुन्ने बालक-बालिका की शुभभावना अनुकरणीय है। बच्चों की भावनानुसार जैन महिला मण्डल, सातारा की अध्यक्षा ने जीवदया को समर्पित राशि अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के माध्यम से भेजी है।

डॉ. दौलतसिंह कोठारी जन्मशताब्दी

६ जुलाई २००६ महान् मानवतावादी वैज्ञानिक डॉ. दौलतसिंह कोठारी की जन्मशताब्दी का शुभ प्रसंग है। डॉ. कोठारी जी वैज्ञानिक होने के साथ ही एक अच्छे शिक्षक थे, उच्च कोटि के श्रावक थे, महान गाँधीवादी थे, अपरिग्रही थे, मनसा-वाचा-कर्मणा अहिंसा के अथक साधक थे। अपने जीवनकाल में वे अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष एवं जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। अनेक राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक-सम्मेलनों में उन्होंने 'अध्यात्म और विज्ञान' के समन्वय के जो सूत्र दिए वे आज भी चिंतन के क्षेत्र में मील का पत्थर हैं। जैन महासभा-दिल्ली की विशेष रूप से जैन समाज से अपील है कि ६ जुलाई २००६ को 'अध्यात्म-विज्ञान समन्वय दिवस' के रूप में मनाया जाए और इस शुभ प्रसंग पर डॉ. दौलत सिंह जी कोठारी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विशेष भाषणों एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाए।

-रतन जैन, महासचिव

धुलिया में मुमुक्षु सुश्री भारती भूरट की भागवती दीक्षा सम्पन्न

खानदेश की धर्मधरा एवं महान् संत श्री अमोलकऋषि जी म.सा. की पावनभूमि धुलिया में दुधेड़िया हाई स्कूल के प्रांगण में आचार्यप्रवर पूज्य श्री रामलाल जी म.सा. के मुखारविन्द से मुमुक्षु सुश्री भारती भूरट की भागवती दीक्षा चतुर्विध संघ की साक्षी से विशाल जनमेदिनी के बीच सानन्द सम्पन्न हुई। धुलिया संघाध्यक्ष श्री कांतिलाल जी चोरडिया, महामंत्री श्री के.के. ताथेड़ एवं सहमंत्री श्री किशोर जी चोरडिया ने आचार्यप्रवर आदि संत-सतीवृन्द के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। नवदीक्षिता साध्वी का नाम भाग्यश्रीजी महाराज रखा गया।

मुनि मणिप्रभसागर स्कॉलरशिप

होनहार एवं जरूरतमन्द छात्रों के उच्च शिक्षण हेतु छात्रवृत्ति के लिए फूलचन्द केसरबीबी मोथा चेरिटेबल ट्रस्ट, ३०६, माउन्ट कैलाशटॉवर-प्रथम, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-११००६५ के पते से फार्म मंगवाकर योग्य आशार्थी आवेदन कर सकते हैं। *-जी.सी. मोथा, ट्रस्टी*

बधाई/चुनाव

आचार्य देवेन्द्र श्रुत सेवा सम्मान डॉ. सागरमल जैन को

उदयपुर- पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी के पूर्व निदेशक व प्राच्य

विद्यापीठ, शाजापुर के संस्थापक निदेशक प्रो. सागरमल जैन को वर्ष २००६ का 'आचार्य देवेन्द्र श्रुत सेवा सम्मान' प्रदान किया जायेगा। ७४ वर्षीय प्रो. जैन साहब अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विश्रुत जैन विद्वान् हैं। अनेक विद्यार्थियों ने डॉ. जैन के निर्देशन में शोध किया है। प्रो. जैन का जैन, बौद्ध व गीता के आचार दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन विषयक विस्तृत शोध-प्रबन्ध विद्वत जगत् में चर्चित रहा। उक्त सम्मान उदयपुर में आयोजित समारोह में प्रदान किया जायेगा। प्रशस्ति-पत्र के साथ ११०००/- की राशि प्रदान की जायेगी। *-गणेशमल गोखरू, मंत्री*

जोधपुर- सुश्री प्रिया डागा सुपुत्री श्रीमती सुमन एवं श्री नवरतन जी डागा (महामंत्री,

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) को भारत सरकार के मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन एण्ड यूथ सर्विसेज के माध्यम से नेशनल मेरिट स्कॉलरशिप स्कीम २००४-०५ के लिए चयन किया गया। सुश्री प्रिया ने जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं तदनन्तर सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा से एम.एस.सी. (होम मैनेजमेन्ट एण्ड इण्टीरियर डिजायनिंग) में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। नेशनल स्कॉलरशिप के चयन हेतु बधाई।

चेन्नई- श्री दुलीचन्द जैन, अध्यक्ष-करुणा अन्तर्राष्ट्रीय को सुविख्यात सेंटेनेरियन ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा दिनांक ८.१०.०५ को रानी सीतई हॉल में एक भव्य समारोह में 'सेवा रत्न' अवार्ड से सम्मानित किया गया। श्री जैन को यह अवार्ड उनकी सामाजिक सेवाओं के लिए मिजोरम के पूर्व राज्यपाल महामहिम डॉ. ए.पद्मनाभन द्वारा दिया गया। माननीय न्यायाधीश (सेवानिवृत्त) श्री एस. जगदीशन, चेयरमेन इंटेलेक्च्वल प्रोपर्टी

एपेलेट बोर्ड ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। चेन्नई नगर के ५०० से अधिक प्रबुद्ध व्यक्ति इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। *-सुरेश कांकरिया*

जोधपुर- युवारत्न श्री राहुल जैन सुपुत्र श्रीमती मंजू एवं श्री रतनराज जैन (पौत्र श्रीमती

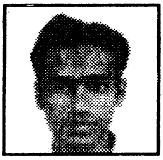

लीला एवं श्री रेखराज जी जैन), जोधपुर के आई.बी.एम., गुड़गाँव में कन्सलटेन्ट के रूप में पदोन्नत होने पर हार्दिक बधाई। ज्ञातव्य है कि श्री राहुल ने गतवर्ष ही इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी में सभी विषयों में विशिष्ट योग्यता के साथ इंजीनियरिंग की परीक्षा विश्वेश्वर टेक्नोलॉजी विश्वविद्यालय, कर्नाटक से उत्तीर्ण की है। *-राजेन्द्र जैन*

दापोली- डॉ. बाला साहब सांवत कोंकण कृषि विद्यापीठ ने अपने २६वें दीक्षान्त

समारोह में जलगाँव के श्री भंवरलाल जी जैन को डॉक्टर ऑफ साइन्स की मानद उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया है। विद्यापीठ के कुलपति डॉ. शंकरराव मगर ने कृषि, जलसिंचन, फलोद्यान और ड्रिप सिंचाई क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान हेतु जैन इरिगेशन के संस्थापक श्री भंवरलाल जी जैन को सम्मानित किया। श्री भंवरलाल जी जैन को राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। श्री जैन अमेरिकन इरिगेशन एसोसियेशन 'क्रॉफर्ड रिड मेमोरियल' अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले भारतीय हैं। जल संरक्षण में भी श्री भंवरलाल जैन का योगदान देश के लिए वरदान है।

मालपुरा- सुश्री हंसा गोखरू सुपुत्री श्रीमती सूरज एवं श्री सुशील कुमार जी गोखरू ने सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा में ८७.२३ प्रतिशत अंक प्राप्त कर मेरिट में नवम स्थान प्राप्त किया। धर्मनिष्ठ सुश्री हंसा आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ भी देती है।

मुम्बई- श्री अंकित जैन सुपुत्र श्रीमती मधु एवं श्री ऋषभचन्द जैन ने आई.सी.एस.ई. (Indian Certificate of Secondary Education) की सन् २००६ की परीक्षा में ९३.८३ प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। वह गोकुलधाम हाई स्कूल एण्ड जूनियर कॉलेज, गोरेगाँव का छात्र था। अब वह हायर सैकेण्डरी के साथ आई.आई.टी. की भी तैयारी कर रहा है। अंकित जैन ने जयपुर से आठवीं कक्षा में ९७ प्रतिशत अंक अर्जित किए थे।

जयपुर- रोटरी इन्टरनेशनल, जयपुर के अन्तर्गत पर्यावरण समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व डॉ. गुलाबसिंह जी दरड़ा को दिया गया है। डॉ. दरड़ा सेवानिवृत्त आई.ए.एस. हैं और उनकी सामाजिक क्षेत्र में काम करने की भावना है। व्यसनमुक्ति कार्यक्रम के

अन्तर्गत आप गुटखा-निषेध अभियान चलाते हैं। राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, जयपुर में १५७ बच्चों ने आपसे व्यसनमुक्ति का संकल्प किया।

सिकन्द्राबाद- हैदराबाद-बोलारम की चारों जैन सम्प्रदाय की संस्था श्री जैन सेवा संघ ने महावीर जयन्ती पर संघपति एवं वयोवृद्ध संघसेवी सुश्रावक श्री हस्तीमल जी मुणोत को 'जैन रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। संघ-सेवी, संत-सेवी सुज्ञ श्रावकरत्न विगत ३५ वर्षों से वर्षीतप कर रहे हैं। -*मिठालाल पोखरणा*

चेन्नई- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की आमसभा रविवार ७ मई को श्री लूणकरण जी सुराना की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। श्री सोहनलाल जी चोरडिया-अध्यक्ष, श्री नेमीचन्द जी खींवसरा व श्री प्रेमचन्द जी मेहता-उपाध्यक्ष, श्री शिखरचन्द जी बेताला-मंत्री, श्री हंसराज जी कोठारी-सहमंत्री, श्री अशोक कुमार जी कांकरिया-कोषाध्यक्ष, श्री गौतमचन्द जी श्रीश्रीमाल-सह कोषाध्यक्ष एवं श्री कानचन्द जी बेताला प्रवक्ता चुने गये। -*एस. राजेश बेताला*

अहमदाबाद- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, अहमदाबाद के चुनाव क्षेत्रीय प्रधान श्री पदमचन्द जी कोठारी के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुए, जिसमें श्री छोगालाल जी बाघमार-अध्यक्ष, श्री मांगीलाल जी चौपड़ा एवं श्री शैलेन्द्र विजयमल जी मेहता-उपाध्यक्ष, श्री दौलतराज जी बांठिया-मंत्री, श्री कन्हैयालाल जी हिरण-सहमंत्री एवं श्री राजेन्द्रकुमार जी बांठिया-कोषाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए। पाँच कार्यकारिणी सदस्य भी निर्विरोध निर्वाचित घोषित किए गये। -*दौलतराज बांठिया, मंत्री*

चेन्नई- श्री एस. एस. जैन युवक संघ चेरिटेबल ट्रस्ट की वार्षिक साधारण सभा १७ मई २००६ को श्री पी.एम.चोरडिया की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये- श्री पी.एम. चोरडिया-चेयरमेन, श्री सिद्धेचन्द जी लोढ़ा-मैनेजिंग ट्रस्टी एवं श्री बी.बाबूलाल जी बोकड़िया-कोषाध्यक्ष।

चेन्नई- श्री एस. एस. जैन संघ, ३४८ मिन्ट स्ट्रीट, चेन्नई के चुनावों में श्री महावीरचन्द जी दरड़ा-अध्यक्ष, श्री विजयराज जी खाबिया एवं श्री कन्हैयालाल जी मूथा-उपाध्यक्ष, श्री मनोहरमल जी कोठारी-मंत्री, श्री महावीरचन्द जी सिसोदिया-सहमंत्री और श्री सूरजमल जी कोठारी-कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

संक्षिप्त समाचार

जयपुर- महावीर नगर जैन स्थानक में प्रत्येक रविवार को धार्मिक पाठशाला चलती

है। १६ अप्रेल को भगवान् महावीर की जीवनी, सामायिक, २५ बोल एवं नैतिक संस्कार पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। सही उत्तर प्रदाताओं को वयोवृद्ध सुश्रावक श्री केवलमल जी लोढ़ा की ओर से पुरस्कृत किया गया। महावीर नगर श्री संघ ने बच्चों के नाश्ते व टैक्सी की व्यवस्था की। *-अशोक कुमार जैन*

भोपालगढ़- जनहित में निःशुल्क होम्योपैथी एवं एक्युप्रेशर शिविर डॉ. इन्द्रमल जी भंसाली, जोधपुर के मार्गदर्शन में ७ मई को श्री जैन रत्न विद्यालय में लगाया गया। शिविर में १० वरिष्ठ चिकित्सकों ने अपनी सेवाएँ दीं। शिविर व्यवस्था एवं प्रचार-प्रसार में युवक संघ का सराहनीय सहयोग रहा। शिविर में ३०० व्यक्तियों के उपचार के साथ व्यसन-त्याग की प्रेरणा की गई।

धुलिया- श्री चाँद-सुमन छात्रवृत्ति शिक्षण संस्था जरूरतमन्द और होनहार छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करती है। इच्छुक आशार्थी १०/- के पोस्टेज टिकट भेजकर ३० जून २००६ तक फार्म मंगवा सकते हैं। *-के.के. ताथेड़, मंत्री*

नांदगाँव (नाशिक)- तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया पर नांदगाँव में ३०० वर्षीतप साधकों ने तप पूर्णाहूति समारोह में भाग लिया। नांदगाँव श्री संघ के अध्यक्ष श्री प्रफुल्लभाई पारख, तप पूर्णाहुति समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी सुराना सहित संघसेवी श्रावकों ने कार्यक्रम की सफल क्रियान्विति में उत्साह प्रदर्शित किया। तप-साधकों ने तप और दान का माहात्म्य आचार्यप्रवर पूज्य श्री उमेशमुनि जी म.सा. 'अणु' के मुखारविन्द से श्रवण किया। *-विजय चौपड़ा, महामंत्री*

उदयपुर- श्री गणेश जैन छात्रावास में २००६-०७ के लिए प्रवेश-पत्र ३० जून २००६ तक जमा कराए जा सकते हैं। *-नानालाल पितलिया, गृहपति*

श्रद्धाञ्जलि

स्थविरा महासती श्री ज्येष्ठ कंवर जी म.सा. को हार्दिक भावाञ्जलि

(वेल्लूर में ३१ मई २०६ को प्रवचन सभा से संकलित)

दृढ़धर्मी सुश्रावक श्री अमरचन्द जी सांड के माध्यम से स्थविरा महासती श्री ज्येष्ठकंवर जी म.सा. के स्वर्गगमन के समाचार ज्ञात होने पर परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-मुनिराजों ने एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. प्रभृति महासती -मण्डल ने चार लोगस्स का निर्वाण कायोत्सर्ग किया। नानकवंश की शासन ज्योति वयोवृद्धा स्थविरा महासती श्री ज्येष्ठकंवर जी म.सा. के प्रति आचार्यप्रवर की भावाभिव्यक्ति को अभिव्यक्त करते हुए महान्

अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने फरमाया कि नानकवंश की दीप्ति को स्वयं की संयम दीप्ति से दीप्तिमान कर सरलमना वयोवृद्धा दीर्घानुभवी परम्पराओं का निर्वहन करने वाली दीर्घ दीक्षा पर्यायी महासती के स्वर्गगमन से नानकवंश में एक स्थविरा ज्येष्ठा-श्रेष्ठा साध्वीरत्ना का स्थान रिक्त हो गया है। प्रतिपल स्मरणीय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के श्रीचरणों में एवं उसके पश्चात् भी अनेक बार भद्रिक परिणामी महासती जी दर्शन-वन्दन की भावना से सेवा में उपस्थित होते रहते थे। विशेषकर विजयनगर चातुर्मास में चार माह दर्शन-वन्दन के साथ शिष्याओं को प्रवचन सभा में भेजकर प्राचीन परम्परा की मधुर स्मृतियों एवं प्रेम संबंध का आदर्श प्रस्तुत किया था जो प्रमोदजन्य है। सुदीर्घ संयम-पर्याय में औषधि का सेवन न करना उनके दृढ़ मनोबल का द्योतक एवं संयम-निष्ठा का परिचायक था। वेदना सहन कर कर्मों को क्षय करने की महासती जी की भावना साधकों के लिए अनुकरणीय आदर्श के रूप में शेष रह गई है। साध्वीप्रमुखा दृढ़ मनोबला वंश की ज्येष्ठ साध्वी रत्ना के स्वर्गगमन से आचार्यप्रवर, मुनिमण्डल सम्प्रदाय की वयोवृद्धा साध्वी श्री घेवरकंवर जी म.सा., प्रतिपल सेवा में सन्नद्ध रहने वाली साध्वी श्री कमलाकंवर जी म.सा. आदि साध्वीमण्डल को हार्दिक वेदना होना स्वाभाविक है उसमें हम भी संवेदना प्रकट करते हुए स्वर्गस्थ महासती जी के प्रति हार्दिक भावांजलि ज्ञापित करते हैं।

-संकलनकर्ता : जगदीश जैन

दुर्ग- अनन्य गुरुभक्त, श्रद्धानिष्ठ, सेवाभावी सुश्रावक श्री कन्हैयालाल जी कटारिया

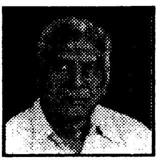

सुपुत्र स्व. श्री सुजानमल जी कटारिया (पीपाड़ वालों) का १७ मई २००६ को अकस्मात्-असामयिक स्वर्गगमन हो गया। वे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। संघ-सेवा, संत-सेवा, स्वधर्मी वात्सल्य-सेवा में उनकी रुचि प्रेरणादायी थी। गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति दृढ़ आस्थावान श्रावकरत्न ने छत्तीसगढ़ प्रान्त में संघ की प्रवृत्तियों के पोषण में समय का भोग देकर सामायिक-स्वाध्याय के साथ आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में क्षेत्रवासियों को प्रेरित करने में तन-मन-धन से सहयोग किया। आचार्य भगवन्त की जीवनी 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' घर-घर में और जन-जन तक पहुँचे, एतदर्थ छत्तीसगढ़ में प्रवास कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने वाले सुज्ञ श्रावकरत्न की अकस्मात् स्वर्गगमन से याद भुलाये नहीं भूलती। सामायिक-स्वाध्याय रसिक श्रावकरत्न ने रत्नसंघ नायक परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के पावन श्रीचरणों में किसी-न-किसी महासती मण्डल को छत्तीसगढ़ क्षेत्र सिंचित करने के लिए भेजने की विनति रखी और स्वयं ने सेवा में समर्पित रहने की भावना दर्शायी। दुर्ग

सहित छत्तीसगढ़ क्षेत्र में संघ व संघ की सहयोगी संस्थाओं की गौरव-गरिमा वृद्धि हेतु मनोयोगपूर्वक प्रयास करना उनका एक तरह से मिशन बन गया था। उनके सुपुत्र श्री राजेश जी कटारिया भी सेवा में तत्पर रहते हैं।

जोधपुर- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती माँगीबाई जी बोहरा धर्मपत्नी श्री माणकचन्द

जी बोहरा का २० मई २००६ को स्वर्गवास हो गया। सुश्राविका श्रीमती माँगीबाईजी श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ श्राविका थीं। धर्मस्थान की सार-संभाल और व्यवस्था में उनकी विशेष रुचि रहती थी। वे रत्नसंघ की सुज्ञ और समर्पित श्राविका थीं। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में अग्रणी श्राविका जोधपुर के प्रतापनगर की बहिनों को धर्म-ध्यान में जोड़ने की प्रेरणा करती रहती थीं।

जोधपुर- दृढ़धर्मी, श्रद्धानिष्ठ वयोवृद्धा श्राविकारत्न श्रीमती इन्द्रकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी स्व. सुश्रावक श्री होशियारचन्द जी भंडारी का ९६ वर्ष की आयु में ३ जून २००६ को स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के प्रति आस्थावान श्राविकारत्न सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध और व्रत-प्रत्याख्यानों में सजग थी। संघ-सेवा व संत-सेवा में उनकी सदा भावना रहती थी। उनके सुपुत्र श्री देवीचन्द जी, दिलरूपचन्द जी, लखपतचन्द जी, महावीरचन्द जी संघसेवी श्रावकरत्न हैं।

ब्यावर- तपस्वी श्राविका श्रीमती जतनकंवर जी पारख धर्मपत्नी स्व. सुश्रावक श्री

भूरालाल जी पारख का ९२ वर्ष की आयु में २१ मई को स्वर्गवास हो गया। श्राविकारत्न ने अपने जीवन में उपवास, बेले, तेले, पाँच, आठ की अनेक तपश्चर्याओं के साथ तीन बार वर्षीतप का आराधन किया। विगत ५ दशक से रात्रि भोजन के त्याग के साथ उनके रात्रि-चौविहार त्याग का नियम था। संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में उनकी सदा भावना रहती थी। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

जयपुर- संघ-सेवी, संत-सेवी सुश्राविका श्रीमती पदमकंवर जी मेहता धर्मपत्नी श्री

भभूतराज जी मेहता का ९४ वर्ष की अवस्था में ३ जून को स्वर्गवास हो गया। वे रत्नसंघ की समर्पित सुज्ञ श्राविका थी। प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य महामहिम आचार्य भगवन्त पूज्य श्री १००८ श्री हस्तीमल जी म.सा. के प्रति दृढ़ आस्थावान श्राविकारत्न ने आचार्यभगवन्त के प्रायः प्रत्येक चातुर्मास में सत्संग-सेवा और संत-

समागम का लाभ लिया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सक्रिय श्राविकारत्न का जीवन अनुकरणीय था। सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध व व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति रुचिवान श्राविका के जीवन में सरलता के साथ उदारता का संगम था। श्राविकारत्न के संस्कारों से पल्लवित-पुष्पित डॉ. एस.आर.मेहता साहब का श्रमणोचित औषधोपचार में योगदान भुलाया नहीं जा सकता। श्राविकारत्न अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

चेन्नई- अनन्य गुरुभक्त, दृढ़धर्मी उदारमना सेवाभावी सुश्रावक श्री सोहनलाल जी ओस्तवाल (सुपुत्र स्व. सुश्रावक श्री किशनलाल जी ओस्तवाल, भोपालगढ़ वाले) का २३ मई २००६ को आकस्मिक-असामयिक स्वर्गवास हो गया। वे श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ-कर्त्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। संघ-सेवा, संत-सेवा, श्रुतसेवा, स्वधर्मी वात्सल्य सेवा में अग्रणीय रहने वाले श्रावकरत्न की भक्ति-भावना प्रेरणादायी थी। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चेन्नई चातुर्मास में सुश्रावक ने सत्संग-सेवा व संत-समागम के सुयोग का अपूर्व लाभ लिया।

बिगोद (जिला-भीलवाड़ा)- दृढ़धर्मी, समाजसेवी वयोवृद्ध सुश्रावक श्री केसरसिंह जी संचेती का ८३ वर्ष की आयु में १६ मई को स्वर्गगमन हो गया। आचार-विचार-व्यवहार से संभ्रान्त सरल स्वभावी श्री संचेती साहब का जीवन प्रेरणादायी था। उनके अन्तिम संस्कार में राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षणिक सभी क्षेत्रों के संभ्रान्त लोगों के अलावा विशाल जनमेदिनी ने कर्मयोगी को श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

गोटन- दृढ़धर्मी सेवाभावी सुश्रावक श्री अमरचन्द जी लोढ़ा (निवासी-नागौर) का

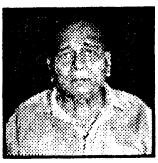

७४ वर्ष की आयु में १८ मई २००६ को स्वर्गवास हो गया। गुरु हस्ती-गुरु हीरा-गुरु मान के अनन्य श्रद्धालु भक्त को अन्त समय में करीब एक घंटे का संथारा आया। आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के नागौर चातुर्मास में सुश्रावक लोढ़ा साहब ने भक्ति-भावना से सेवा-लाभ लिया। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा के संसारपक्षीय बहनोई श्री अमरचन्द जी लोढ़ा ने १९६४ में दीक्षा के प्रसंग पर रात्रि-भोजन त्याग का नियम लिया वह अन्त समय तक बराबर बना रहा। तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. के वे सांसारिक मौसाजी थे। लोढ़ा साहब अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गये है। उनके सुपुत्र श्री अभयकुमार जी लोढ़ा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन के उपाध्यक्ष हैं और गोटन में सामायिक-स्वाध्याय भवन निर्माण में आपने सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया।

कोटा- ८ वर्षीय मास्टर सार्थक जैन सुपुत्र श्रीमती सुधीर जी सुभाष जी जैन का १० अप्रेल को रात्रि में मलबे में दब जाने से देहावसान हो गया। कोटा के वरिष्ठ समाजसेवी, विद्यानुरागी और लब्ध प्रतिष्ठित व्यवसायी स्व. हरबंशलाल जी जैन का यह प्रपौत्र सेन्ट पॉल्स स्कूल में दूसरी कक्षा में पढ़ता था तथा नमस्कार महामंत्र, लोगस्स और गुरु वन्दना भाव पूर्वक बोलता था।

चेन्नई- सुश्राविका श्रीमती भंवरीबाई रूणवाल (धर्मपत्नी स्व. श्री अमरचन्द जी रूणवाल-बर) का २४ अप्रेल को स्वर्गवास हो गया। श्राविकारत्न नित्यप्रति सामायिक करती थी एवं चौविहार, जमीकन्द के त्याग, लिलोती की मर्यादा के साथ उनके जीवन में धर्म के प्रति अनुराग था। उनकी तपस्वीराज पूज्य श्री चम्पालाल जी म.सा. के प्रति अनन्य भक्ति थी। -धर्मचन्द खारीवाल

सेलम- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती प्रेंमकंवर जी धर्मपत्नी श्री गजराज जी बोकड़िया (मूल निवासी खाँगटा) का ६३ वर्ष की आयु में १३ मई को स्वर्गवास हो गया। पीपाड़ सिटी निवासी सुश्रावक श्री मगराज जी लुणावत की सुपुत्री ने ससुराल में सेवा के आदर्श के साथ त्याग-तप में अच्छा उत्साह प्रदर्शित किया। सामायिक, प्रतिक्रमण के अलावा वर्षो से चौविहार करने वाली श्राविका ने शीलव्रत का खंद कर रखा था। जयगच्छीय श्राविका संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में भावनापूर्वक सक्रिय रहती थीं। सुश्रावक श्री गजराज जी बोकड़िया ने विभिन्न संस्थाओं को श्रद्धांजलि सभा के दिन दान राशि की घोषणा की।

खाँचरोद- धर्मपरायणा सुश्राविका श्रीमती वजीबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री हस्तीमल जी छाजेड़ का ९७ वर्ष की आयु में १३ मई को ९ घंटे के संथारे के साथ स्वर्गगमन हो गया। श्राविका विगत ४० वर्ष से रात्रि-चौविहार एवं सचित्त का त्याग रखती आ रही थी। वे अपने पीछे भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई है। *-विजय छैगांव वाला*

जयपुर- सुश्रावक श्री मुंशीलाल जी जैन (हरसाना वाले) का २ मई २००६ को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। श्रावकरत्न श्री मुंशीलाल जी ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदा तत्पर रहने वाले श्रावक थे। उनके सुपुत्र श्री अशोक जी जैन श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के जयपुर शाखा के सह संयोजक हैं तथा धर्मचन्द जी जैन और मदनलाल जी जैन भी संघ-सेवामें सक्रिय रहते हैं।

दिल्ली- वयोवृद्ध सुश्रावक श्री रूपचन्द जी घोड़ावत सुपुत्र स्व. श्री पन्नालाल जी

घोड़ावत का ८२ वर्ष की आयु में १८ मई २००६ को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। नश्वर देह त्याग पूर्व उन्हें नमस्कार महामंत्र, लोगस्स का पाठ सुनाकर मांगलिक प्रदान की गई। वे काफी समय से अस्वस्थ थे। दो माह पूर्व श्रावकरत्न की धर्मपत्नी का स्वर्गगमन हुआ था। वे प्रतिदिन पाँच-छः सामायिक करते और स्वाध्याय के साथ नवकार मंत्र का जाप करते थे। ज्ञान-क्रिया सम्पन्न संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति में सदैव समर्पित रहने वाले श्रावकरत्न का जीवन प्रेरणादायी था। *-कमलचन्द घोड़ावत*

जोधपुर- सुश्रावक श्री जगरूपमल जी लोढ़ा का २५ मई २००६ को स्वर्गवास हो गया। उनका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से परिपूर्ण था। वे श्रद्धानिष्ठ, धर्मनिष्ठ, कर्त्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी श्रावक थे। उनके अग्रज सुश्रावक श्री प्रसन्नमल जी लोढ़ा ने सेवानिवृत्ति पश्चात् सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की महनीय सेवा की। समूचा रत्नसंघ तभी से लोढ़ा परिवार से निकटता से परिचित है।

बलरामपुर (उ.प्र.)- सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती चम्पाबाई जी धर्मपत्नी स्व. श्री प्रतापमल जी पोकरना का ४ मई को आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे धर्मनिष्ठ श्राविका थी। आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. का उनके जीवन पर विशेष प्रभाव पड़ा। वे प्रतिदिन पाँच-छः सामायिक करती और ४५ वर्षों से रात्रि-भोजन व जमीकन्द का त्याग था।

रिंया सेठों की- दृढ़धर्मी, श्रद्धानिष्ठ सेवाभावी सुश्राविका श्रींमती पानीबाई जी धर्मपत्नी स्व. सुश्रावक श्री सुगनचन्द जी मूथा का ८ मई २००६ को स्वर्गवास हो गया। रत्नसंघ की सुज्ञ श्राविका गाँव में पधारने वाले संत-सतीवृन्द की सेवा-भक्ति के लाभ के साथ स्वधर्मी बन्धुओं की सेवा में समर्पित रहती थी। श्राविकारत्न के सुपुत्र सुश्रावक श्री झूमरलाल जी, धर्मचन्द्रजी मूथा भी संघ-सेवा, संत-सेवा में सक्रिय है।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

महापाप-नरक गति का कारण

जीवों की हिंसा, माँसाहार, मदिरापान, रात्रि-भोजन, कंदमूल भक्षण, अति काम-क्रोध, तीव्र राग-द्वेष, धन की गाढ़ मूर्च्छा, महाआरम्भ, पाप जनित व्यापार, रौद्रध्यान, कठोर हिंसा के परिणाम, देवगुरु व धर्म की निन्दा-आशातना आदि महापाप नरक में जाने के मुख्य कारण हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

५००/- रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

१०३७३ श्री ज्ञानचन्द जी विपीन कुमार जी बम्ब, पनवेल, रायगढ़ (महा.)
१०३७४ श्री हरीश जी चपलावत, जयपुर (राज.)
१०३७५ श्रीमती ममता अनिल जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
१०३७६ श्री किशनचन्द जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
१०३७७ श्री अमरचन्द जी डोसी, हिसार (हरियाणा)
१०३७८ श्री वर्द्ध.स्था. जैन श्रावक संघ, भीलवाड़ा (राज.)
१०३७९ श्री हुकमचन्द जी शांतिलाल जी रांका, उज्जैन (म.प्र.)
१०३८० श्रीमती शिरोमणीदेवी जी आरती जी जैन, शाजापुर (राज.)
१०३८१ श्री सुरेश जी देशलहरा, इन्दौर (म.प्र.)
१०३८२ श्री सुमतिलाल जी छजलाणी, इन्दौर (म.प्र.)
१०३८३ श्री टी.सी. जैन, इन्दौर (म.प्र.)
१०३८४ श्री तरुण कुमार जी नरेन्द्र जी विनायिका, बड़वानी (म.प्र.)
१०३८५ श्री अशोक कुमार जी भण्डारी, झाबुआ (म.प्र.)
१०३८६ श्री जगरूपमल जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
१०३८७ श्री संजय कुमार जी छजलाणी, जयपुर (राज.)
१०३८८ Shri Z. Ajit Kumar Ji Sanklecha, Chennai (T.N.)
१०३८९ Smt. D. Ichrajbai Ji Banthiya, Sirkali (T.N.)
१०३९० श्री पारसमल जी एन. बोहरा, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
१०३९१ Deepti Ji Nahata, Nainpur, Mandla (M.P..)
१०३९२ Preeti Ji Sanklecha, Bareli, Raisen (M.P.)
१०३९३ Shri Kishoreji Nahar, Kareli, Narsingpur (M.P.)
१०३९४ श्री राजेश जी गोलछा, करेली, नरसिंहपुर (म.प्र.)
१०३९५ श्री मदनलाल जी डागा, गरणिया, पाली (राज.)
१०३९६ श्री पंकज कुमार जी धर्मचन्द जी जैन, कुश्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
१०३९७ श्री ज्ञानचन्द जी बालिया, जयपुर (राज.)
१०३९८ श्री प्रकाशचन्द जी बालिया, जयपुर (राज.)
१०४०६ Shri Anand Raj Ji Shah, Ahmedabad (Gujrat.)

अर्द्धमूल्य योजना के अन्तर्गत आजीवन सदस्यता

(सुश्राविका श्रीमती कपूरीदेवी, अलीगढ़-टोंक की स्मृति में)

१०३९९ श्री सूरजमल जी जैन, कुस्तला, सवाईमाधोपुर (राज.)
१०४०० श्री हरकचन्द जी जैन, चोरू (राज.)

१०४०१ श्री आशीषकुमार जी जैन, सुमेरगंजमण्डी (राज.)

१०४०२ श्री महावीरप्रसाद जी जैन, जरखोदा (राज.)

१०४०३ श्री पदमकुमार जी जैन, जरखोदा (राज.)

१०४०४ श्री प्रदीप कुमार जी चण्डालिया, दूनी (राज.)

१०४०५ श्री बलवन्तसिंह जी कोठारी, पारसोली (राज.)

जिनवाणी हेतु साभार

११०१/- डॉ. धर्मचन्द जी जैन, ऋषभचन्द जी, टीकमचन्द जी, विनोद कुमार जी जैन, अलीगढ़ (टोंक) पूज्या माताश्री श्रीमती कपूरीदेवी धर्मपत्नी स्वाध्यायी स्व. श्री सौभाग्यमलजी जैन का २६ अप्रेल २००६ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

११०१/- श्री माणकचन्द जी बोहरा, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती मांगीबाई जी बोहरा के २० मई को स्वर्गगमन होने पर उनकी स्मृति में।

११००/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोकचन्द जी, श्रेणिककुमार जी, सुनील कुमार जी धोका, मैसूर, सौ. कां. ललिता जी धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी का तीसरा वर्षीतप पारणा सानन्द सम्पन्न होने पर सप्रेम भेंट।

११००/- बैंगलोर।

११००/- श्रीमती सुरजदेवी जी, श्री मनमोहनराज जी, दिलखुशराज जी मेहता, मुम्बई (पीपाड़ निवासी), चि. चन्दन के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

११००/- श्रीमती सुरजदेवी जी, श्री मनमोहनराज जी, श्री दिलखुशराज जी मेहता, मुम्बई (पीपाड़ निवासी), सौ. कां. वन्दना के शुभविवाह के उपलक्ष्य में।

११००/- श्रीमती सुरजदेवी जी, श्री मनमोहनराज जी, श्री दिलखुशराज जी मेहता, मुम्बई (पीपाड़ निवासी), शांतस्वभावी तपसाधिका महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. के पीपाड़ मे सानन्द विराजने व महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री मुदितप्रभा जी म.सा. के एकान्तर साधना की खुशी में।

१०००/- श्री अमरचन्द जी, बसन्तकुमार जी, विनोदकुमार जी पींछा, चेन्नई।

१०००/- श्री प्रसन्नराज जी गौतमचन्द जी बोथरा मेहता, चेन्नई, माताश्री उमराबबाईजी धर्मपत्नी स्व. श्री रूपचन्दजी बोथरा का स्वर्गवास २१.४.०६ को चेन्नई में होने पर पावन स्मृति में।

५०१/- श्रीमती चन्द्रकान्ता जी जैन (चपलोद-चारुवा वाले), हरदा, अपने पति श्री उत्तमचन्द जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

५०१/- श्रीमती पारस जी, जयपुर, दिनांक १९.५.०६ को विवाह के ५० वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोकचन्द जी, श्रेणिककुमार जी, सुनीलकुमार जी, उदय जी धोका, मैसूर, बहन सौ. कां. चन्द्राकँवर धर्मपत्नी श्री पुखराज जी चौपड़ा (चेन्नई) का वर्षीतप पारणा सानन्द सम्पन्न होने पर सप्रेम भेंट।

५०१/- श्री सुनीलजी अनिलजी संजयजी कटारिया, पीपाड़शहर, पूज्य माताजी श्रीमती

पुष्पादेवी जी धर्मपत्नी श्री नन्दलालजी कटारिया के वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में भेंट।

५००/- श्री चंचलमल जी गांग, जोधपुर, विवाह की ४०वीं वर्षगांठ एवं सुपौत्र राहुल (सुपुत्र श्रीमती योगिता एवं श्री राजेश जी गांग) के ११वें जन्मदिन दिनांक ११ जून २००६ के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोकचन्द जी, श्रेणिककुमार जी, सुनीलकुमार जी, उदय जी धोका, मैसूर, चि. उदयराज जी के विवाह में मायरा श्री महावीरचन्द जी आशीष कुमार जी बोहरा (केजीएफ) से आने की खुशी में।

५००/- श्री विमलचन्द जी, रिखबचन्द जी, सुभाषचन्द जी, अशोकचन्द जी, श्रेणिककुमार जी, सुनीलकुमार जी, उदय जी धोका, मैसूर, चि. उदयराज का विवाह सौ. कां सुमन सुपुत्री श्री महावीरचन्द जी नाहटा, के.जी.एफ. के साथ सम्पन्न होने की खुशी में।

५००/- श्री अभयकुमार जी, कुलदीप जी, मदनकुँवर जी, विजया जी लोढ़ा, गोटन-नागौर, गुरुभक्त शिरोमणि श्री अमरचन्द जी लोढ़ा का दिनांक १८.५.०६ को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

५००/- श्री नरेन्द्र जी मेहता, चेन्नई, स्व. श्री पारसमल जी लुणावत (मेहता) की पुत्रवधू सौ. कां. सुशीला धर्मपत्नी श्री नवरतन जी मेहता (जोधपुर), चेन्नई वालों के द्वितीय वर्षीतप की तपस्या के उपलक्ष्य में।

३००/- श्री पुखराज जी, श्री उत्तमचन्दजी, सुरेशचन्द जी, नितीन कुमार जी चौपड़ा, चेन्नई, चन्द्राबाई धर्मपत्नी श्री पुखराज जी चौपड़ा के प्रथम वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

२५१/- श्री उम्मेदचन्द जी, दानमल जी, राजेन्द्रप्रसाद जी, ऋषभ कुमार जी जैन, जरखोदा, पूज्य पिताजी श्री हरकचन्द जी जैन (बोहरा) की दिनांक १६.५.०६ को नवीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

२५१/- श्री सुमतिचन्द जी मेहता-पीपाड़ शहर, पूज्य बहनोई सा श्री शांतिलाल जी डाकलिया की प्रथम पुण्यस्मृति में भेंट।

२५१/- श्री झुमरलाल जी अमृतलाल जी मुथा-रीयां सेठा री, श्रीमती पानीबाई जी धर्मपत्नी श्री सुगनचन्द जी मुथा की पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री सुभाष जी, श्रीमती उषा जी, प्रवीण जी, रविन्द्र जी, संदीप जी हुण्डीवाल, जोधपुर, पूज्या स्व. माताश्री श्रीमती उमरावकंवर जी धर्मपत्नी वीरपिता एवं वीरदादा श्री भंवरलाल जी हुण्डीवाल की छठी पुण्यतिथि दिनांक १२ जून २००६ पर पुण्यस्मृति में।

२५१/- श्री प्रहलाद नारायण लखेरा, दौसा, अपने सुपुत्र अंकित कुमार के १०वीं कक्षा में ८१ प्रतिशत एवं अर्पित के ९वीं कक्षा में ८९ प्रतिशत अंक प्राप्त करने की खुशी में।

२५०/- श्री शांतिलाल जी, धनराज जी, गजराज जी, माणकचन्द जी रूणवाल, चेन्नई, श्रीमती भंवरीबाई जी रूणवाल (बर) चेन्नई का स्वर्गवास होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री चंचलमल जी गांग-जोधपुर, श्री हीरालाल जी हेमचन्दजी-सवाईमाधोपुर

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार

२०००/- श्री शांतिलाल जी खाब्या, भोपाल।

५०१/- श्रीमती पारस जी, जयपुर, दिनांक १९.५.०६ को विवाह के ५० वर्ष पूर्ण होने की खुशी में।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार

४००/- श्री नरेन्द्र जी लुंकड़, जोधपुर।

३००/- श्री अभयकुमार जी, कुलदीप जी, मदनकुँवर जी, विजया जी लोढ़ा, गोटन-नागौर, गुरुभक्त शिरोमणि श्री अमरचन्द जी लोढ़ा का दिनांक १८.५.०६ को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

जीवदया हेतु साभार

१५०१/- श्रीमती पारस जी, जयपुर, दिनांक १९.५.०६ को विवाह के ५० वर्ष पूर्ण होने की खुशी में।

५०१/- श्री राजेन्द्र जी मेहता, मुम्बई।

५०१/- श्री गौतमचन्द जी गाँधी, जोधपुर, स्व. श्रीमती विमला जी गाँधी धर्मपत्नी श्री पदमचन्द जी गाँधी की चतुर्थ पुण्यतिथि पर स्मृति में।

५००/- श्रीमती पद्मा जी मुणोत एवं श्री पुखराज जी मुणोत, जोधपुर, उपाध्यायप्रवर के मुखारविन्द से आजीवन शीलव्रत ग्रहण करने के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु भेंट।

३००/- श्री अभयकुमार जी, कुलदीप जी, मदनकुँवर जी, विजया जी लोढ़ा, गोटन-नागौर, गुरुभक्त शिरोमणि श्री अमरचन्द जी लोढ़ा का दिनांक १८.५.०६ को स्वर्गगमन होने पर उनकी पुण्यस्मृति में भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

१००१/- डॉ. धर्मचन्द जी जैन, ऋषभचन्द जी, टीकमचन्द जी, विनोद कुमार जी जैन, अलीगढ़ (टोंक) पूज्य माताश्री श्रीमती कपूरीदेवी धर्मपत्नी स्वाध्यायी स्व. श्री सौभाग्यमलजी जैन का २६ अप्रेल २००६ को स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृति में।

१०००/- श्री नवरतनमल जी लुणावत मेहता, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला जी मेहता पुत्रवधू स्व. श्री पारसमल जी लुणावत मेहता के तृतीय वर्षीतप के पारणे के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

५००/- श्री महावीरराज जी चाम्बड़, जोधपुर, परमपूज्य उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से शीलव्रत लेने की खुशी में सप्रेम भेंट।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, शाखा बजरिया हेतु साभार

११०१/- श्री विनयचन्द जी महेशचन्द जी जैन, आलनपुर, चि. गौतम के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री बाबूलाल जी नवकार जी जैन, चि. अनिल के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री रमेशचन्द जी जैन, विलोपा वाले, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री कपूरचन्द जी राजेन्द्रकुमार जी जैन, डॉ. निशान्त के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री धर्मचन्द जी जैन, कुस्तला, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री दुलीचन्द जी जैन, खातोली वाले, सुपोत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- डॉ. धर्मचन्द जी जैन, ऋषभकुमार जी जैन, अलीगढ़ माताजी की पुण्यस्मृति में।

५०१/- श्री पुरुषोत्तम कुमार जी हुकमचन्द जी जैन, सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

५०१/- श्री बजरंगलाल जी सर्राफ, सवाईमाधोपुर, सुपोत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

२५१/- श्री मोहनलाल जी अनुपमकुमार जी, आ.म., सवाईमाधोपुर सुपुत्र के विवाहोपलक्ष्य में।

२५१/- श्री जम्बूकुमार जी रमेशचन्द जी जैन, नवसारी, चि. महावीर के विवाहोपलक्ष्य में।

निम्नलिखित महानुभावों से भी साभार प्राप्त हुआ

श्री लड्डूलाल जी जैन-देवली वाले, श्री रामदयाल जी जैन-आलनपुर, श्री रामविलास जी जैन-कुंडेरा वाले,

आगामी पर्व

आषाढ़ कृष्णा ८	सोमवार, १९.०६.२००६	अष्टमी
आषाढ़ कृष्णा १४	शनिवार, २४.०६.२००६	चतुर्दशी
आषाढ़ कृष्णा ३०	रविवार, २५.०६.२००६	पक्खी
आषाढ़ शुक्ला ८	मंगलवार, ०४.०७.२००६	अष्टमी
आषाढ़ शुक्ला १४	सोमवार, १०.०७.२००६	चतुर्दशी, पक्खी, चातुर्मास प्रारम्भ

कपिलमुनि रत्नसंघ से निष्कासित

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने कपिलमुनि द्वारा संयमी मर्यादाओं एवं प्रदत्त प्रायश्चित्त का यथावत् अनुपालन नहीं करने, आज्ञा-अनुशासन पालन में पूर्ण सतर्कता नहीं रखने, संयम में पुनः पुनः स्खलना करने, संघनिष्ठा में अविश्वास उत्पन्न करने एवं समाचारी पालन में लापरवाही के कारण रत्नसंघ से बाहर कर संघ से निष्कासित करने के आदेश को तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. ने श्रावकों के समक्ष सहवर्ती कपिलमुनि को सुनाकर १३ मई २००६ को सायं करीब ५.४५ बजे आज्ञा बाहर कर रत्नसंघ से निष्कासित कर दिया है।

-जगदीश जैन

जिनवाणी का प्रतिक्रमण विशेषाङ्क शीघ्र प्रकाश्य

जिनवाणी मासिक पत्रिका समय-समय पर विशेषाङ्क प्रकाशित कर संघ-समाज की पठनीय सामग्री सुलभ करा रही है। जिनवाणी के विशेषाङ्कों में सामायिक, स्वाध्याय, तप, श्रावक धर्म, साधना, ध्यान, जैन संस्कृति और राजस्थान, कर्म-सिद्धान्त, अपरिग्रह विचार एवं व्यवहार, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. श्रद्धांजलि विशेषाङ्क, आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. व्यक्तित्व एवं कृतित्व विशेषाङ्क, अहिंसा, सम्यग्दर्शन : शास्त्र एवं व्यवहार एवं जैनागम जैसे विशेषाङ्कों से संघ-समाज में स्वाध्याय की रुचि व भावना बलवती हुई है।

जिनवाणी के विशेषाङ्कों की लोकप्रियता से आप भली-भाँति परिचित हैं। जिनवाणी के अंक एवं विशेषाङ्क आबाल-वृद्ध सबके लिए पठनीय है। प्रतिमाह सहस्रों पाठक स्वाध्याय के रूप में 'जिनवाणी' का पठन करते हैं।

इस वर्ष जिनवाणी का प्रतिक्रमण विशेषाङ्क निकालने का निर्णय लिया गया है। प्रतिक्रमण विशेषाङ्क में छः आवश्यक भेद, स्वरूप, सामाजिक-व्यवहारिक और दार्शनिक पक्ष की दृष्टि से विचार-मंथन के नये आयाम प्रस्तुत होंगे। उक्त विशेषाङ्क हेतु प्रबुद्ध चिन्तकों एवं विद्वानों से लेख आमंत्रित किए गए हैं। लेख हमें प्राप्त हो रहे हैं तथा जिन लेखकों ने अपने लेख अभी तक नहीं भेजे हैं, कृपया अतिशीघ्र लेख हमें प्रेषित करें ताकि विशेषाङ्क शीघ्र ही प्रकाशित किया जा सके। प्रतिक्रमण के पाठों एवं विधि के संबंध में यदि किसी की जिज्ञासा हो तो वह भी आमन्त्रित है।

समाज के लब्ध प्रतिष्ठित धर्मप्रेमी, ज्ञानरसिक, उदारमना श्रावक जिनवाणी के 'प्रतिक्रमण' विशेषाङ्क में अपने प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों एवं अपने इष्ट मित्रों के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठानों के विज्ञापन भेजकर विशेषाङ्क की सफलता में सहभागी बन सकते हैं। विशेषाङ्क के विज्ञापन की दरें निम्नानुसार है-

आर्ट पेपर रंगीन विज्ञापन	५०००/-
साधारण पृष्ठ रंगीन विज्ञापन	४०००/-
साधारण पृष्ठ श्वेत श्याम विज्ञापन	३०००/-
साधारण आधा पृष्ठ श्वेत श्याम विज्ञापन	१५००/-

कृपया विज्ञापन की राशि नकद/मनीऑर्डर/बैंक ड्राफ्ट से "जिनवाणी" के नाम से दुकान नं. १८२ के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-३०२००३ (राज.) के पते पर भेजने की कृपा करें। *-प्रेमचन्द जैन, मंत्री, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर*

आचार्य हस्ती जीवन-दर्शन स्वाध्याय प्रतियोगिता

युगद्रष्टा-युगमनीषी अध्यात्मयोगी महापुरुष आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८
श्री हस्तीमल जी म.सा. के जीवन-चरित्र

'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं'

पर आधारित खुली पुस्तक प्रतियोगिता में भाग लीजिए

प्रथम पुरस्कार- १ लाख रुपये

अन्य विविध पुरस्कार- द्वितीय-३१,०००/-, तृतीय-२१,०००/-,चतुर्थ-१५,०००/-, पंचम-११,०००/-, षष्ठ-७,०००/-, सप्तम-५,०००/-अष्टम-३,०००/, नवम-२,०००/-, दशम-१०० प्रतियोगियों में प्रत्येक को १,०००/-

शीघ्र प्रतियोगी प्रोत्साहन पुरस्कार रुपये ५०/-प्रत्येक

सौजन्य :

श्रीमती शरद चन्द्रिका मुणोत की स्मृति में श्री मोफतराज मुणोत परिवार,मुम्बई

प्रतियोगिता की उपयोगिता-

अपने जीवन का निर्माण, आत्मशक्ति एवं आत्मविश्वास में अभिवृद्धि, आदर्श साधु-जीवन का बोध, जीवन की वैयक्तिक-पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याओं का आध्यात्मिक समाधान, शान्ति एवं आनन्द का अनुभव।

प्रश्न-पुस्तिका वितरण की अन्तिम तिथि	**- ६ सितम्बर २००६**
शीघ्र प्रतियोगियों हेतु अन्तिम तिथि	**- ५ नवम्बर २००६**
उत्तरपुस्तिका जमा कराने की अन्तिम तिथि	**- २ जनवरी २००७**
परिणाम घोषणा	**- २९ अप्रेल २००७**

प्रतियोगिता हेतु ९५० पृष्ठ का विशाल ग्रन्थ 'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं २५०/- के स्थान पर मात्र १००/- में तथा प्रश्न पुस्तिका एवं उत्तरपुस्तिका-३०/- में उपलब्ध।

प्रश्नपुस्तिका में लगभग ६०० प्रश्न हैं। प्रश्नपुस्तिका दो भागों में विभक्त है। प्रथम खण्ड, पंचम खण्ड एवं आवरण पृष्ठ आदि के प्रश्न प्रथम भाग में तथा द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड के प्रश्न द्वितीय भाग में हैं।

डाक अथवा कोरियर से मंगवाने पर-

ग्रन्थ-१००/-+ डाक व्यय ६०/-= कुल १६०/-

प्रश्न पुस्तिका ३०/- + डाक व्यय १०/- = कुल ४०/-

ग्रन्थ एवं प्रश्न-पुस्तिका मंगवाने का पता- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-३४२००१(राज.), फोन नं. ०२९१-२६३६७६३, २६२४८९१, २६४१४४५, फैक्स-२६३६७६३

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत ६२ से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष **पर्युषण पर्व 21 अगस्त से 28 अगस्त 2006 तक रहेंगे।** अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2006 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त..............................
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता...
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता..
4. संघ मंत्री का नाम व पता..
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन..
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?...................................
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.........................
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव..
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-**संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 2624891, फैक्स-2636763, मोबाइल-94141-26279**

***विशेष*-** **दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई २४/२५,Basin Water Works Street,Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- दुलीचन्द बी. बोहरा, फोन नं. २५२९५१४३ (स्वाध्याय संघ), २६४२३०३६, २६४११०१५**

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गाँव पधारने से आपकी धर्म-साधना तो सुचारु रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे। आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय, जोधपुर- के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

'समता' मोक्ष का साधन है तो उसका उलटा 'तामस' नरक का द्वार है। - आचार्य श्री हस्ती

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

27, CHANDRAPPAN STREET
CHENNAI-600079(T.N.)
PH.# 25258436, 25298130

Branches:

Bhagawan Motors, Chennai-53, Ph.# 26251960
Bhagawan Cars, Chennai-53, Ph.# 26243455/66
Balaji Motors, Chennai-50, Ph.# 26247077
Padmavati Motors, Jafar Kan Peth, Chennai, Ph.# 24854526

JAI GURU HASTI

JAI GURU HEERAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Live & Let Live

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SOFTECH LIMITED

REGD. OFFICE : 33, Montieth Road, Egmore, Channai-600008

CHENNAI	:	044-28553185, 52145478
BANGALORE	:	080-22103267, 22103268
HYDERABAD	:	040-23414333, 23414777
GOA	:	0832-2420675, 2231190

www.prithvifx.com

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD
NAVARATHAN KAVAD
RAVINDRA KAVAD
ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056
Phone No.: 044-2627 3165, 2627 4165

Jai Guru Hasti ! Jai Mahaveer ! Jai Guru Heera Maan !

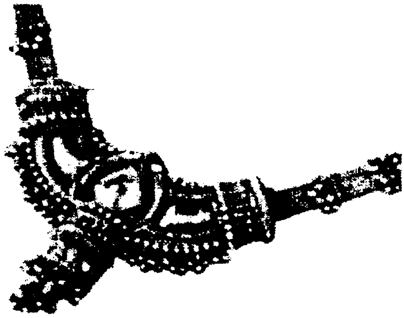

Best Compliments from

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916.KDM)

22 Ct. Gold! 24 Ct. Trust!

No.4, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272609, 55666555.

गुरु हस्ती के दो फरमान।
सामायिक स्वाध्याय महान।।

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

No.5, Car Street,
Poonamallee, Chennai - 600 056.
Phone : 26272906, 55689588.

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
—आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

BRIGHT STAR DIAMOND CO., LTD.

Diamond & Precious Stones

Ghisalal Gyanchand Prakashchand Bamb

410 The Executive House,
12th Floor, Suite 160-161,
Suriwongse Road,
BANGKOK 10500, Thailand
G.P.O. Box No. 2088

Tel : 237-8051, 237-8052
234-7648
Fax : (662) 237-6110
Res : 437-0910
Mobile : 01-6285733

Gurudev

SURANA

INDUSTRIES LIMITED

Manufacturers & Exporters of

Symbolises the Aspiration of Discerning Steel Buyers !

Premium Quality Steels, viz., HSD / CTD Bars, MS Rounds Structurals Like Flats, Channels Angles and Squares

Always Use SURANA STEELS to Highlight your House/Industry

Regd. Cum Corporate Head Office

29, Whites Road, II Floor Royapettah, Chennai 600 014.
Grams : **GURUHASTI**
Phone : 28525127 (3 Lines) Fax : 044 28521143
E-mail : suranast@vsnl.com
Website : www.suranaind.com

Works

F-67, 68 & 69 SIPCOT Industrial Complex
Gummidipoondi 601 201, Tiruvallur Dist. Tamilnadu
Phone : 954119 222881 Telefax : 954119 222880

Sales Yard

30, G.N.T. Road, Madhavaram,
Chennai 600 110
Phone : 25375531/32/33 Fax : 044 25375400

Jai Guru Hasti **Jai Guru Heera** **Jai Guru Man**

विश्व को आज शस्त्रधारी सैनिकों की नहीं अपितु शास्त्रधारी सैनिकों की आवश्यकता है।

आचार्य श्री हस्ती

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

With Best Compliment From :

NARENDRA HIRAWAT

Flat No. 1, Building No. 2
Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg,
Matunga (West), Mumbai-400016

Trin-Trin

Matunga Office	**: 022-56669707, 24370713**
Opera House Office	**: 022-23884282**
Mobile	**: 98210-40899**

जय गुरु हस्ती जय गुरु हीरा जय गुरु मान

जो संघ में भक्ति रखता है और शासन की उन्नति करता है, वह प्रभावक श्रावक है।

आचार्य श्री हस्तीमलजी.म.सा.

With Best Compliments From :

MJ

MAHENDRA JEWELLERS

No. 1000-1001.
Thiruvottiyur High Road
Kaladipet, Chennai-600 019

Phone : (O) 044-25991313, 25992300, 25992400
Fax : 044-25994466
Phone : (R) 044-25993671, 25993101, 25995588

आर.एन.आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-018/2006-08

Presenting
Premium properties by Kalpataru

KALPATARU ROYALE

Near Cine Planet, Off Sion Circle,
Sion

KALPATARU ESTATE

Opp. Fantasyland,
Andheri (E)

SIDDHACHAL

Pokhran Road No.2,
Thane (W)

Other Projects :

Kalpataru Habitat, **Parel** • Kalpataru Gardens, **Kandivli (E)**
Tarangan, **Thane (W)** • Kamdhenu, **Mulund (E)**
Kalpataru Regency II, **Pune**

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai - 400 021. India
Tel.: 022-2282 2888, 2281 7171 • Fax: 022-2204 1548, 2288 4778
Email : sales@kalpataru.com • Website : www.kalpataru.com

स्वामी-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिये मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस,
एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक प्रेमचन्द जैन,
बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।